बागेश्वर धाम एवं मेहंदीपुर बालाजी के चरणों में समर्पित

दैनिक हिन्दी समाचार पत्र

संस्कार उजाला

संस्कार उजाला
www.sanskarujala.com
SANSKAR UJALA
सच की हुंकार

sanskarujala@gmail.com

संस्थापक स्व० सुखराम शर्मा एवम शिवकुमार शर्मा, श्री प्रकाशवीर

सच की हुंकार

संस्थापक
स्व. श्री आर. के. शर्मा

गाजियाबाद से प्रकाशित, दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, हरियाणा, सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, बरेली, हापुड, बुलंदशहर, मथुरा आगरा, इटावा, कानपुर एंव लखनऊ से प्रसारित

वर्ष : 12 अंक : 141 | गुरुवार 12 सितम्बर 2024, गाजियाबाद | RNI No-UPHIN / 2013 / 50466 | पेज: 8 मूल्य : 2 रुपया

भारी बारिश से फिर पानी-पानी हो गए एमपी और राजस्थान

एमपी के 21 जिलों में बिगड़े हालात, राजस्थान में डैम ओवरफ्लो

नोएडा स्टेडियम में पानी भरा, न्यूजीलैंड-अफगानिस्तान टेस्ट नहीं हुआ

नई दिल्ली (एजेंसी)। मध्य प्रदेश में 2 दिनों से लगातार बारिश हो रही है। बुधवार को 21 जिलों में भारी बारिश का अनुमान जताया गया है। विदिशा,

रायसेन, सीहोर, नर्मदापुरम, हरदा, गुना और अशोकनगर में रेड अलर्ट जारी किया है। सितंबर के सबसे स्ट्रॉन्ग सिस्टम से पूरा मध्यप्रदेश तरबतर हो रहा है। भोपाल, नर्मदापुरम समेत प्रदेश के कई जिलों में मंगलवार से बारिश का दौर जारी है। मौसम विभाग ने बुधवार को विदिशा, रायसेन, सीहोर, नर्मदापुरम, हरदा, गुना और अशोकनगर में अति भारी बारिश का रेड अलर्ट जारी किया है।

राजस्थान के जयपुर में आज तेज हवा के साथ बारिश हो रही है। ब्यावर जिले का नंदा बांध 25 साल बाद ओवरफ्लो हुआ तो लोग बैंड बाजे के साथ नाचने-गाने लगे।

राज्य में 15 सितंबर तक बारिश का अनुमान है। दिल्ली-एनसीआर में बारिश की वजह से नोएडा क्रिकेट स्टेडियम में पानी भर गया है। इसकी वजह से न्यूजीलैंड और अफगानिस्तान के बीच पहला टेस्ट मैच तीसरे दिन भी नहीं खेला जा सका। छत्तीसगढ़ में पिछले दो दिनों से बारिश हो रही है। इंद्रावती व चिंतावागु नदी उफान पर है।

राहुल ने आरक्षण पर कांग्रेस का असली चेहरा दिखा दिया

कांग्रेस नेता के यूएस से आए बयान पर खूब बरसे अमित शाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका में आरक्षण को लेकर दिए राहुल गांधी के एक बयान ने भारत की राजनीति में हलचल पैदा कर दी है। राहुल गांधी ने कोटा पर एक सवाल के जवाब में कहा था कि अभी आरक्षण को खत्म करने का सही समय नहीं आया है। उनके इस जवाब को लेकर विवाद पैदा हो गया है और अब होम मिनिस्टर अमित शाह ने उन पर तीखा हमला बोला है। अमित शाह ने कहा, आरक्षण समाप्त करने की बात करके राहुल गांधी एक बार फिर कांग्रेस का आरक्षण विरोधी चेहरा सामने लाए हैं। राहुल का बयान क्षेत्रवाद, धर्म और भाषा के आधार पर दरार पैदा करने की कांग्रेस की राजनीति को उजागर करता है। गृह मंत्री ने विस्तार से अपनी राय एक्स पर लिखी है। उन्होंने लिखा, देशविरोधी बातें करना और देश को तोड़ने वाली ताकतों के साथ खड़े होना राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी की आदत सी बन गई है। चाहे

जम्मू-कश्मीर में जेकेएनसी के देशविरोधी और आरक्षण विरोधी एजेंडे का समर्थन करना हो, या फिर विदेशी मंचों पर भारत विरोधी बातें करनी हो, राहुल गांधी ने देश की सुरक्षा और भावना को हमेशा आहत किया है। भाषा से भाषा, क्षेत्र से क्षेत्र और धर्म से धर्म में भेदभाव लाने की बात करना राहुल गांधी की विभाजनकारी सोच को दर्शाता है। इसके आगे वह लिखते हैं, राहुल गांधी ने कांग्रेस का आरक्षण विरोधी चेहरा एक बार फिर से देश के सामने ला दिया है।

दैनिक संस्कार उजाला
न्यूज एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें

संस्कार उजाला समाचार पत्र में रिपोर्टर, ब्यूरोचीफ, मार्केटिंग करने वालों लोगों की जरुरत है। तुरंत संपर्क करे।

महेश शर्मा
प्रबंध संपादक
मो.नं:-9911733939

एक दिन शादी नहीं चली और देने पड़े 50 लाख

- दहेज उत्पीड़न कानून पर सुप्रीम कोर्ट ने भी जताई चिंता

नई दिल्ली (एजेंसी)। दहेज उत्पीड़न और घरेलू हिंसा के मामलों से निपटने वाला सेक्शन 498ए देश में सबसे ज्यादा दुरुपयोग किए जाने वाला कानून है। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को यह बात कही। जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्र और जस्टिस केवी विश्वनाथन की बेंच ने एक वैवाहिक मामले में विवाद की सुनवाई करते हुए यह बात कही। जस्टिस गवई ने गुजारा भत्ते पर सुनवाई करते हुए कहा कि ऐसे मामलों में आजादी पाना ही सबसे अच्छी चीज है। अपनी इस टिप्पणी को विस्तार देते हुए

जस्टिस गवई ने एक केस को भी याद किया। उन्होंने कहा कि एक मामला ऐसा भी आया था, जब पति एक दिन भी पत्नी के साथ नहीं रहा। लेकिन जब वे अलग हुए तो 50 लाख रुपये की रकम उसे पत्नी को देनी पड़ी। जस्टिस गवई ने कहा, मैंने नागपुर में एक केस देखा था। उस मामले में युवक अमेरिका जाकर बस गया। उसकी शादी एक दिन भी नहीं चल पाई, लेकिन पत्नी को केस चलने पर 50 लाख रुपये की रकम देनी पड़ गई। मैं तो खुलकर कहता रहा हूं कि घरेलू हिंसा और दहेज उत्पीड़न के कानून का सबसे ज्यादा गलत इस्तेमाल होता है। मेरी बात से शायद आप लोग सहमत होंगे। सेक्शन 498ए को लेकर लंबे समय से चर्चा रही है। इस कानून के आलोचकों का कहना रहा है कि अकसर महिला के परिवार वाले इस कानून का बेजा इस्तेमाल करते हैं। रिश्ते खराब होने पर पति और उसके परिवार वालों को फंसाने की धमकी दी जाती है।

शिमला में मस्जिद का अवैध निर्माण हटाने को लेकर बवाल

हिंदू संगठनों का जबरदस्त प्रदर्शन, पुलिस के बैरिकेड तोड़े, पथराव

पुलिस का लाठीचार्ज, वाटर कैनन चलाई, पथराव में सिपाही घायल

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में बुधवार को मस्जिद का अवैध निर्माण गिराने की मांग को लेकर हिंदू संगठन देवभूमि ने प्रदर्शन शुरू कर दिया है। शिमला के संजौली स्थित इस मस्जिद का रास्ता ढली टनल से होकर गुजरता है। प्रदर्शनकारियों ने यहां सड़क पर हनुमान चालीसा पढ़ा और जय श्रीराम के नारे लगाए। उन्होंने पुलिस के बैरिकेड तोड़ दिए। पुलिस ने 2 बार लाठीचार्ज किया और वाटर कैनन चलाई गई। पत्थरबाजी और झड़प में एक प्रदर्शनकारी और सिपाही घायल हुआ है।

संजौली मस्जिद 1947 से पहले बनी थी। 2010 में इसकी पक्की इमारत बननी शुरू हुई तो नगर निगम में शिकायत की गई थी। अब मस्जिद 5 मंजिला है। नगर निगम 35 बार अवैध निर्माण तोड़ने का आदेश दे चुका है। ताजा विवाद 31 अगस्त से शुरू हुआ, जब 2 गुटों के बीच मारपीट हुई। इसके बाद हिंदू संगठनों ने मस्जिद का अवैध निर्माण गिराने की मांग की। डीसी अनुपम कश्यप ने संजौली में धारा 163 लागू की है। इसके तहत सुबह 7 बजे से रात 11.59 बजे तक 5 या इससे ज्यादा लोगों को इकट्ठे होने या हथियार लेकर चलने की इजाजत नहीं होगी। पुलिस ने मंगलवार रात को संजौली में शांति बनाए रखने के लिए फ्लैग मार्च भी निकाला था। सरकारी और प्राइवेट ऑफिस, स्कूल, बाजार पूरी तरह से खुले रहेंगे। किसी भी व्यक्ति को धरना-प्रदर्शन करने की इजाजत नहीं है। लाउडस्पीकर के इस्तेमाल पर भी प्रतिबंध लगाया गया है। संजौली में मस्जिद का निर्माण 1947 से पहले हुआ था। तब मस्जिद की बिल्डिंग कच्ची थी।

कर्फ्यू, इंटरनेट बैन और 2000 जवान फिर पहुंचे

मणिपुर में नहीं संभल रहे हालात, तनावपूर्ण माहौल

नई दिल्ली (एजेंसी)। मणिपुर में एक बार फिर से माहौल तनावपूर्ण हो गया है। बीते कुछ दिनों में हुई झड़पों के चलते हालात ऐसे हैं कि तीन जिलों में कर्फ्यू लगाना पड़ा है और इंटरनेट भी सस्पेंड किया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है ताकि लोगों के बीच अफवाह फैलने से रोका जा सके। अभी 5 दिनों के लिए इंटरनेट पर रोक रहेगी। वहीं कांग्रेस का कहना है कि इस मामले में होम मिनिस्टर अमित शाह को दखल देना चाहिए। बीते साल से ही राज्य में कुकी और मैतेई समुदाय के लोगों के बीच झड़पों का दौर जारी है। ऐसी हिंसा फैली है कि कई जिलों में एक-दूसरे के समुदाय के लोगों पर लगातार हमले हो रहे हैं। इनर मणिपुर से कांग्रेस के सांसद ए. बिमोल अकोइजाम ने अमित शाह को पत्र भी लिखा है और मांग की है कि हिंसा की हालिया घटनाओं की जांच की जाए। उन्होंने कहा कि इस उपद्रव में ड्रग्स माफिया और बाहरी तत्वों का भी योगदान है। इसके अलावा उन्होंने इसके पीछे विदेशी साजिश को भी वजह बताया है। फिलहाल नए सिरे से फैली हिंसा ने मणिपुर में एक बार फिर से उबाल पैदा कर दिया है।

भारत विरोधी सांसद से मिलकर बुरे फंसे राहुल गांधी

भाजपा हमलावर, पीओके को पाकिस्तान का हिस्सा कहा था

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता विरोधी दल राहुल गांधी की अमेरिका यात्रा विवादों में घिरती नजर आ रही है। उन्होंने भारत विरोधी अमेरिकी सांसद इल्हान उमर से भी मुलाकात की है। इल्हान उमर ने कुछ समय पले पीओके की यात्रा की थी। साथ ही उन्होंने कश्मीर पर भारत के नियंत्रण की भी आलोचना की थी। ऐसा माना जाता है कि इल्हान की पीओके यात्रा पाकिस्तान के द्वारा प्रायोजित थी। इतना ही नहीं, इल्हान पर आरोप है कि उन्होंने झूठी खबर फैलाई कि 20 करोड़ मुसलमान नरसंहार के कगार पर हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अमेरिका की अपनी यात्रा के दौरान विश्वविद्यालयों में छात्रों और शिक्षकों के अलावा भारतीय प्रवासियों से भी बातचीत की थी। इस दौरान उन्होंने अमेरिकी सांसदों से भी मुलाकात की थी। रेबर्न हाउस ऑफिस बिल्डिंग में हुई बैठक की मेजबानी सांसद ब्रैडली जेम्स शेरमेन ने की और इसमें अमेरिकी कांग्रेस के सदस्य जोनाथन जैक्सन, रो खन्ना, राजा कृष्णमूर्ति, बारबरा ली, श्री थानेदार, जीसस जी. चुय गार्सिया, इल्हान उमर, हैंक जॉनसन और जान शाकोवस्की शामिल थे। राहुल गांधी ने अमेरिकी राजनयिक डोनाल्ड लू और सांसद प्रमिला जयपाल से भी

मुलाकात की। राहुल गांधी के साथ इल्हान उमर की एक तस्वीर सोशल मीडिया में वायरल हो रही है। इसके बाद सत्तारूढ़ भाजपा कांग्रेस और राहुल गांधी पर हमलावर है। पार्टी के प्रवक्ता और आईटी सेल के अध्यक्ष अमित मालवीय ने भी हमला बोला है। मालवीय ने एक्स पर अपने एक पोस्ट में लिखा, भारत के विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने अमेरिका में इल्हान उमर से मुलाकात की, जो पाकिस्तान प्रायोजित भारत विरोधी आवाज है। एक कट्टरपंथी इस्लामवादी और स्वतंत्र कश्मीर की पैरोकार है।

रात को आया प्रस्ताव सुबह ही मिल गई मंजूरी

एमपी को 'मामा' शिवराज का मिल गया तोहफा

भोपाल। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बुधवार को कहा कि मध्यप्रदेश सरकार की ओर से प्रस्ताव आने के बाद राज्य में सोयाबीन की खरीदी न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर किए जाने की केंद्र की ओर से अनुमति दे दी गई है। चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्रीमान नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता कृषि और किसान कल्याण है। पिछले दिनों मध्यप्रदेश के किसान चिंतित थे कि सोयाबीन एमएसपी के नीचे बिक रहा था। कृषि मंत्रालय ने इसके पहले महाराष्ट्र, कर्नाटक जैसे राज्यों को एमएसपी पर सोयाबीन खरीदी की अनुमति दी थी। शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कल रात को ही मध्यप्रदेश सरकार का इस बारे में प्रस्ताव आया, जिसके बाद एमएसपी पर सोयाबीन की खरीदी के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी गई है। उन्होंने प्रदेश के किसानों को आश्वस्त किया कि सोयाबीन एमएसपी की दरों पर खरीदा जाएगा। इसके पहले मंगलवार सुबह चौहान ने कहा था कि कृषि मंत्रालय के अधिकारी मध्यप्रदेश सरकार के संपर्क में हैं और सरकार का प्रस्ताव मिलते ही एमएसपी पर सोयाबीन खरीदी की अनुमति दे दी जाएगी। इसके बाद कल मध्यप्रदेश सरकार की कैबिनेट में सोयाबीन खरीदी का प्रस्ताव पास होकर राज्य सरकार का अनुरोध केंद्र सरकार को भेजा गया था।

कर्नाटक में कुछ बड़ा होने के बन रहे आसार

- यूएस में मिले राहुल गांधी और डीके शिवकुमार बढ़ गई अटकलें

बेंगलुरु (एजेंसी)। जमीन मामले को लेकर कर्नाटक में मुख्यमंत्री सिद्धारमैया नेतृत्व को बदलने की अटकलें जारी हैं। हालांकि, इसे लेकर कांग्रेस की ओर से आधिकारिक तौर पर कुछ नहीं कहा गया है। इसी बीच राज्य के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार और लोकसभा में नेता

प्रतिपक्ष और सांसद राहुल गांधी की अमेरिका में मुलाकात ने चर्चाएं तेज कर दी हैं। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में कांग्रेस नेता राहुल गांधी से मुलाकात की है, जिससे पार्टी के भविष्य के नेतृत्व को लेकर नई अटकलें पैदा हो गई हैं। शिवकुमार ने अमेरिका की अपनी निजी यात्रा के दौरान गांधी से मुलाकात की है। यह मुलाकात ऐसे महत्वपूर्ण समय पर हुई है जब कांग्रेस कर्नाटक को एकजुट रखने के लिए संघर्षरत है।

घुटती सांसों से कम होती औसत आयु की चिन्ता

ललित गर्ग

निश्चित ही वायु प्रदूषण से उत्पन्न दमघोटू माहौल का संकट जीवन का संकट बनता जा रहा हैं। वायु प्रदूषण का ऐसा विकराल जाल है जिसमें मनुष्य सहित सारे जीव-जंतु फंसकर छटपटा रहे हैं, जीवन सांसों पर छाये संकट से जूझ रहे हैं। यह समस्या साल-दर-साल गंभीर होती जा रही है।

जवायु प्रदूषण का संकट भारत की राष्ट्रव्यापी समस्या है। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो की हाल ही में जारी रिपोर्ट इस चिन्ता को बढ़ाती है जिसमें कहा गया कि वायु प्रदूषण के चलते भारत में जीवन प्रत्याशा में गिरावट आ रही है। जिसमें फेफड़ों को नुकसान पहुंचाने वाले पी.एम. 2.5 कण की बड़ी भूमिका है। रिपोर्ट बताती है कि वैश्विक मानकों से कहीं अधिक प्रदूषण भारत में लोगों की औसत आयु तीन से पांच वर्ष एवं दिल्ली में दस से बाहर वर्ष कम कर रहा है। बहरहाल प्रदूषण के खिलाफ योजनाबद्ध ढंग से मुहिम छेड़ने की जरूरत है। अध्ययन कहता है कि देश की एक अरब से अधिक आबादी ऐसी जगहों पर रहती है जहां प्रदूषण डब्ल्यूएचओ के मानकों से कहीं अधिक है। दरअसल, देश के बड़े शहर आबादी के बोझ से त्रस्त हैं। बढ़ती आबादी के लिये रोजगार बढ़ाने व अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए जो औद्योगिक इकाइयां लगायी गई, उनकी भी प्रदूषण बढ़ाने में भूमिका रही है। डीजल-पेट्रोल के निजी वाहनों को बढ़ता काफिला, निर्माण कार्यों में लापरवाही, कचरे का निस्तारण न होना और जीवाश्म ईंधन ने प्रदूषण बढ़ाया है। यह बढता वायु प्रदूषण हमारी जीवन शैली से उपजे प्रदूषण की देन भी है।

यह निराशाजनक खबरों के बीच उत्साहवर्धक खबर यह भी है कि भारत में सूक्ष्म कणों से पैदा होने वाले जानलेवा प्रदूषण में गिरावट आई है। लेकिन अभी जीवन प्रत्याशा घटाने वाले प्रदूषण को लेकर जारी लड़ाई खत्म नहीं हुई है। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के एनर्जी पॉलिसी इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट 'वायु गुणवत्ता जीवन सूचकांक-2024' बताती है कि भारत में साल 2021 की तुलना में 2022 के वायु प्रदूषण में 19.3 फीसदी की कमी आई है। हालांकि, यह उपलब्धि मौजूदा हालात में बहुत बड़ी तो नहीं कही जा सकती है, लेकिन यह बात उत्साहवर्धक है कि प्रत्येक भारतीय की जीवन प्रत्याशा में इक्यावन दिन की वृद्धि हुई है। हालांकि, हम अभी विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों की कसौटी पर खरे नहीं उतरे हैं, लेकिन एक विश्वास जगा है कि युद्ध स्तर पर प्रयासों से भयावह प्रदूषण के खिलाफ किसी हद तक जंग जीती भी जा सकती है। लेकिन इसके साथ ही सूचकांक-2024 में यह चेताया भी है कि यदि भारत में डब्ल्यूएचओ के वार्षिक पीएम 2.5 के सांद्रता मानक के लक्ष्य पूरे नहीं होते तो भारतीयों की जीवन प्रत्याशा में करीब साढ़े तीन साल की कमी आने की आशंका पैदा हो सकती है। पीएम 2.5 श्वसन प्रणाली में गहराई तक प्रवेश कर सकता है और सांस संबंधी समस्याओं को जन्म देता है। यह स्वास्थ्य को एक बड़ा खतरा है और वायु प्रदूषण का एक प्रमुख कारक है।

हालांकि, राजधानी समेत कई अन्य राज्यों में मेट्रो ट्रेन शुरू

होने के बाद प्रदूषण में काफी कमी आई है। इस दिशा में हमें दीर्घकालीन नीतियों के बारे में सोचना होगा। हमारी कोशिश हो कि घनी आबादी के बीच चलायी जा रही औद्योगिक इकाइयों को शहरों से दूर स्थापित किया जाए। हमारे उद्यमियों को भी जिम्मेदार नागरिक के रूप में प्रदूषण नियंत्रण में योगदान देना चाहिए। नीति-नियंताओं को सोचना चाहिए कि प्रदूषण में अप्रत्याशित वृद्धि के बाद दिल्ली आदि महानगरों में चलाये जाने वाले ग्रेडेड रेस्पॉन्स एक्शन प्लान यानी ग्रेप जैसी व्यवस्था को नियमित रूप से लागू क्यों नहीं किया जा सकता? ताजा कुछ अध्ययनों में बताया गया है कि बढ़ता प्रदूषण नवजात शिशुओं तथा बच्चों की जीवन प्रत्याशा पर बुरा प्रभाव डाल रहा है। ऐसे में हमें पराली के निस्तारण, औद्योगिक कचरे के नियमन तथा कार्बन उत्सर्जन करने वाले ईंधन पर रोक लगाने जैसे फौरी उपाय तुरंत करने चाहिए। ऐसे तमाम प्रदूषण स्रोतों को नियंत्रित करने की जरूरत है जो हमारे जीवन पर संकट पैदा कर रहे हैं।

अध्ययन कहता है कि भारत के सबसे कम प्रदूषित शहर भी डब्ल्यूएचओ के निर्धारित मानकों से सात गुना अधिक प्रदूषित हैं। हम न भूलें कि देश की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की गिनती लगातार दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानियों में होती रही है। दीवाली के बाद जब दिल्ली गहरे प्रदूषण के आगोश में होती है तो कोर्ट से लेकर सरकार तक अति सक्रियता दशार्ते हैं। लेकिन थोड़ी स्थिति सामान्य होने पर परिणाम वही 'ढाक के तीन पात'। कभी पेट्रोल-डीजल के नये मानक तय होते हैं तो कभी जीवाश्म ईंधन पर रोक लगती है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने वर्ष 2019 में प्रदूषण कम करने को राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम देश के सौ से अधिक शहरों में शुरू किया था। चार साल बाद पता चला कि किसी भी शहर ने अपने लक्ष्य को पूरा नहीं किया। विकासशील देश पहले ही निर्धारित वायु गुणवत्ता के मानक पूरा नहीं कर पा रहे हैं, वहीं डब्ल्यूएचओ ने मानकों को और कठोर बना दिया है। सभी सरकारों व नागरिकों का दायित्व बनता है कि अपने-अपने स्तर पर प्रदूषण को कम करने वाली जीवन शैली अपनाएं। हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि पूरी दुनिया में सत्तर लाख मौतें हर साल प्रदूषित वायु के चलते हो रही हैं।

उल्लेखनीय है कि भारत के राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मानक के अनुसार हवा में पीएम 2.5 और पीएम 10 के वार्षिक स्तर की सुरक्षित सीमा क्रमशः चालीस माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर और साठ माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर होनी चाहिए। हालांकि, ये मानक विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशानिदेर्शों के अनुसार निर्धारित मानकों से कहीं ज्यादा हैं। दरअसल, हमारे नीति-नियंता प्रदूषण कम करने के लिये नागरिकों को जागरूक करने में भी विफल रहे हैं। हमारी सुख-सुविधा की लालसा एवं भौतिकतावादी जीवनशैली की चमक ने भी वायु प्रदूषण बढ़ाया है। अब चाहे गाहे-बगाहे होने वाली आतिशबाजी हो, प्रतिबंध के बावजूद पराली जलाना हो, या फिर सार्वजनिक परिवहन सेवा से परहेज हो, तमाम कारण प्रदूषण बढ़ाने वाले हैं। कल्पना कीजिए बच्चों और दमा, एलर्जी व अन्य सांस के रोगों से जूझने वाले लोगों पर इस प्रदूषण का कितना घातक असर होगा?

रिपोर्ट में उल्लेखित प्रदूषण में आई गिरावट की वजह अनुकूल मौसम संबंधी परिस्थितियां बतायी गई हैं। हालांकि, हकीकत यह भी है कि प्रदूषण नियंत्रण के लिये चलायी जा रही कई योजनाओं के सकारात्मक परिणामों का भी इसमें योगदान रहा है। खासकर भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम के तहत जिन शहरों को शामिल किया गया था, वहां भी पीएम-2.5 सांद्रता में गिरावट देखी गई है। वहीं स्वच्छ ईंधन कार्यक्रम का सकारात्मक प्रभाव प्रदूषण नियंत्रण पर नजर आया है। इससे भारत के रिहाइशी इलाकों में कार्बन उत्सर्जन कम करने में मदद मिली है। ऐसी योजनाओं को पूरे देश में लागू करने का सुझाव भी दिया गया है। बहरहाल, हमें वर्ष 2022 के उत्साहजनक परिणामों के सामने आने के बाद व्यापक लक्ष्यों के प्रति उदासीन नहीं होना है। यह एक लंबी लड़ाई है और इसमें सरकार व समाज की सक्रिय भागीदारी जरूरी है। हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि सरकारों के भरोसे ही लगातार गहराते पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण किया जा सकता है।

निश्चित ही वायु प्रदूषण से उत्पन्न दमघोटू माहौल का संकट जीवन का संकट बनता जा रहा हैं। वायु प्रदूषण का ऐसा विकराल जाल है जिसमें मनुष्य सहित सारे जीव-जंतु फंसकर छटपटा रहे हैं, जीवन सांसों पर छाये संकट से जूझ रहे हैं। यह समस्या साल-दर-साल गंभीर होती जा रही है। सरकारें अनेक लुभावने तर्क एवं तथ्य देकर समस्या को कमतर दिखाने की कोशिशें करती है। लेकिन हकीकत यही है कि लोगों का दम घुट रहा है। अगर वे सचमुच इससे पार पाने को लेकर गंभीर हैं, तो वह व्यावहारिक धरातल पर दिखना चाहिए। प्रश्न है कि पिछले कुछ सालों से लगातार इस महासंकट से जूझ रहे राष्ट्र को कोई समाधान की रोशनी क्यों नहीं मिलती? वास्तव में यह विभिन्न राज्य सरकारों का गैर जिम्मेदाराना व्यवहार है, जिसने सबको जहरीले वायुमंडल में रहने को विवश किया है। इस विषम एवं ज्वलंत समस्या से मुक्ति के लिये हर राजनीतिक दल एवं सरकारों को संवेदनशील एवं अन्तर्दृष्टि-सम्पन्न बनना होगा। प्रदूषण से ठीक उसी प्रकार लड़ना होगा जैसे एक नन्हा-सा दीपक गहन अंधेरे से लड़ता है। छोटी औकात, पर अंधेरे को पास नहीं आने देता। क्षण-क्षण अग्नि-परीक्षा देता है। पर हां! अग्नि परीक्षा से कोई अपने शरीर पर फूस लपेट कर नहीं निकल सकता।

संपादकीय

कठघरे में ममता

तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के सांसद जवाहर सरकार का पार्टी और राज्य सभा की सदस्यता से त्यागपत्र देने का साफ संदेश है कि कोलकाता के आर.जी. कर अस्पताल में प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ हुए कथित दुष्कर्म और उसकी हत्या के मामले को ममता की सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया। लोकतंत्र 'जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए' शासन कहा जाता है। लोकतांत्रिक सरकारें जनता के प्रति उत्तरदायी होती हैं, लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आमतौर पर भारत की लोकतांत्रिक सरकारें जनता की आवाज को अनसुना कर देती है। राज्य की शक्तियों का इस्तेमाल जनता की आवाज को कुचलना और दबाने के लिए किया जाता है। पश्चिम बंगाल के इस संवेदनशील मामले में भी ऐसा ही देखा गया और इसी का परिणाम है कि सरकार की नाकामियों के विरुद्ध डॉक्टर और आमजनों का आंदोलन व्यापक होता जा रहा है। लोगों को याद होगा कि 75 के बिहार छात्र आंदोलन की आवाज को भी राज्य और केंद्र की सरकार ने पुलिस के बल पर दबाने की कोशिश की थी। परिणाम यह हुआ कि तब की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को अपने जीवन का सबसे सर्वनाकर का सामना करना पड़ा था। राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अपनी पूर्ववर्ती वाममोर्चा की सरकार पर भी जनता की आवाज को दबाने का आरोप लगाया करती थीं। सत्ता में आने के बाद वह खुद इसी तरह का आचरण कर रही हैं। इसमें हैरानी की बात भी नहीं है क्योंकि इस तरह की चिताओं का सत्ताओं का यही चरित्र होता है। ममता बनर्जी इस जन आक्रोश को केंद्र सरकार और वामपंथी पार्टियों की साजिश बता रही हैं जबकि सरकार प्रशिक्षु डॉक्टर के मामले पर हो रहे विरोध प्रदर्शन को स्वतः स्फूर्त बता रहे हैं। उनका कहना है कि सरकार के खिलाफ ऐसा गुस्सा और अविश्वास कभी नहीं देखा है। सरकार की छवि ईमानदार नौकरशाह की रही है। वह केंद्र की भाजपा की नीतियों से छुब्ध होकर टीएमसी में शामिल हुए हैं। अब उन्होंने राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा कर दी है। जाहिर है ऐसे ईमानदार व्यक्ति के पद त्याग का मतलब है कि टीएमसी के भीतर सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने भी प्रशिक्षु डॉक्टर से की गई हैवानियत की केस दर्ज करने में पुलिस द्वारा की गई 14 घंटे की देरी पर सवाल उठाया और पोस्टमार्टम के लिए आवश्यक कागजात नहीं होने पर चिंता जताई है। देखना है कि जुझारू नेता रहीं ममता इन मुश्किलों का सामना कैसे कर पाती हैं?

महिला सुरक्षा भी होगा चुनावों में बड़ा मुद्दा

निर्मल रानी

ओलम्पियन विनेश फोगाट के कांग्रेस में शामिल होने तथा जुलाना विधानसभा क्षेत्र से अपनी चुनावी पारी की शुरूआत करने के बाद एक बात यह भी स्पष्ट हो गयी है कि कांग्रेस विनेश का इस्तेमाल केवल स्पोर्ट्स स्टार और जाट चेहरे मात्र के रूप में ही नहीं करेगी बल्कि वह इस सुप्रसिद्ध व लोकप्रिय ओलम्पियन के बहाने भारतीय जनता पार्टी को महिला सुरक्षा के नाम पर देशभर में घेरने का भी प्रयास करेगी। भाजपा ने 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का नारा देकर तथा इस योजना के प्रचार पर सैकड़ों करोड़ रुपए खर्च कर देश की जनता को यह सन्देश देने की कोशिश की थी कि भाजपा ही बेटी / महिलाओं की एकमात्र हितैषी पार्टी है तथा भाजपा के राज में ही महिलाओं के हितों की पूरी रक्षा व मान सम्मान संभव है। परन्तु यह भी अजीब संयोग है कि इसी भाजपा के राज में देश के अनेक प्रांतों में ऐसी सैकड़ों घटनाएं हो चुकीं जो महिलाओं पर होने वाले अत्याचार में एक मिसाल बन गयीं। क्या मणिपुर तो क्या बंगाल, राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों से तो ऐसी रूह कांपने वाली अनेक घटनाएं हो चुकीं जिनकी दूसरी कोई मिसाल नहीं मिलती।

महिला उत्पीड़न, बलात्कार व हत्या जैसे घृणित अपराधों में यह भी देखा गया है कि ऐसे कई भाजपा शासित राज्यों में होने वाली ऐसी सनसनीखेज वारदातों में भाजपा की ओर से खामोशी बरती गयी जबकि किसी गैर भाजपा शासित राज्य खासकर बंगाल में यदि कोई घटना घटी तो उसे भाजपा द्वारा इस हद तक उछाला गया कि बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाये जाने की चर्चा तक छिड़ गयी? जबकि मणिपुर में महिलाओं के साथ जैसे जुल्म हुये वह स्वतंत्र भारत के इतिहास में आज तक कहीं भी नहीं हुये। परन्तु चूँकि मणिपुर भाजपा शासित राज्य है इसलिये इन घटनाओं के लिये न तो वहां के मुख्यमंत्री को जिम्मेदार ठहराया गया न ही किसी से त्याग पात्र माँगा गया? उत्तरांचल में भी ऊंचे रसूख रखने वाले भाजपाई नेता के पुत्र बलात्कार, हत्या जैसे मामलों में शामिल पाए गये। भाजपा शासित राज्यों में घटी ऐसे अनेक घटनायें सरकार की 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' की मुनादी पर सवाल खड़ा कर रही हैं। इसी बीच ओलम्पियन विनेश फोगाट का कांग्रेस का दामन थामना भी भाजपा के लिये बड़ा सिर दर्द साबित हो सकता है। क्योंकि विनेश फोगाट उन विश्वस्तरीय ओलम्पिक पदक विजेता पहलवानों में एक है जिसने उत्तर प्रदेश के पूर्व भाजपा सांसद व भारतीय कुश्ती महासंघ के पूर्व अध्यक्ष बृज भूषण सिंह द्वारा कुछ महिला पहलवानों के साथ कथित रूप से किये गये दुर्व्यवहार के विरुद्ध मोर्चा खोलते हुये जंतर मंतर पर धरना दिया था। यह धरना गत वर्ष 28 मई 2023 को उस समय और भी सुर्खियों में छा गया था जबकि उस दिन नये संसद भवन के उद्घाटन के अवसर पर बृज भूषण सिंह के विरुद्ध धरनारत इन पहलवानों को दिल्ली पुलिस ने बलपूर्वक जंतर मंतर से घसीट कर धरना समाप्त करा दिया था। उस दिन देश ने 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का नारा देने वाली भाजपा के दो चरित्र व चेहरे देखे थे। एक तरफ तो उत्पीड़न की शिकार देश का मान सम्मान विश्व में बढ़ने वाली बेटियां पुलिस जुल्म का शिकार हो रही थीं उन्हें सड़कों पर घसीटा जा रहा था। जबकि ठीक उसी समय नारी उत्पीड़न का आरोपी बृज भूषण सिंह मुस्कुराता हुआ नवनिर्मित संसद भवन के उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ा रहा था। इन्हीं धरनारत पहलवानों में दिल्ली पुलिस की ज्यादतियों का शिकार एक खिलाड़ी विनेश फोगट भी थी जो अब कांग्रेस में शामिल होकर पूरे देश को भाजपा के 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' के खोखले दावों और इसकी हकीकत में अंतर से परिचय कराएगी। इसी महिला सम्मान के सवाल को लेकर एक और 'सेल्फ गोल' करते हुये भाजपा द्वारा हरियाणा विधानसभा चुनाव में चरखी दादरी से पूर्व जेलर सुनील सांगवान को टिकट दिया गया है। सुनील सांगवान की विशेषता यह है कि रोहतक की सुनारिया जेल में उनके जेल अधीक्षक के कार्यकाल के दौरान रेप व हत्या के दोषी गुरमीत राम रहीम को 6 बार पैरोल मिली थी। इस पैरोल को दिलाने में सहायता करने में जेलर सुनील सांगवान की विशेष भूमिका थी। राम रहीम को मिली पिछली पैरोल के दौरान ही यह स्क्रिप्ट लिखी जा चुकी थी। तभी जैसे ही राम रहीम अपनी पैरोल खत्म कर जेल पहुंचा उसके फौरन बाद ही सुनील सांगवान ने जेलर पद से त्याग पत्र दिया जिसे फौरन स्वीकार भी कर लिया गया। उसके अगले ही दिन उन्होंने सार्वजनिक मंच पर आकर भाजपा ज्वाइन की। और दो दिन बाद ही भाजपा की पहली सूची में ही चरखी दादरी से सुनील सांगवान का नाम भाजपा प्रत्याशी के रूप में सामने आ गया। गोया 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का नारा देने वाली भाजपा में गुरमीत राम रहीम जैसे रेप और हत्या के दोषी व सजा काट रहे अपराधी की इतनी पहुँच है कि वह अपनी पसंद के व्यक्ति को पार्टी टिकट भी दिला सकता है? साथ ही ऐसे अपराधी का 'करम फरमाँ' जेलर चुनाव मैदान में आकर महिला सुरक्षा के विषय में अपने क्या विचार रखेगा? यह सब सवाल ओलम्पियन विनेश फोगाट आगामी चुनाव में केवल हरियाणा ही नहीं बल्कि कांग्रेस की स्टार प्रचारक के रूप में भाजपा से देश भर में पूछने जा रही है। भाजपा स्वयं को उन आरोपों से भी दूर नहीं रख सकती जो उसपर बिल्कीस बानो के सजायाफ़्ता अपराधियों की रिहाई को लेकर लगे थे। क्योंकि गुजरात की भाजपा सरकार ने तो उन सामूहिक बलात्कारियों व हत्यारों को रिहा कर दिया था परन्तु सर्वोच्च न्यायलय ने गुजरात सरकार के इस फैसले को निरस्त हुये उन्हें पुनः जेल की सलाखों के पीछे धकेला। तब कहाँ चला गया था भाजपा का महिला सुरक्षा का दावा? बेटी बचाओ योजना का उस समय ध्यान क्यों नहीं आया? जब भाजपा सरकार के मंत्री विधायक व कार्यकर्ता कठुआ की 8 वर्षीय आसिफा के बलात्कार व उसकी हत्या के आरोपियों के पक्ष में जुलूस निकाल रहे थे। जब उनके पक्ष में तिरंगा यात्रा निकल कर तिरंगे को भी बदनाम करने की कोशिश कर रहे थे उस समय कहाँ था था भाजपा का नारी न्याय और बेटी बचाओ का उद्घोष? ऐसे और अनेक सवाल जो भाजपा में महिला बाल विकास मंत्री रही स्मृति ईरानी नहीं पूछ सकीं उस तरह के सवाल अब विपक्षी इंडिया गठबंधन की तरफ से विनेश फोगाट यानी एक ऐसी ओलम्पियन देश में घूम घूम कर पूछेगी जोकि स्वयं नारी शोषण शिकार रही है वह भी कथित रूप से भाजपा के दबंग सांसद के द्वारा? इसलिये विनेश फोगट का कांग्रेस में आना केवल किसी ओलम्पियन का किसी पार्टी में शामिल होना मात्र नहीं है बल्कि विनेश फोगट के रूप में महिला सुरक्षा भी वर्तमान में हो रहे व भविष्य में होने वाले चुनावों में एक बड़ा मुद्दा होगा।

पैरालंपिक में भारतः सोच में आए बदलाव का नतीजा

मोनज चतुर्वेदी

भारत अब पैरालंपिक खेलों में एक ताकत के रूप में उभर रहा है। उन्होंने पेरिस पैरालंपिक खेलों में सात स्वर्ण पदक सहित 29 पदक जीतकर इतिहास रच दिया है। अब यह कहा जाने लगा है कि भारत के अब सामान्य खिलाड़ियों को पैरा एथलीटों से प्रेरणा लेने की जरूरत है, क्योंकि पिछले दिनों भारत पेरिस ओलंपिक में एक भी स्वर्ण पदक नहीं जीत सका था और उसके पदकों की संख्या भी छह थी। अब सोचने वाली बात यह है कि तमाम मुश्किलों को पार करके जब पैरा एथलीट बुलंदियों को छू सकते हैं तो हमारे सामान्य खिलाड़ियों को क्या दिक्कत है। सही मायनों में पैरा एथलीटों के इस धमाल की वजह पिछले कुछ समय में सोच में आए बदलाव का यह नतीजा है। भारत के लिए स्वर्ण जीतने वाले नीतेश कुमार, अवनि लेखरा, सुमित अंतिल, हरविंदर सिंह, धरमबीर सिंह, प्रवीन कुमार और नवदीप सिंह में कोई भी ऐसा नहीं है, जिसने पहले अपनी शारीरिक अपंगता से उबरने के लिए संघर्ष नहीं किया हो। इन सभी ने पैरा खेलों में हाथ आजमाकर देशवासियों के सामने मिसाल पेश की है। वैसे भी युवाओं को प्रेरित करने के लिए एक नायक की जरूरत होती है। पर अब देश ने इन खेलों में ढेरों नायक खड़े. कर दिए हैं, इसलिए युवा भी अपनी अपंगता को दुख मनाने के बजाय खेलों में हाथ आजमाने को आगे आने लगे हैं। वह दिन भी दूर नहीं, जब भारत इन खेलों के टॉप दस देशों में नजर आ सकता है। हम पेरिस पैरालंपिक खेलों की बात करें तो भारत ने 29 में से 13 पदक एथलेटिक्स में हासिल किए हैं। भारत द्वारा जीते सात स्वर्ण पदकों में से चार और नौ रजत पदकों में से छह पदक एथलेटिक्स में आए हैं। भारत ने बैड़मिंटन और निशानेबाजी में भी अच्छा प्रदर्शन किया है। पर तीरंदाजी, जूड़ो, टेबल टेनिस सहित कई अन्य खेलों में भी बेहतर प्रदर्शन करने की संभावनाएं हैं। भारतीय प्रदर्शन पर हम नजर ड़ालें तो साफ दिखता है कि खिलाड़ियों के प्रदर्शन में सुधार आ रहा है। इसके लिए प्रवीण कुमार का ऊंची कूद में टोक्यो के रजत को स्वर्ण में बदलना, हरविंदर का तीरंदाजी कांस्य को स्वर्ण में बदलने के अलावा हाईजंपर शरद कुमार और निषाद कुमार, शटलर सुहास यथिराज, ड़िस्कस थ्रोअर योगेश का पदक का रंग बदलने को देखा जा सकता है। पैरालंपिक खेल पहले विश्व स्तर पर ही बहुत लोकप्रिय नहीं थे और भारत में तो इन खेलों की लोकप्रियता का सवाल ही कहां उठता है? यही वजह है कि भारत शुरूआत में इन खेलों में नियमित तौर पर भाग ही नहीं लेता था। 1984 से जब इन खेलों में भाग लेना नियमित तौर पर शुरू हुआ, तब भी उसके भाग लेने में गंभीरता का एकदम से अभाव दिखता था। यही वजह है कि ज्यादातर खेलों में भाग लेने वालों की संख्या 4-6 ही हुआ करती थी। भारत ने 1984 से लेकर 2012 तक आठ खेलों में सिर्फ सात पदक ही जीते। सही मायनों में भारत में पैरा एथलीटों को सही दिशा मिलने की शुरूआत 2016 के रियो पैरालंपिक से हुई और इसमें सरकारी सहयोग के साथ देश की पैरालंपिक समिति की बागड़ोर पैरा एथलीटों के हाथों में आने ने अहम भूमिका निभाई। 2016 के रियो खेलों में रजत पदक जीतने वाली दीपा मलिक 2020 में इस समिति की प्रमुख बनीं तो आजकल इन खेलों की समिति के दोहरे स्वर्ण पदक विजेता देवेंद्र झाझरिया अध्यक्ष हैं। असल में यह लोग अच्छे से जानते थे कि इन खिलाड़ियों को किस तरह ट्रेनिंग की जरूरत है और उनको क्या सुविधाएं मुहैया कराई जाएं। इसी का परिणाम पहले 2020 के टोक्यो पैरालंपिक और पेरिस खेलों में देखने को मिला है। यह सही है कि 2016 में भारत ने दो स्वर्ण सहित चार ही पदक जीते। पर इन खेलों से ही भारतीय पैरा एथलीटों में यह भावना बनी कि वह भी इस स्तर पर सुर्खियां बटोर सकते हैं। यह सही है कि भारत ने 2020 के टोक्यो पैरालंपिक के 19 पदकों के मुकाबले सात स्वर्ण सहित 29 पदक जीतकर अपने प्रदर्शन को सुधारा है। वह अंक तालिका में भी 24वें से 18वें स्थान पर आकर पहली बार टॉप 20 देशों में शामिल हुआ है। पर भारतीय क्षमता का पूरा उपयोग अभी भी नहीं हो सका है। इन खेलों में भारत ने यदि एक स्वर्ण और दो रजत पदक और जीत लिए होते तो तो वह ईरान से ऊपर रहकर 14वें स्थान पर पहुंच सकता था। भारत को टॉप दस देशों में शामिल होने का प्रयास करना चाहिए। यह काम बहुत आसान तो नहीं पर असंभव भी नहीं है। भारत इस मुकाम तक ऐसे ही नहीं पहुंच गया है।

इसके लिए पैरालंपिक समिति ने भारत सरकार के साथ

मिलकर तमाम प्रयास किए और यह इन सभी का परिणाम है। इस समिति की पूर्व अध्यक्ष दीपा मलिक कहती हैं कि मैंने इन खेलों को मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया। इसके लिए इस खेल के आंकड़ों को इंटरनेट पर पड़वाया। प्रतिभाओं की तलाश के लिए देश में जूनियर और सब जूनियर चैंपियनशिपों का आयोजन कराया। हम सभी जानते हैं कि पैरा एथलीट किन परिस्थितियों से उभरकर सामने आते हैं, इसलिए सबसे जरूरी मनोदशा को तैयार करना होता है। आधुनिक खेलों में खिलाड़ी की प्रतिभा के साथ मनोवैज्ञानिक तैयारी का महत्त्व बहुत बढ़रू गया है। भारत को ओलंपिक खेलों में प्रदर्शन सुधारना हो मानसिक मजबूती पर खासतौर से काम करने की जरूरत है।

चिंतन-मनन

क्या हैं आध्यात्मिक होने का अर्थ

यह प्रश्न किसी भी जिज्ञासु के मन में उठ सकता है कि हमें ठीक-ठीक ऐसा क्या करना चाहिए ताकि वह जो परम है, जो परमेश्वर है, वह मेरे जीवन में घटित हो सके? सदगुरु इसका उत्तर देते हैं कि अध्यात्म भीगी बिल्लियों के लिए नहीं है, क्या तुम समझ रहे हो? तुम अपने जीवन में और कुछ भी नहीं कर सकते हो, लेकिन सोचते हो कि मैं आध्यात्मिक हो सकता हूँ, ऐसा नहीं है। अगर तुम इस संसार के किसी भी काम को अपने हाथ में लेकर कर सकते हो, फिर तुम्हारे आध्यात्मिक होने की एक संभावना पैदा हो सकती है, अन्यथा नहीं। अगर तुम्हारे पास इस संसार के किसी भी काम को लेकर और अच्छी तरह से करने की शक्ति और साहस है, तब तुम संभवतः आध्यात्मिक हो सकते हो। यह उन लोगों के लिए नहीं है, जो कुछ भी नहीं कर सकते। अभी, पूरे देश के मन में यही बैठा हुआ है, संभवतः पूरे संसार के मन में, कि वे निकम्मे और नालायक लोग, आध्यात्मिक लोग होते हैं, क्योंकि वे तथाकथित आध्यात्मिक लोग वैसे ही हो गए हैं। वे लोग जो किसी भी चीज को करने के लायक नहीं हैं, वे बस यही करते हैं कि एक गेरुआ वस्त्र पहन कर और किसी मंदिर के सामने बैठ जाते हैं; उनका जीवन सँवर जाता है। यह अध्यात्म नहीं है, यह वर्दी पहनकर बस भीख माँगना है। अगर तुम्हें अपनी चेतना पर विजय प्राप्त करनी है, अगर तुम्हें अपनी चेतना के शिखर पर पहुँचना है, वहाँ एक भिखारी कभी नहीं पहुँच सकता। दो तरह के भिखारी होते हैं। गौतम बुद्ध तथा उस स्तर के लोग उच्चतम श्रेणी के भिखारी हैं। दूसरे सभी निपट भिखारी हैं। मैं तो कहूँगा कि एक सड़क का भिखारी तथा राजगद्दी पर बैठा हुआ एक राजा, दोनों ही भिखारी हैं। वे निरन्तर बाहर से कुछ माँग रहे होते हैं। सड़क का भिखारी हो सकता है कि पैसा, भोजन या आय माँग रहा हो। राजा हो सकता है कि किसी दूसरे राज्य पर विजय, खुशी या कुछ इस तरह की अनर्गल चीजें माँग रहा हो।

जनकपुरी पुलिस ने चोरी की तीन बाइक के साथ 03 शातिर चोर को किया गिरफ्तार...भेजा जेल

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

सहारनपुर :-एसपी सिटी अभीमन्यु मांगलिक के कुशल नेतृत्व में थाना जनकपुरी प्रभारी सतेंद्र नागर ने पुलिस टीम के साथ वाहन चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाते हुए 03 वाहन चोरों को गिरफ्तार किया है व चोरी की 03 बाइक बरामद कर बड़ी सफलता हासिल की है, पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी की और इस दौरान चोरी की तीन बाइक के साथ 03 शातिर चोर को गिरफ्तार किया है, प्रभारी इंस्पेक्टर सतेंद्र नागर ने बताया कि शातिर चोर विक्की पुत्र ओमप्रकाश नि० ग्राम जुड्डी थाना नकुड, अनुज पुत्र सत्यप्रकाश नि० ग्राम जुड्डी थाना नकुड व मनुज पुत्र सतीश नि० जुड्डी थाना नकुड जिला सहारनपुर को सरकारी अस्पताल की पीछे वाली रोड से गिरफ्तार किया गया, जिनके कब्जे से उपरोक्त मुकदमें से सम्बन्धित मो० सा० स्पलैण्डर के साथ चोरी की दो अन्य मो०सा० भी बरामद की गयी। बरामदगी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त में धारा 317 (2)/317 (5)/318 (4) बी0एन0एस0 की वृद्धि की गयी। अभियुक्तगण के विरुद्ध अन्य आवश्यक विधिक कार्यवाही कर समय से माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है। पूछताछ करने पर अभियुक्तगण द्वारा बताया गया कि हम नशा करने के आदी है अपनी नशे की लत को पूरा करने के लिए मो०सा० चोरी करते है, तीनों इन मोटर साइकिलों को बेचने के लिए जा रहे थे तो पुलिस द्वारा पकड़ लिया गया।

आरक्षण बचाओ रैली में शिरकत करने को दिल्ली रवाना हुए आसपा कार्यकर्ता

संस्कार उजाला
सहारनपुर छुटमलपुर

छुटमलपुर आसपा प्रमुख सांसद चंद्रशेखर आजाद के आह्वान पर आज दिल्ली में हो रही आरक्षण बचाओ रैली में शामिल होने के लिए भीम आर्मी संरक्षक सतीश रावत व नितिन बंसल के नेतृत्व में आसपा कार्यकताओं का जत्था रवाना हुआ। सतीश रावत ने कहा कि भाजपा संविधान में एससी समाज के उत्थान के लिए दिए गए आरक्षण को न्यायलय की आड़ में छिन्न भिन्न करने का जो प्रयास किया जा रहा है उसे किसी भी कीमत पर सहन नहीं किया जाएगा। केंद्र को जगाने के लिए ही रैली का आयोजन किया जा रहा है। रवाना होने वालों में एडवोकेट हिजाब खान, एडवोकेट जावेद खान, जावेद अख्तर, लईक अंसारी, हाजी नईम कुरैशी, आकिब, सचिन, राहुल बर्मन, शिव कुमार, सुबोध, शाबान गोड़, सलमान चौधरी दानिश गोड़ आदि शामिल रहे

भारतीय जनता पार्टी सदस्यता अभियान के अंतर्गत मीटिंग का आयोजन किया गया

संस्कार उजाला
सहारनपुर/ छुटमलपुर

नगर छुटमलपुर के डाक बंगला फतेहपुर भादो में भाजपा पार्टी सदस्यता अभियान के अंतर्गत मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें मंडल अध्यक्ष दुबे सिंह कांबोज द्वारा बूथ अध्यक्ष, शक्ति केंद्र अध्यक्षो को पत्रक, सदस्यता फार्म वितरित किए गये। मीटिंग में मंजू शर्मा एडवोकेट प्रभारी भाजपा नगर पंचायत छुटमलपुर ने जानकारी दी कि दिनांक 11/9/2024 से 16/9/2024 तक विशेष अभियान चलाकर ज्यादा से ज्यादा मिस कोल 8800002024 देकर सदस्यता दिलाई जाएगी, इस दौरान भाजपा नगर प्रभारी मंजू शर्मा एडवोकेट ने कहा कि ज्यादा से ज्यादा सदस्यता अभियान चलाकर आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के हाथों को मजबूत करना है इस दौरान मीटिंग की अध्यक्षता, मंडल अध्यक्ष दुबे सिंह कांबोज, ने की इस अवसर पर मुख्य रूप से मंडल अध्यक्ष दुबे सिंह कंबोज भाजपा नगर प्रभारी मंजू शर्मा एडवोकेट ओबीसी मोर्चा मंडल अध्यक्ष मोनी काम्बोज बबीता धीमान,ममता शर्मा सभासद,सचिन, सुमित, आदि भाजपा कार्यकर्ता मोजूद रहे।

संक्षिप्त डायरी

सिंभावली पुलिस एवं एएनटीएफ मेरठ की संयुक्त टीम ने चेकिंग के दौरान अंतर अंतराज्यीय मादक पदार्थ तस्कर को ढाई करोड रुपए के अवैध गांजे के साथ किया गिरफ्तार

संस्कार उजाला
रिपोर्टर भूपेंद्र वर्मा

गढ़मुक्तेश्वर/एसपी कुमार ज्ञानेंजय सिंह के कुशल निर्देश पर जनपद में नशीले अवैध मादक पदार्थों की तस्करी में लिप्त लोगों के विरुद्ध चलाए जा रहे। सघन चेकिंग अभियान के दौरान दिल्ली मुरादाबाद नेशनल हाईवे पर बक्सर के पास सिंभावली पुलिस एवं एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स टीम के द्वारा मुखबिर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए आर्टिकुलेटेड व्हीकल इंडियन गैस सप्लाई हेतु कैप्सूल में भरकर ले जाए जा रहे। 5 कुंतल 1 किलो 140 ग्राम गांजे के साथ युवक को गिरफ्तार करने का दावा किया है। बता दें कि एसपी के कुशल आदेश अनुपालन में जनपद में आपराधिक गतिविधियों में संलिप्त एवं नशीले मादक पदार्थों की तस्करी में लिप्त लोगों की धर पकड़ को लेकर चलाए जा रहे।सघन चेकिंग अभियान के दौरान थाना प्रभारी विनोद पांडे उपनिरीक्षक महंत राज सिंह, उप निरीक्षक वीरेश कुमार, हैका०फरमान अली, आदेश कुमार अंकित कुमार योगेश कुमार, एवं एंटीनाकोटिक्स टास्क फोर्स मेरठ टीम के उप निरीक्षक राजेंद्र सिंह हेड कांस्टेबल कृष्ण वीर नसीम अहमद कांस्टेबल रोहित जितेंद्र त्रिपाठी ने मुखबिर की सूचना पर संयुक्त रूप से कार्यवाही करते हुए। दिल्ली मुरादाबाद नेशनल हाईवे पर बक्सर के पास एक आर्टिकुलेटेड व्हीकल इंडियन गैस सप्लाई हेतु कैप्सूल को रोक कर चेक किया गया। जिसमें 5 कुंतल 1 किलो 140 ग्राम अवैध गांजा भर कर ले जाते हुए। अंतरराज्यीय मादक पदार्थों के तस्कर वकील पुत्र नत्थन निवासी कस्बा थाना डिडौली जिला अमरोहा को गिरफ्तार कर आरोपी अभियुक्त के विरुद्ध मु०अ०स०253/24/धारा 08/20/29/60 एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा पंजीकृत कर विधिक वैधानिक कार्यवाही जारी है। वही इस मामले को लेकर सीओ सिटी वरुण मिश्रा का कहना है कि गिरफ्तार अभियुक्त सटीक किस्म का अंतरराज्यीय नशीले मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले गिरोह का सदस्य है। जिसके कब्जे से 5 कुंतल 1 किलो 140 ग्राम अवैध गांजा जिसकी अनुमति लागत ढाई करोड रुपए बताई जा रही है। साथ ही घटना में प्रयुक्त एक आर्टिकुलेटेड व्हीकल इंडियन गैस सप्लाई में इस्तेमाल किए जाने वाला कैप्सूल ट्रक बरामद किया गया है।

किसान डिग्री कॉलेज के गेट पर लावारिस खड़ी महिंद्रा मैक्स पिकअप गाड़ी को पुलिस बरामद कर जांच में जुटी

संस्कार उजाला

गढ़मुक्तेश्वर/सिंभावली थाना क्षेत्र के अंतर्गत एन एच 24 पर स्थित किसान डिग्री कॉलेज के गेट पर खड़ी एक महिंद्रा मैक्स पिकअप गाड़ी को पुलिस ने हिरासत में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है। सूत्रों की माने तो यह महिंद्रा मैक्स पिकअप गाड़ी किसान डिग्री कॉलेज के गेट पर पिछले चार रोज से खड़ी हुई थी। जिसके चलते सुबह मॉर्निंग वॉक पर किसान डिग्री कॉलेज के फील्ड में घूमने आने वाले लोगों को इस गाड़ी को लावारिस खड़े देख संदेह प्रतीत हुआ। जिसकी सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने गाड़ी को लॉक होने के चलते हाइड्रा क्रेन की मदद से उठाकर थाने ले गई। और मामले की सभी पहलुओं से जांच की जा रही है।

युवती ने शादी का झांसा देकर चार वर्ष तक रेप करने वाले प्रेमी के विरुद्ध थाने में तहरीर देकर कानूनी कार्रवाई की लगाई गुहार

संस्कार उजाला
रिपोर्टर भूपेंद्र वर्मा

गढ़मुक्तेश्वर/सिंभावली थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले एक गांव निवासी युवती ने अपने प्रेमी पर शादी का झांसा देकर 4 वर्ष तक रेप करने जैसे गंभीर आरोप लगाते हुए तहरीर देकर कानूनी कार्रवाई की मांग की है। बता दे कि सिंभावली थाना क्षेत्र के गांव निवासी एक युवती ने थाने में तहरीर देकर उल्लेख किया है कि उसकी मुलाकात 4 वर्ष पूर्व शराफत पुत्र राहत अली निवासी बसेनदुवा थाना खुर्जा से एक शादी समारोह में हुई थी। इसके उपरांत आरोपी युवक शराफत के द्वारा युवती को लगातार फोन पर बहलाना फुसलाना शुरू कर दिया। और उसने एक दिन हापुड़ होटल में बुलाकर उसके साथ शादी का झांसा देकर रेप किया। युवती के द्वारा शादी का दवाब बनाने पर आरोपी युवक शराफत ने शादी से इनकार कर दिया। पीड़ित परिजनों ने अपनी सामाजिक लोकलज्जा के चलते युवती का नौ माह पूर्व भूटटू पुत्र यामीन निवासी चिढावक थाना गुलावठी के साथ निकाह कर दिया। लेकिन आरोपी युवक अपनी हरकतों से पास नहीं आया। और उसको फिर से बहला फुसलाकर कर शादी करने का झांसा देकर निकाह तुड़वा दिया। और उसको बाबूगढ़ हापुड होटल में बुलाकर कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ पिलाकर उसके साथ रेप करने का सिलसिला शुरू कर दिया। और गाजियाबाद ले जाकर फर्जी कोर्ट मैरिज के कागज तैयार करा कर उसको गुमराह करता रहा हकीकत जब सामने आई जब वह शराफत के घर पहुंची तो उसकी मां जीनत,बहन साबिया, रजिया एवं घर वालों ने उसे मारपीट कर वहां से यह कहकर भगा दिया कि अपाचे मोटरसाइकिल ₹5 लाख की नगदी दहेज में लेकर आना। तुझे जब घर में घुसने देंगे। जिसको लेकर पीड़िता ने थाने में तहरीर देखकर कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

सरस्वती शिशु मंदिर के छात्र-छात्राओं ने बौद्धिक प्रयोगिता पश्चिम लहराया

संस्कार उजाला

हापुड़ के गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्र के ग्राम सादुल्लापुर लोदी मैं सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के छात्राओं एक बार फिर पश्चिम लहराया वर्ष 2024 2025 की विभागीय बौद्धिक प्रतियोगिता का गाजियाबाद के सरस्वती शिशु विद्या मंदिर परतापुर हापुड़ में आयोजन किया गया जिसमें लगभग 12 स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया जिस में सादुल्लापुर लोदी सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के पांच छात्र-छात्राओं ने भाग लिया कला में मोहित ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा कृष्णा ने प्रशन मंच में दक्ष यीशू हर्षित ने प्रथम स्थान प्राप्त किया बहन डिंपल ने गायन में प्रथम स्थान प्राप्त किया विद्यालय के प्रधानाचार्य विजय शर्मा जी ने भैया बहनों को आगामी प्रान्तीय प्रतियोगिताओ के लिए उत्साहवर्धन किया तथा सभी आचार्य बांधों के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया

प्रेस वार्ता में हुमा किन्नर ने बताया अपनी जान को खतरा पुलिस प्रशासन से जान बचाने की गुहार लगाई

इस दौरान उन्होंने बताया कि क्षेत्र में तथाकथित फर्जी किन्नर उगाई कर रहे हैं और क्षेत्रीय जनता को परेशान कर रहे हैं

संस्कार उजाला
सहारनपुर (अजय सैनी)

फतेहपुर डाक बंगले पर हुमा किन्नर भटपुरा निवासी ने प्रेस वार्ता कर पत्रकारों को बताया की क्षेत्र में फर्जी किन्नर भोली - भाली क्षेत्रीय एवं ग्रामीण जनता को गुमराह कर बधाई के नाम पर जबरदस्त उगाई कर रहे हैं जिससे क्षेत्र की जनता परेशान हो गई है इस दौरान उन्होंने बताया की है छुटमलपुर क्षेत्र में तथाकथित फर्जी किन्नर मुझ पर हमला करके मुझको जान से मारने की धमकी दे रहे हैं ओर बताया कि मेरे पास में हाई कोर्ट के आदेश हैं कि बधाई के नाम आप शुभकामना ले सकते हैं और सुख शांति से अपना जीवन व्यतीत करें जबकि इन्होंने बताया कि विपक्षी रूपा किन्नर एवं उनके साथी मेरे कार्य में बाधा डालने का कार्य कर रहे हैं और मुझे बार-बार परेशान कर रहे हैं यहा तक की जान से मारने की धमकी दे रहे हैं बस मैं यही कहूंगी की शासन - प्रशासन से मेरी यही मांग है की छुटमलपुर क्षेत्र में जितने भी किन्नर हैं उनकी जांच कर कार्रवाई की मांग करती हूं जांच की इस कार्रवाई से क्षेत्रीय जनता को जहा इन फर्जी किन्नरो से निजात मिलेगी वही मुझको भी सुकून मिलेगा क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनी रहेगी हम जैसे किन्नर को क्षेत्र में शुभकामनाएं लेने में कोई समस्या नहीं आएगी इस दौरान उन्होंने बताया कि मेरे ऊपर रूपा किन्नर द्वारा लगाए गए सब आरोप झूठे हैं बे बुनियाद है उन्होंने बताया की हाई कोर्ट का आदेश मेरे लिए सर्वोपरि है मैं उसका सम्मान करूंगी और कानून के दायरे में रहकर ही कार्य करूंगी

2 किलोवाट के कनेक्शन लेने के लिए 5000 की रिश्वत मांग रहे हैं विद्युत विभाग के कर्मचारी

पीड़ित ने मुख्यमंत्री को शिकायत पत्र देकर कार्यवाही की मांग की

संस्कार उजाला
सहारनपुर (अजय सैनी)

जानकारी के अनुसार सहारनपुर नगर की नूर बस्ती में शाहिदा परवीन पत्नी नजाकत अली खान जिनके मकान नंबर 6/5129 है पीड़ित ने बताया इसी की बगल में मेरे पति नजाकत अली खान का मकान है जिसका मकान नंबर6/5791अ है पहले इस मकान नंबर पर 4 किलो वाट का मीटर लगा था और इसी मीटर से मकान में बिजली जा रही थी लेकिन विद्युत विभाग के कर्मचारियों ने नूर बस्ती में ₹500 महीना प्रत्येक विद्युत उपभोक्ता से लेते थे पीड़ित से भी ₹500 महीना पैसा मांगा गया लेकिन पीड़ित ने ₹500 देने से इनकार कर दिया और अपना 2 किलो वाट का कनेक्शन लेने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर दिया जिसका ऑनलाइन नंबर 7146971000 है अब कहानी बनती है जांच के लिए लाइनमैन जुबेर तथा जेई जाहिद इकबाल पीड़ित के घर पर जांच के लिए आते हैं और पीड़ित से ₹5000 की रिश्वत मांगते हैं और कहते हैं कि अगर आपने 5000 की रिश्वत नहीं दी तो आपका कनेक्शन नहीं होगा अब हारकर पीड़ित ने मुख्यमंत्री को शिकायती पत्र लिखकर भ्रष्टाचारी विद्युत कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हुए अपना 2 किलोवाट का कनेक्शन करवाने के लिए गुहार लगाई इस संबंध में लाइनमैन तथा जेई से फोन पर बात करनी चाहि तो दोनों के नंबर बंद मिले और इस संबंध में एसडीओ संजीव यादव से फोन पर बात की तो उन्होंने आश्वासन देते हुए बताया कि पीड़ित लिखित शिकायत दे तो उस पर कार्रवाई होगी ऐसे कर्मचारियों पर शिकंजा कसा जाएगा रिश्वत मांगने का मामला शिकायती पत्र में लिखा हुआ है मुख्यमंत्री को यह पत्र भेजा गया है तथा विद्युत विभाग के उच्च अधिकारियों को भी भेजा गया है

बिजली चोरी रोको अभियान , सहारनपुर जनपद में विधुत विभाग की बड़ी और नई पहल शुरू

संस्कार उजाला
सहारनपुर ब्यूरो

सहारनपुर मुख्य अभियंता सुनील कुमार अग्रवाल के आदेश अनुसार उप खण्ड अधिकारी अंकित त्यागी कैलाशपुर के नेतृत्व में सहारनपुर जनपद में विधुत विभाग की बड़ी और नई पहल शुरू।बेहडा संदल सिंह बिजली घर से जुड़े गांव दतौली मुगल में बिजली चोरी रोकने के लिए शुरू की गई बड़ी पहल।गांव दतौली मुगल में बिजली चोरी रोकने के लिए विधुत विभाग ने उठाया बड़ा कदम। सहारनपुर जनपद के गांव दतौली मुगल में होती हैं सबसे ज्यादा बिजली की चोरी।बिजली चोरी रोकने के उपभोक्ताओं के घरों में लगें बिजली मीटरों को निकाला जा रहा है बाहर गांव दतौली मुगल में जगह जगह लगें हैं सिंगल फेस 10 '५ के ट्रांसफार्मर गांव के सभी मीटर अपने अपने क्षेत्र के ट्रांसफार्मर के पास लगेंगे। मीटरों को आज से ट्रांसफार्मरो के पास लगाने का काम किया गया शुरू पिछले एक महीने में अवरलोड होकर दर्जनों ट्रांसफार्मर फुकने के बाद विधुत विभाग ने उठाया बड़ा कदम। बिजली चोरी रोकने में मददगार साबित होगी विधुत विभाग की पहल एसडीओ अंकित त्यागी ने कहा बिजली चोरी करना कानुनन ओर समाजिक रुप से अपराध है किसी भी बिजली चोरी करने वालो को बक्सा नहीं जाएगा। कोई भी व्यक्ति बिजली चोरी करने का प्रयास न करें देश और समाज के हित में बिजली बचाएं और समय पर अपना बिजली का बिल जमा कराएं।इस मौके परउप खण्ड अधिकारी अंकित त्यागी कैलाशपुर व अवर अभियंता श्याम बालि शर्मा टीजी 2 तुलसी कुमार और सिद्धार्थ कुमार व लाईनमैन मौजूद रहे।

शोभायात्रा निकालकर धूमधाम से स्थापित की गई सतगुरु रविदास जी की प्रतिमा

संस्कार उजाला
सहारनपुर छुटमलपुर

छुटमलपुर. क्षेत्र के गांव हलवाना में संत शिरोमणी सतगुरु रविदास जी महाराज की भव्य प्रतिमा गांव में शोभायात्रा उपरांत मंदिर में धूमधाम से स्थापित की गई। शोभायात्रा का शुभारंभ मुख्य अतिथि भारतीय शिक्षा चैरिटेबल ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयराम गौतम प्रधान, ब्लॉक प्रमुख योगेश पुंडीर, जिला पंचायत सदस्य वार्ड नंबर 4 हंसराज गौतम व पत्रकार एसडी गौतम द्वारा संयुक्त रूप से जयकारा लगाकर किया गया। विचार रखते हुए भारतीय शिक्षा चैरिटेबल ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष व वरिष्ट समाजसेवी जयराम गौतम प्रधान ने कहा कि संत शिरोमणि सतगुरु रविदास जी महाराज की कृपा के बिना कुछ भी संभव नहीं है उनके विचारों पर चलने से ही व्यक्ति उन्नति प्राप्त कर सकता है। उन्होंने सभी से ट्रस्ट द्वारा प्रस्तावित कार्यों पर प्रकाश डालते हुए शिक्षित होने की बात कही। विशिष्ट अतिथि ब्लॉक प्रमुख योगेश पुंडीर ने कहा कि संतगुरू रविदास जी महाराज के विचार और उपदेश समाज को नई दिशा दे रहे है जिनपर चलना हम सभी का कर्तव्य है। पूर्व प्रमुख हंसराज गौतम ने कहा कि महापुरुष की कोई जाति बिरादरी नही होती है वह सर्वसमाज के हित में कार्य करते है इसलिए वह सर्वसमाज के पूजनीय है उन्होंने बाबासाहब डॉ० भीमराव अंबेडकर के जीवन से सीख लेने की बात कही। शोभायात्रा में आगे चल रही सेवादारों की सिर कलश रखे महिलाओं व नाचते गाते जाते श्रद्धालुओं की टोली ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाए रखी। अखिल भारतीय संत शिरोमणी सतगुरु रविदास मिशन से अवनेश दास, राजेंद्र दास, मांगेराम दास, राजपाल दास, दयाराम व पत्रकार एसडी गौतम समेत आदि महात्माओं द्वारा प्रतिमा प्रतिष्ठा धूमधाम से कराई गई। इस दौरान ग्राम प्रधान विक्रम सिंह, अंशुल म्युचुअल हेल्प फाउंडेशन के डायरेक्टर धर्मदास अशोक नौटियाल, ताऊ रंगीला 420, अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह, गिरधारीलाल, चंद्रभान, नेहरू, अबल सिंह, टिंकू, जगदीश प्रसाद, मोतीदास, मुकेश कुमार, अनिल कीर्तन, धर्मपाल, किशनपाल, धरेश, मुकेश कुमार, विपिन, सुनील, धीरसिंह, राजेंद्र कुमार, टीटू, प्रिंस प्रधान, इलू बर्मन, सुमित टपराना, बंटी, कमल किशोर, सतीश दास, साहिल कुमार, सागर बाईखेडी, संदीप व धूमसिंह समेत हजारों अनुयाई मौजूद रहे।

उत्तर प्रदेश राज्य कर्मचारी एसोसिएशन के नवनियुक्त पदाधिकारियो का किया कर्मचारियों ने जोरदार स्वागत

मौजूदा सरकार से ही पुरानी पेंशन बहाली की उम्मीद- धर्मेन्द्र

कर्मचारी और शिक्षक एक मंच पर मिलकर करेगे सहयोग तभी मिलेगी पुरानी पेंशन- तरुण भोला

संस्कार उजाला ब्यूरो
सहारनपुर

लोकनिर्माण विभाग के मिनिस्ट्रीयल संघ भवन में उ0 प्र0 राज्य कर्मचारी एसोसिसियन सम्बन्ध राष्ट्रीय राज्य कर्मचारी महासंघ के नव मनोनीत प्रदेश उपाध्यक्ष एव पश्चिम क्षेत्र प्रभारी धर्मेन्द्र धवलहार, सहारनपुर मण्डल प्रभारी तरुण भोला जिलाध्यक्ष सुधीर गुप्ता एवं जिलामंत्री आनंद त्यागी का विभिन्न विभागों से मौजूद कर्मचारियों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। कार्यक्रम में प्रमुख रुप से पुरानी पेंशन बहाली का मुद्दा छाया रहा व मा0 प्रधानमन्त्री से देश के लाखों कर्मचारी व शिक्षको को पुरानी पेंशन का लाभ दिया जाने का आग्रह किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सयुक्त रूप महासंघ के मण्डल अध्यक्ष सोमपाल राणा व राकेश कुमार वत्स जिला संगठन मंत्री बी एम् एस तथा संचालन तरुण भोला ने किया नवनियुक्त अध्यक्ष सुधीर गुप्ता ने बताया की कर्मचारी की जो भी समस्या होंगी तत्काल उसका निस्तारण कराया जायेगा वेतन विसंगति से लेकर आठवे वेतन आयोग सहित तमाम मुद्दों से सरकार को अवगत कराया जायेगा जिससे समय रहते कर्मचारियों को उचित लाभ मिल सके नवनियुक्त मंत्री आनंद त्यागी ने बताया की सरकार द्वारा यूपीएस का गठन किया गया है हमें उम्मीद है मौजूदा सरकार हमें ओपीएस जरूर देगी जकड़ प्रांतीय नेतृत्व मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री से मिलकर कर्मचारियों मे व्यापक रोष से सरकार को अवगत करायेगे! आज के कार्यक्रम में सोमपाल राणा मण्डल अध्यक्ष उ0 प्र0 राज्य कर्मचारी महासंघ तथा धर्मेन्द्र धवलहार प्रधान जिलाध्यक्ष महासंघ एव पश्चिम क्षेत्र उ0 प्र0 प्रभारी उ0 प्र0 राज्य कर्मचारी एसोशियन, विकाश धारिया,अरविन्द चौहान, मुकेश शर्मा, सचिन मित्तल, अरविन्द गुप्ता, मनोज रावत,धर्मबीर, मनोज रावत, नेपाल सिंह, अंकुर भटनागर,आशुतोष शर्मा, मो जमील अहमद,रणदीप पुंडीर,संदीप चौहान, रजनी किशोर, राजनिशा, विकास गुप्ता, पुष्पेंद्र, नवनीत सैनी, दीपक धीमान, मनोज धीमान ,अमित सैनी , विनोद टोकस, मदन राणा आदि सभी कर्मचारियों ने नव मनोनीत समस्त पदाधिकारियों को बधाई शुभकामनाये प्रेषित की ।

जडौड़ा पांडा मे 23वर्षीय युवती की साप के काटने से मौत दो महीने बाद होनी थी शादी

संस्कार उजाला
बडगांव सहारनपुर

बडगांव थाना क्षेत्र के जडौदा पांडा गांव मे 23वर्षीय युवती की साप के काटने से मौत हो गई है दो महीने बाद ही लडकी की शादी होनी थी लेकिन शादी की तैयारियो के बीच ही घर में मातम छा गया साप के काटने के बाद पीड़ित परिवार बच्ची को सरकारी अस्पताल सहारनपुर ले गया । लेकिन देर होने के कारण उसकी मौत हो गई अगर समय पर ईलाज मिलता तो शायद उस बेटी की जान बच सकती थी पीड़ित की मां ने बताया कि हम गांव मे रहते हैं और रात मे उनकी बेटी को साप ने काट लिया था और उसकी मौत हो गई हैं जडौद पांडा गांव मे या उसके आस पास कोई चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नही है जबकि गांव मे सीएचसी अस्पताल बना हुआ है मगर उसमे कोई भी ऐसी सुविधा उपलब्ध नही है यह अस्पताल सफेद हाथी साबित हो रहा है

सांसद इमरान मसूद के प्रयास से राष्ट्रीय राजमार्ग शुल्क 2008 के नियमों में बदलाव किया गया

संस्कार उजाला ब्यूरो

सहारनपुर लोकसभा सांसद इमरान मसूद जी के प्रयास से राष्ट्रीय राजमार्ग शुल्क 2008 के नियमों में बदलाव किया गया है, जिसके अनुसार ऋहरर ग्लोबल नेवीगेशन सेटेलाइट सिस्टम से लैस वाहनों को राष्ट्रीय राजमार्ग पर 20 किलोमीटर तक कोई शुल्क नहीं देना होगा सहारनपुर लोकसभा सांसद इमरान मसूद जी ने संसद में प्रश्न उठाया की राष्ट्रीय राजमार्गों पर बने टोल प्लाजा की बेतहाशा वसूली के खिलाफ शहरों से लगते हुए टोल प्लाजाओं पर वसूली के खिलाफ आवाज उठाई, जिसमे सरसावा टोल प्लाजा पर सहारनपुर वासियों को यमुनानगर जाने के लिए टोल देना पड़ता था। सांसद इमरान मसूद जी ने सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से राष्ट्रीय राजमार्ग पर जीपीएस टेक्नोलॉजी का प्रयोग करने के लिए प्रश्न किया ।जिसमे माननीय सांसद के प्रश्न का जवाब देते हुए नियमों में बदलाव किया गया, अब ऋहरर ग्लोबल नेवीगेशन सेटेलाइट सिस्टम से लैस वाहनों को 20 किलोमीटर तक कोई शुल्क नहीं, यात्रा की दूरी 20 किलोमीटर से अधिक होने पर ही वाहन से नेवीगेशन सिस्टम से ट्रैक करते हुए टोल लिया जाया करेगायह बदलाव सहारनपुर वासियों के लिए एक बड़ी राहत हैसांसद इमरान मसूद जी के प्रयास से यह बदलाव संभव हुआ,उनके प्रयास से सहारनपुर वासियों को अब कम टोल देना होगा। यह बदलाव राष्ट्रीय राजमार्ग शुल्क 2008 के नियमों में किया गया है अब वाहनों को 20 किलोमीटर तक कोई शुल्क नहीं देना होगा

संक्षिप्त डायरी

नहीं थम रहा रील बनाने का सिल सला आए दिन हो रही बड़ी घटनाएं

रील बनाने के चक्कर में ट्रेन से कटकर एक ही परिवार के तीन लोगों की हुई मौत।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।
लखनऊ- पीलीभीत रेल प्रखंड पर बुधवार सुबह रील बनाने के चक्कर में पूरा परिवार मौत के मुँह में समा गया। हादसे में ट्रेन से कटकर पति, पत्नी तथा ढाई साल के बच्चे की दर्दनाक मौत हो गई। सीतापुर बार्डर के पास जनपद एवं थाना खीरी से निकली शारदा सहायक ब्रांच नहर के रेलवे पुल संख्या 156,किमी पोल 117 के पास रील बनाते समय पति पत्नी एवं बच्चा ट्रेन की चपेट में आ गये और मौके पर ही तीनों की दर्द नाक मृत्यु हो गई। कस्बा एवं थाना क्षेत्र लहरपुर के मोहल्ला शेख टोला निवासी छब्बिस वर्षीय मोहम्मद अहमद पुत्र रहमान अपनी चौबिस वर्षीय पत्नी नाजमीन व ढ़ाई साल के पुत्र अकरम के साथ थाना क्षेत्र हरगांव के ग्राम क्योंटी कलां में मोहर्रम का चालीसवां मेला देखने सोमवार को अपने फूफा रहमत अली पुत्र अब्बास के यहाँ बाइक से आए थे। मंगलवार को मेले के समापन के बाद वह गांव में अपने फूफा के यहां ही रुक गये तथा बुधवार सुबह लगभग नौ बजे परिवार सहित मृतक नहर की तरफ टहलने निकल गये तथा शारदा सहायक खीरी ब्रांच नहर के पुल संख्या 156 के बीचो बीच पहुंचकर रील बनाने लगे। तभी हरगांव स्टेशन से लखीमपुर की तरफ जाने वाली लखनऊ- पीलीभीत पैसेंजर ट्रेन संख्या 05086 सुबह 9 बजकर 50 मिनट पर छूटी। लगभग 9 .55 पर ट्रेन घटना स्थल पर पहुंच गई ट्रेन को देखते ही आसपास के खेतों में काम कर रहे ग्रामीणों ने शोर मचाना शुरू कर दिया शोर सुनकर पति पत्नी अपने बच्चे को लेकर ट्रेन के आगे दौड़ने लगे और ट्रेन की चपेट में आकर तीनों की दर्द नाक मृत्यु हो गई। सूचना पर पहुंची रेलवे पुलिस बल व खीरी पुलिस ने तीनों शवों का पंचायत नामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए लखीमपुर भेज दिया।

विभिन्न गांवो में स्वास्थ्य शिविरों का किया गया आयोजन

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय। जिले के सांडा सकरन नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में भारी संख्या में लोग वायरल फीवर के चलते बुखार से पीड़ित सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सहित झोलाछाप,डॉक्टरों से इलाज करा रहे हैं। क्षेत्र में चल रहे वायरल फीवर डेंगू,मलेरिया,आदि रोगों पर प्रभावी अंकुश लगाने के उद्देश्य से मंगल वार को सांडा स्वास्थ्य केन्द्र अधीक्षक डॉ०अनिल कुमार सचान की स्वास्थ्य टीम द्वारा लगाए गए स्वास्थ्य शिविर ग्राम पंचायत जल्ला बाद के ग्राम बगहाढाक में डॉ० आंदी अंत लैब टेक्नी शियन राजेन्द्र के द्वारा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में पचपन मरीजों के स्वास्थ्य की जांच की गई व बीस मरीजों की स्लाइड बनाई गई स्वास्थ्य शिविर में आए भारी संख्या में मरीजों को वायरल फीवर व मलेरिया जैसी बीमारियों से बचाव के उपाय बताएं गए।वहीं ग्राम पंचायत खजूरा के ग्राम मदनाघाट में डॉ निहांन बानो लैब टेक्नी शियन शिवेंद्र सिंह की टीम द्वारा एक सौ सात मरीजों की स्वास्थ्य की जांच की गई व पन्द्रह मरीजों की स्लाइड बनाकर जांच की गई व सभी मरीजों को दवा का वितरण किया गया। क्या बोले अधीक्षक इस सम्बन्ध में सांडा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के अधीक्षक डॉ अनिल कुमार सचान से बात कि गई तो उन्होंने बताया कि क्षेत्र में चल रहे वायरल फीवर से प्रभावित गांवों में लगातार स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें डॉक्टरों की टीम द्वारा मरीजों के स्वास्थ्य की जांच कर दवा का वितरण कराया जा रहा है।

प्रधान मंत्री आवास प्लस सूची के नए सर्वे को लेकर ब्लाक के सभागार में हुई बैठक ।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय। जिले के मिश्रिख विकास खण्ड के सभागार में आज बुधवार को क्षेत्र पंचायत सदस्यों व ग्राम प्रधानों की संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। आयोजित बैठक की अध्यक्षता खण्ड विकास अधिकारी अवध प्रताप सिंह ने की।आयोजित बैठक में प्रधान मंत्री ग्रामीण आवास प्लस सर्वे तथा पात्रता सूची बनाने व पात्र लोगों को जोड़ने की जानकारी दी गई। इस बैठक में खण्ड विकास अधिकारी ने बताया कि आवास वितरण के लिए चार वर्षीय कार्ययोजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है।यह पात्रता सूची वित्तीय वर्ष 2024 -25 से 2028- 29 के लिए बनाई जा रही है।पात्रता सूची बनाने में पहले से जारी तेरह बिन्दुओ को समाप्त कर दस बिन्दुओ में कर दिया गया है। जिस व्यक्ति के पास चार पहिया वाहन,चार पहिया कृषि यंत्र,पचास हजार का किसान क्रेडिट कार्ड धारक व जिनके परिवार में कोई व्यक्ति सरकारी नौकरी कर रहा है,वह परिवार पात्र नहीं होगा।इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति पन्द्रह हजार रुपए प्रति माह मानदेय या नौकरी पा रहा है। वह भी पात्रता सूची में शामिल नहीं होगा।जिस व्यक्ति के पास ढ़ाई एकड़ से अधिक सिंचित कृषि भूमि है ऐसे परिवार भी सरकारी आवास पाने के हकदार नहीं हैं। आयोजित बैठक में एडीओ पंचायत ब्रेम कुमार एडीओ समाज कल्याण अमिताभ वर्मा,ग्राम पंचायत सचिव अमित चतुर्वेदी,धीरेन्द्र कुमार नंद,हरीश कुमार,ग्राम प्रधान व ब्लाक प्रधान संघ अध्यक्ष रुक्मिणी देवी,प्रधान प्रतिनिधि राजन मिश्र,धर्मेन्द्र सिंह,रामपाल,प्रधान प्रति निधि अनुराग मिश्र,सहित सभी क्षेत्र पंचायत सदस्य व ग्राम प्रधान उपस्थित रहे।

यूपीएस/एनपीएस निजी करण भारत छोड़ो ब्लॉक संगोष्ठी हुई सम्पन्न।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय। यूपीएस/ एनपी एस निजीकरण भारत छोड़ो ब्लॉक संगोष्ठी का आयोजन अटेवा ब्लॉक इकाई मछरेहटा द्वारा चंटूलाल राम प्यारी मॉडर्न पब्लिक स्कूल मिजार्पुर उत्तरी में किया गया। इस संगोष्ठी में जिला संयोजक आरके अहिरवार अवनीश कुमार जिला कोषाध्यक्ष, एसपी सिंह जिला मंत्री अटेवा,विनय हंस जिला सहसंयोजक अटेवा, श्रीमती शशि कला जिला महिला उपाध्यक्ष,हर विजय गौतम अध्यक्ष अटेवा ब्लॉक मिश्रिख राज किशोर गौतम पंचायती राज विभाग ब्लॉक मछरेहटा ने उपस्थित होकर संगोष्ठी को सम्बोधित किया, एवं ओपीएस की पूर्ण बहाली के लिए सदस्य बनने एवं एकजुट होकर संघर्ष करने का आवाहन किया। इस संगोष्ठी में विजय कुमार श्रीवास्तव जिला संयोजक टीएससीटी, अंजनी शुक्ला अध्यक्ष पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ एवं प्रवक्ता अटेवा,अरविंद कुमार सिंह जिला सह संयोजक अटेवा, मनोज कुमार वर्मा मंत्री एवं जिला आईटी सेल प्रभारी अटेवा, नीरज कुमार शुक्ल जिला मंत्री अटेवा,छोटेलाल आनंद जिला संगठन मंत्री अटेवा, दीपक कुमार वर्मा ब्लॉक संयोजक मछरेहटा अटेवा, लाखन सिंह ब्लॉक मंत्री अटेवा मछरेहटा अमित सिंह ब्लॉक कोषाध्यक्ष मछरेहटा अटेवा ने अपने-अपने विचार रखें। इस अवसर पर ब्लॉक संरक्षक पीएसएस मछरेहटा अखिलेश कुमार त्रिवेदी एवं उपाध्यक्ष पीएसएस मुकेश दीक्षित,पूर्व अध्यक्ष पीएस एस संदीप कुमार यादव ने अपने विचारों से सदन को सम्बोधित करते हुए ओपी एस की बहाली के लिए संघर्ष करने का आवाह्न किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिनेश मिश्रा अध्यक्ष पीएस एस मछरेहटा द्वारा की गई। इस अवसर पर मछरेहटा ब्लाक के आरएसएम अध्यक्ष देवर्षि प्रताप सिंह , कामिनी जिला सह संयोजक,बेसिक शिक्षा के मछरेहटा ब्लाक के प्रवेश शर्मा,लोकेंद्र कटारा,रणजंय कुमार सिंह,प्रधानाचार्य चंटूलाल रामप्यारी मॉडर्न पब्लिक स्कूल मिजार्पुर उत्तरी मछरेहटा सहित सहित ब्लॉक मछरेहटा के अनेकों शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

विद्युत 33/11 के0बी0 उप केंद्र लहरपुर ग्रामीण व टाउन क्षेत्र में 10+10 एम0बी0ए0 क्षमता ब्रद्धि के लिए अधिशाषी अभियन्ता विसवां ने उच्च अधिकारियों को कई बार लिखा पत्र अभी तक नहीं लिया संज्ञान उपभोक्ता अति से ज्यादा परेशान

संस्कार उजाला
सीतापुर की तहसील लहरपुर के अंतर्गत विद्युत 33/11 के0बी0 उप केन्द्र लहरपुर में ग्रामीण क्षेत्र में उपभोक्ताओं को 10 घंटे ही मिल रही बिजली। इस समस्या को सैकड़ों बार अधिशाषी अभियन्ता विसवां से उपभोक्ताओं ने सिकायत की और मीडिया से भी रूबरू हुए खबरें भी प्रकाशित हुई जिस पर अधिशाषी अभियन्ता विद्युत वितरण खण्ड विसवां ने अपने उच्च अधिकारी,अधीक्षण अभियन्ता विद्युत वितरण मण्डल सुदामापुरी सीतापुर को कई बार पत्र लिखकर अवगत कराया जिनका, पत्रांक,6465 दिनांक 24/03/2023 पत्रांक 1094 दिनांक 15/05/2023 पत्रांक 2242 दिनांक 13/06/2023 पत्रांक 2739 दिनांक 27/06/2023 पत्रांक 785 दिनांक 22/02/2024 पत्रांक 268 29/05/2024 पत्रांक 2212 दिनांक 04/06/2024 पत्रांक 2744 दिनांक 22/07/2024 के पत्र में लखनऊ के उच्च अधिकारियों को भी अवगत कराने के बाद अभी तक उप केन्द्र लहरपुर की विद्युत क्षमता ब्रद्धि के लिए लखनऊ तक उच्च अधिकारियों के

Office-Executive Engineer
Vidyut Vitran Khand- Biswan
District- Sitapur
Madhyanchal Vidyut Vitran Nigam Ltd..
Email: eddbiswan1017@gmail.com

कार्यालय-अधिशाषी अभियन्ता
विद्युत वितरण खण्ड-बिसवां
जनपद-सीतापुर
मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लि०

पत्रांक:- 2744 /वि०वि०ख०बि०/सी०/ दिनांक:- 22.07.2024

विषय:- बिजनेस प्लान 2023-24 योजना में स्वीकृत पावर परिवर्तकों को प्राथमिकता पर आवंटन कराये जाने के सम्बन्ध में।

महत्वपूर्ण/अतिआवश्यक

अधीक्षण अभियन्ता,
विद्युत वितरण मण्डल, सुदामापुरी,
सीतापुर।

विषयगत प्रकरण में उपखण्ड अधिकारी विद्युत वितरण उपखण्ड के कार्यालय पत्रांक 268 दिनांक 29.05.2024 (छायाप्रति संलग्न) एवं इस कार्यालय पत्रांक सं:- 2212 दिनांक:- 04.06.2024, पत्रांक सं:- 785 दिनांक:- 22.02.2024, पत्रांक सं:- 6465 दिनांक:- 24.03.2023 पत्रांक सं0-1094 दिनांक:- 15.05.2023 एवं पत्रांक सं0-2242 दिनांक:- 13.06.2023 तथा पत्रांक सं:- 2739 दिनांक:- 27.06.2023 (प्रति संलग्न) का सन्दर्भ ग्रहण करने की कृपा करें। उक्त पत्रों द्वारा अवगत कराया गया था कि 33/11 के0वी0 उपकेन्द्र लहरपुर (ग्रामीण) तथा 33/11 के0वी0 उपकेन्द्र लहरपुर (टाउन) बिजनेस प्लान में स्वीकृत है। जिसकी प्राथमिकतावार क्षमतावृद्धि किया जाना अतिआवश्यक है।

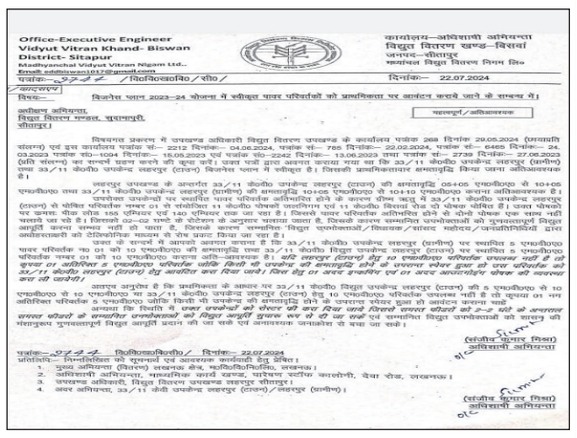

लहरपुर उपखण्ड के अन्तर्गत 33/11 के0वी0 उपकेन्द्र लहरपुर (टाउन) की क्षमतावृद्धि 05+05 एम0वी0ए0 से 10+05 एम0वी0ए0 तथा 33/11 के0वी0 उपकेन्द्र लहरपुर (ग्रामीण) की क्षमतावृद्धि 10+05 एम0वी0ए0 से 10+10 एम0वी0ए0 कराना अतिआवश्यक है। उपरोक्त उपकेन्द्रों पर स्थापित पावर परिवर्तक अतिभारित होने के कारण ग्रीष्म ऋतु में 33/11 के0वी0 उपकेन्द्र लहरपुर (टाउन) से पोषित परिवर्तक नम्बर 01 से संयोजित 11 के0वी0 पोषकों जलनिगम एवं 11 के0वी0 बिसवां रोड दो पोषक पोषित हैं। उक्त पोषकों पर क्रमशः पीक लोड 155 एम्पियर एवं 140 एम्पियर तक जा रहा है। जिससे पावर परिवर्तक अतिभारित होने से दोनो पोषक एक साथ नहीं चलाये जा रहे है। जिसको 02-02 घण्टे के रोटेशन के अनुसार चलाया जाता है, जिसके कारण सम्मानित उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति करना सम्भव नहीं हो पाता है, जिसके कारण सम्मानित विद्युत उपभोक्ताओं/विधायक/सांसद महोदय/जनप्रतिनिधियों द्वारा अधोहस्ताक्षरी को टेलिफोनिक माध्यम से रोष प्रकट किया जा रहा है।

उक्त के सन्दर्भ में आपको अवगत कराना है कि 33/11 के0वी0 उपकेन्द्र लहरपुर (ग्रामीण) पर स्थापित 5 एम0वी0ए0 पावर परिवर्तक न0 01 को 10 एम0वी0ए0 की क्षमतावृद्धि तथा 33/11 के0वी0 विद्युत उपकेन्द्र लहरपुर (टाउन) पर स्थापित 5 एम0वी0ए0 परिवर्तक नम्बर 01 को 10 एम0वी0ए0 कराना अति-आवश्यक है। *यदि लहरपुर (टाउन) हेतु 10 एम0वी0ए0 परिवर्तक उपलब्ध नहीं है तो कृपया 01 अतिरिक्त 5 एम0वी0ए0 परिवर्तक जोकि किसी भी उपकेन्द्र की क्षमतावृद्धि होने के उपरान्त स्पेयर हुआ हो उस परिवर्तक को 33/11 के0वी0 लहरपुर (टाउन) हेतु आवंटित करा दिया जाये। जिस हेतु 01 अदद इनकमिंग एवं 01 अदद आउटगोईग पोषक की व्यवस्था करा ली जायेगी।*

अतएव अनुरोध है कि प्राथमिकता के आधार पर 33/11 के0वी0 विद्युत उपकेन्द्र लहरपुर (टाउन) की 5 एम0वी0ए0 से 10 एम0वी0ए0 से 10 एम0वी0ए0 या 33/11 के0वी0 उपकेन्द्र लहरपुर (टाउन) हेतु 10 एम0वी0ए0 परिवर्तक उपलब्ध नहीं है तो कृपया 01 नग अतिरिक्त परिवर्तक 5 एम0वी0ए0 जोकि किसी भी उपकेन्द्र की क्षमतावृद्धि होने के उपरान्त स्पेयर हुआ हो आवंटन कराना चाहें अन्यथा कि स्थिति में *उक्त उपकेन्द्रों को रोस्टर फ्री करा दिया जाये जिससे समस्त फीडरों को 2-2 घंटे के अन्तराल समस्त फीडरों के सम्मानित उपभोक्ताओं को विद्युत आपूर्ति सुचारू रूप से दी जा सकें* एवं सम्मानित विद्युत उपभोक्ताओं को शासन की मंशानुरूप गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति प्रदान की जा सके एवं अनावश्यक जनाक्रोश से बचा जा सके।

(संजीव कुमार मिश्रा)
अधिशाषी अभियन्ता

पत्रांक:- 2744 वि0वि0ख0बि0सी0/ दिनांक:- 22.07.2024
प्रतिलिपि:- निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।
1. मुख्य अभियन्ता (वितरण) लखनऊ क्षेत्र, म0वि0वि0नि0लि0, लखनऊ।
2. अधिशाषी अभियन्ता, माध्यमिक कार्य खण्ड, पारेषण स्टॉफ कालोनी, देवा रोड, लखनऊ।
3. उपखण्ड अधिकारी, विद्युत वितरण उपखण्ड लहरपुर सीतापुर।
4. अवर अभियन्ता, 33/11 केवी उपकेन्द्र लहरपुर (टाउन)/लहरपुर (ग्रामीण)।

(संजीव कुमार मिश्रा)
अधिशाषी अभियन्ता

कान में जूं तक नहीं रेंगा।आपको बताते चलें जबकि शासन की मन्सा के अनुसार बिजली टाउन क्षेत्र में 24 घंटे व ग्रामीण क्षेत्र में 18 घंटे देने का प्रावधान है फिर भी विद्युत उप केन्द्र लहरपुर में, 5+5 एम0बी0ए0 की क्षमता होने के कारण ग्रामीण व टाउन के उपभोक्ताओं को समय से भरपूर बिजली न मिल पाने से उपभोक्ता परेशान हैं शासन की मन्सा के अनुसार बिजली पाने से वंचित हैं इसीलिए क्षमता ब्रद्धि बढ़ाने के लिए 10+10 एम0बी0ए0 की क्षमता अति आवश्यक है जिससे उपभोक्ताओं को शासन का दिया हुआ लाभ मिल सके। ऐसी स्थित में अधीक्षण अभियन्ता विद्युत वितरण मण्डल सुदामापुरी सीतापुर बिजली न मिलने से परेशान उपभोक्ताओं की समस्या का समाधान तत्काल प्रभाव से प्राथमिकता पर कराएं। अब देखना है खबर प्रकाशित होने के बाद उपभोक्ताओं को समय से भरपूर बिजली न मिलने की समस्या का समाधान होता है या फिर उपभोक्ताओं के लिए ऐसी भीषण समस्या जैसी की वैसी रहती है।

यूपीएस/एनपीएस निजी करण भारत छोड़ो ब्लॉक संगोष्ठी हुई सम्पन्न।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।
यूपीएस/ एनपी एस निजीकरण भारत छोड़ो ब्लॉक संगोष्ठी का आयोजन अटेवा ब्लॉक इकाई मछरेहटा द्वारा चंटूलाल राम प्यारी मॉडर्न पब्लिक स्कूल मिजार्पुर उत्तरी में किया गया। इस संगोष्ठी में जिला संयोजक आरके अहिरवार अवनीश कुमार जिला कोषाध्यक्ष, एसपी सिंह जिला मंत्री अटेवा,विनय हंस जिला सहसंयोजक अटेवा, श्रीमती शशि कला जिला महिला उपाध्यक्ष,हर विजय गौतम अध्यक्ष अटेवा ब्लॉक मिश्रिख राज किशोर गौतम पंचायती राज विभाग ब्लॉक मछरेहटा ने उपस्थित होकर संगोष्ठी को सम्बोधित किया, एवं ओपीएस की पूर्ण बहाली के लिए सदस्य बनने एवं एकजुट होकर संघर्ष करने का आवाहन किया। इस संगोष्ठी में विजय कुमार श्रीवास्तव जिला संयोजक टीएससीटी, अंजनी शुक्ला अध्यक्ष पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ एवं प्रवक्ता अटेवा,अरविंद कुमार सिंह जिला सह संयोजक अटेवा, मनोज कुमार वर्मा मंत्री एवं जिला आईटी सेल प्रभारी अटेवा, नीरज कुमार शुक्ल जिला मंत्री अटेवा,छोटेलाल आनंद जिला संगठन मंत्री अटेवा, दीपक कुमार वर्मा ब्लॉक संयोजक मछरेहटा अटेवा, लाखन सिंह ब्लॉक मंत्री अटेवा मछरेहटा अमित सिंह ब्लॉक कोषाध्यक्ष मछरेहटा अटेवा ने अपने-अपने विचार रखें। इस अवसर पर ब्लॉक संरक्षक पीएसएस मछरेहटा अखिलेश कुमार त्रिवेदी एवं उपाध्यक्ष पीएसएस मुकेश दीक्षित,पूर्व अध्यक्ष पीएस एस संदीप कुमार यादव ने अपने विचारों से सदन को सम्बोधित करते हुए ओपी एस की बहाली के लिए संघर्ष करने का आवाह्न किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिनेश मिश्रा अध्यक्ष पीएस एस मछरेहटा द्वारा की गई। इस अवसर पर मछरेहटा ब्लाक के आरएसएम अध्यक्ष देवर्षि प्रताप सिंह , कामिनी जिला सह संयोजक,बेसिक शिक्षा के मछरेहटा ब्लाक के प्रवेश शर्मा,लोकेंद्र कटारा,रणजंय कुमार सिंह,प्रधानाचार्य चंटूलाल रामप्यारी मॉडर्न पब्लिक स्कूल मिजार्पुर उत्तरी मछरेहटा सहित सहित ब्लॉक मछरेहटा के अनेकों शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

जंगली जानवर के हमले के बाद ग्रामीणों में दहशत का माहौल। ,वन विभाग लोगों को कर रहा जागरूक।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।
जिले की लहरपुर कोतवाली क्षेत्र की भदफर चौकी के ग्राम बेलवा डिंगरा में जंगली जानवर के द्वारा पडिया का शिकार किए जाने के बाद गांव में दहशत का माहौल बना हुआ है। वन विभाग की टीम के द्वारा कांबिंग कर ग्रामीणों को जागरूक किया जा रहा है। जानकारी के अनुसार ग्राम बेलवा डिगुरां निवासी बंशी लाल पुत्र रामलाल के दरवाजे पर खूंटे से पांच महीने की भैंस की पड़िया बंधी थी,जिसे अज्ञात जंगली जानवर के द्वारा मंगलवार देर रात गन्ने के खेत में घसीट कर ले जाकर उसे निवाला बनाया गया। प्रातः गृह स्वामी के जागने पर पडिया को खूंटे से गायब देखकर उसके घसीटने के निशानों को देखते हुए गन्ने के खेत तक पहुंचा।जहां पडिया का खाया हुआ शव देखकर ग्रामीणों को सूचना दी। मौके पर पहुंचे भारी संख्या में ग्रामीणों ने लाठी डंडों से लैस होकर अज्ञात जंगली जानवर की तलाश की, लेकिन उसका कुछ भी अता पता नहीं चल सका, जिस पर ग्रामीणों के द्वारा घटना की जानकारी वन विभाग को दी गई। मौके पर पहुंची वन विभाग की टीम में वन दरोगा अरविन्द गिरि,ओम प्रकाश, वाचर गजराज,लालाराम रमेश कुमार ने ग्रामीणों के साथ कांबिंग कर लोगों को जागरूक करते हुए बचाव के लिए खेतों में लाठी डंडों सहित समूह में जाने का सुझाव दिया।

ओवरलोड भूसे से भरा ट्रक पलटा नौ मजदूर घायल

संस्कार उजाला
खुटार। बीती देर शाम ट्रक में भूसा भरकर मुरादाबाद जा रहा एक ट्रक खुटार पूरनपुर हाईवे पर अनियंत्रित होकर पलट गया जिससे ट्रक में बैठे नौ मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंची 108 एंबुलेंस की गाड़ियों से सभी घायल मजदूरों को खुटार के सरकारी अस्पताल लाया गया।जहां डॉक्टर ने सभी घायलों का प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी।जनपद पीलीभीत कोतवाली पूरनपुर के गांव जाट फिरोजपुर में रहने वाले रमेश कुमार, गंगाराम, धर्मपाल, लाला राम, रामकृपाल, वीरेंद्र कुमार, तिलक राम, हरि शंकर, सुरजीत राठौर,आदि मजदूर ट्रक पर थाना बंडा के गांव सुनासर से भूसा ट्रक में भरवाने आए थे जहां से ट्रक भूसे से लोड कर काशीपुर उत्तराखंड जा रहा था। तभी रास्ते में खुटार पूरनपुर स्टेट हाईवे पर गांव पुनौती मोड़ के पास लौहंगापुर जंगल में अचानक गड्ढा बचाने के चक्कर में ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया।जिससे ट्रक पर सवार नौ मजदूर गम्भीर रूप से घायल हो गए।हादसा होते देख मौके पर तमाम लोग एकत्रित हो गए लोगों ने हादसे की सूचना खुटार पुलिस एवं 108 एंबुलेंस कर्मियों को दी खबर मिलते ही 108 एम्बुलेंस के पायलट रामेंद्र दुबे, ईएमटी कीरत सिंह आनन फानन में 108 व 102 की गाड़ियां लेकर मौके पर पहुंचे और सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र खुटार पर भर्ती कराया जहां सभी का उपचार चल रहा है खबर मिलते ही मजदूरों के परिजन भी अस्पताल पहुंच गए।

शरदकालीन गन्ना बुवाई का हुआ शुभारंभ।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।
जिले की प्रतिष्ठित चीनी मिल अवध शुगर एण्ड एनर्जी लि०, हर गांव की ओर से शरद कालीन गन्ना बुवाई सत्र का शुभारंभ अपने गंजरी क्षेत्र से किया गया। दिनांक 11सितम्बर 2024 को अवध शुगर एण्ड एनर्जी लि०,हरगांव चीनी मिल के जोन गांजर क्षेत्र के क्रय केन्द्र तम्बौर के ग्राम तम्बौर में किसान तीर्थराज वर्मा के यहां विधि विधान द्वारा पूजन अर्चन के उपरान्त चीनी मिल के सहायक गन्ना प्रबंधक शिवकुमार पाल के द्वारा फीता काटकर गन्ना बुवाई का शुभारम्भ किया गया। इस मौके पर क्षेत्र के सम्मानित किसानों को सम्बोधित करते हुए शिव कुमार पाल ने बताया कि प्रजाति को 0118 एवं उङ्क 15023 की ट्रेंच विधि द्वारा ही चार फिट

पर गन्ना बीज उपचार कर बुवाई करवाऐं,दवा चीनी मिल में अनुदानित दर पर उपलब्ध है। ट्राइकोडर्मा द्वारा मिट्टी शोधन कर के ही बुवाई करें साथ-साथ किसानों को बताया कि इस समय गन्ना बधाई कर अधिक उत्पादन कर लाभ कमाया जा सकता है व गन्ना गिरने से बचाया जा सकता है। गन्ना गिरने से किसानों का तीस से पचास प्रतिशत तक हानि उठानी पड़ती है गन्ने की बंधाई करने के बाद इससे बचा जा सकता है।सभी किसान भाई जो गन्ना खड़ा है उसमें मिट्टी चढ़ाई कर गन्ना बंधाई अवश्य करा लें। समस्त किसानों को सम्बोधित करते हुए सहायक महाप्रबंधक गन्ना शिवकुमार पाल ने बताया कि चीनी मिल के अधिशाषी उपाध्यक्ष गन्ना शरद सिंह ने अपने संदेश में कहा है कि समस्त किसान भाई ङ्क 0118 के साथ साथ ङ्क 15023 प्रजाति की बुवाई कर क्षेत्रफल बढ़ाएं एवं संस्तुति प्रजातियों की शरद काल में बुवाई कर सह फसल का अधिक उत्पादन कर लाभ कमा सकते हैं एवं अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं। लैब टेस्ट के अनुसार उर्वरकों का संतुलित मात्रा में प्रयोग करें (एस एस पी, यूरिया एव पोटश) एवं जड़ वेधक कीट के लिए पृथ्वी गोल्ड को खाद में मिलाकर कूड़ में प्रयोग अवश्य करें एवं खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए हरी खाद का प्रयोग अवश्य करें। उन्होंने यह भी बताया कि चीनी मिल में गन्ना बुवाई यंत्र अनुदानित दर पर जैसे ट्रेंच प्लांटर ऑटोमेटिक प्लांटर कल्टीवेटर मिट्टी चढ़ाई यंत्र स्प्रे मशीन आदि उपलब्ध है जिन किसानों को चाहिए वह अपने क्षेत्रीय अधिकारी एवं सुपरवाइजर को नोट अवश्य करा दें। इस मौके पर चीनी मिल के अधिकारी एवं कर्मचारी प्रबंधक गन्ना एवं गन्ना सुपरवाइजर सरोज यादव संदीप पाल दिवाकर एवं प्रगतिशील किसान अवध नरेश सिंह व तमाम किसान उपस्थित रहे।

पत्रकार एकता संघ उत्तर प्रदेश महामंत्री नियुक्त किये गये संतोष कुमार शर्मा।

बाराबंकी फतेहपुर तहसील अध्यक्ष बने मोहम्मद अजीम

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय। पत्रकार एकता संघ जो आज उत्तर प्रदेश सहित आठ राज्यों में कार्यरत हैं इतना ही नहीं संगठन के पदाधिकारियों द्वारा पीड़ित पत्रकारो के सैकड़ों मामलों का निस्तारण भी शासन प्रशासन के सहयोग से कराया जा चुका है। बैठक के दौरान आज दिनांक 11सितम्बर 2024 को पत्रकारिता जगत में पन्द्रह वर्षीय अनुभवी योग्य सन्तोष कुमार शर्मा को प्रदेश महामंत्री उत्तर प्रदेश के पद पर संस्थापक जुनेद सानी राष्ट्रीय अध्यक्ष केडी सिंह राष्ट्रीय प्रभारी डीपी गुप्ता एडवोकेट राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार रघुराम सिंदूर प्रदेश प्रभारी दिनेश दीक्षित की सहमति पर नियुक्त किया गया है। नवनियुक्त प्रदेश महामंत्री ने पूर्ण रुप से संगठन को आगे बढ़ाने व मजबूती प्रदान करने के लिए सहयोग करने की बात कही। और उनसे अपेक्षा की गई कि कहीं भी संगठन के पदाधिकारियों की किसी प्रकार से समस्या उत्पन्न होती है तो चौबिस घंटे उसके लिए तत्पर रहकर संगठन को मजबूत करना ही पहली प्राथमिकता होगी। वहीं बाराबंकी जनपद की तहसील फतेहपुर से मोहम्मद अजीम को तहसील अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। नवनियुक्त पदाधिकारियों पत्रकार एकता संघ के संगठन मंत्री सुनील चौरसिया, प्रदेश मंत्री अनुरुद्ध कुमार वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष दिनेश कुमार त्रिपाठी, मीडिया प्रभारी अमित शुक्ला,मण्डल मंत्री राकेश पाण्डेय ने पत्रकार एकता संघ के राष्ट्रीय नेतृत्व को बधाई देने के साथ-साथ सभी नव नियुक्त पदाधिकारियों को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की, कि संगठन की पहचान कार्यों से होती है और नवनियुक्त पदाधिकारी अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए संगठन को बुलंदियों तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। आगे कहा कि पत्रकार एकता संघ वह संगठन है जो चौबिस घंटे पत्रकार हितों के लिए समर्पित रहता है।

वायरल फीवर एवं संचारी रोग से बचाव के लिए बैठक कर निकली गई रैली।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।
जिले में चल रहे वायरल फीवर एवं संचारी रोगों से बचाव के लिए ग्राम वासियों को जागरूक करने के उद्देश्य से जिले की तहसील लहरपुर क्षेत्र के एक प्राथमिक विद्यालय में बैठक कर जागरूकता रैली निकल गई जागरूकता रैली के माध्यम से लोगों को रोगों से बचाव के लिए जागरूक किया गया। जानकारी के अनुसार जिले की तहसील लहरपुर क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय ईरापुर में बैठक कर जागरूकता रैली निकालकर लोगों को जागरूक किया गया। बैठक में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए ए एन एम जय देवी ने कहा कि कभी भी किसी भी बीमारी को हल्के में नहीं लेना चाहिए किसी तरह का बुखार होने पर डॉक्टर को दिखाना चाहिए व संचारी रोगों से बचाव के लिए साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें और आस पास पानी न जमा होने दें,रात में मच्छर दानी लगाकर कर सोएं व मच्छर भगाने के लिए नीम की पत्तियों का प्रयोग करें। बैठक के समय ग्राम प्रधान रामनरेश वर्मा ने कहा कि कचरा निर्धारित स्थान पर ही डालें इधर उधर कूड़ा कचरा न डालें इससे गंदगी फैलती है और बीमारियां होती हैं। संकुल शिक्षक अनवर अली ने अभिभावकों का आवाह्न किया कि विद्यालय में बच्चों को साबुन से हाथ साफ करने के लिए प्रेरित किया जाता है घर में भी बच्चों को साबुन से हाथ धोने के लिए जोर देना चाहिए क्योंकि बचपन में जो आदतें पड़ जाती हैं वह पूरे जीवन भर बनी रहती है।

आंगनबाड़ी कार्यकत्री प्रेमवती ने ताजा भोजन करने पर जोर दिया। आशा बहू ने टीकाकरण के महत्व पर चर्चा की। बैठक के बाद छात्रों और अभिभावकों ने संचारी रोगों से बचाव के लिए रैली निकाली जिसे शिक्षक सरोज कुमार वर्मा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में शामिल लोगों ने गांव का भ्रमण किया। इस मौके पर शिक्षक उमेश चन्द्र वर्मा,रामावती वर्मा, राजीव कुमार निवास सिंह, अभिभावक, सुनीता,मीरा देवी,रमाशंकर,भोली, गुलाली, लल्ली देवी तथा हरिपाल,अखिलेश कुमार सहित नन्हे मुन्ने बच्चे भी मौजूद थे।

संक्षिप्त डायरी

जल संरक्षण और नदियों के अस्तित्व को बचाए रखना आवश्यक

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा
मंगलवार को बांदा के केन जल आरती स्थल पर विश्व हिंदू महासंघ गौ रक्षा समिति एवं गंगा समग्र के तत्वाधान में भव्य आरती कार्यक्रम संपन्न किया गया। मीडिया प्रभारी मितेश कुमार ने जानकारी दी है कि केन जल की आरती का कार्यक्रम समिति के तत्वाधान में प्रत्येक मंगलवार को सायंकाल को आयोजित किया जाता है और यह कार्यक्रम विगत कई वर्षों से अभी तक अनवरत जारी है। ने बताया कि गंगा समग्र के जिला संयोजक महेश कुमार प्रजापति ने केन जल आरती केवल एक कार्यक्रम ही नही बल्कि समाज में रह रहे लोगों से जुड़ी एक आस्था है जिसको निभाने और अनवरत जारी रखने का कार्य समिति द्वारा किया जा रहा है। आरती कार्यक्रम का उद्देश्य जल संरक्षण और नदियों के अस्तित्व को बचाए रखने से है जोकि हम सभी के भविष्य के लिए आवश्यक है इसलिए केन जल आरती के माध्यम से लगातार लोगों को जोड़ने और इसके प्रति जागरूक करने का कार्य किया जाता है। समिति के जिलाध्यक्ष महेश प्रजापति ने कहा कि सिर्फ बांदा की केन नदी ही नही बल्कि हम सबको हर एक जल श्रोत जो मानव जीवन एवं अन्य जीवों के लिए वरदान स्वरूप है हमे उन सबको संरक्षित करना है तथा जल के महत्व को समझाना है। यह बहुत ही आवश्यक है और इस कार्य में सभी का सहयोग भी अति आवश्यक है हालांकि दिन प्रतिदिन लोग केन जल आरती में शामिल होते हैं जिन्हें जागरूक करने का कार्य समिति द्वारा लगातार किया जा रहा है तथा आगे भी जारी रहेगा। इस दौरान केन जल आरती कार्यक्रम में जिला महामंत्री राकेश कुमार त्रिपाठी, जिला उपाध्यक्ष महेश कुमार धुरिया, जिला उपाध्यक्ष राघवेंद्र द्विवेदी, जिला उपाध्यक्ष एडवोकेट राजेश मिश्रा, नगर उपाध्यक्ष रामकरण पाल, सदर तहसील अध्यक्ष विनय कुमार प्रजापति, संदीप कुमार सेन, युवा नगर अध्यक्ष उदय प्रताप डेविड, आशु प्रजापति सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस पर राजकीय महिला महाविद्यालय में कार्यक्रम के माध्यम से किया गया जागरूक

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा
बांदा में मंगलवार को महिला महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० दीपाली गुप्ता एवं मनोरोग चिकित्सक डॉ० हरदयाल द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मनोरोग चिकित्सक डॉ० हरदयाल ने बताया कि विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस प्रत्येक वर्ष 10 सितंबर को मनाया जाता है। इसकी शुरुआत वर्ष 2003 में हल्ड और इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर सुसाइड प्रिवेंशन (वक्षरद) द्वारा की गई थी। यह आत्महत्या संबंधी पूर्वाग्रहों को कम करने और संगठनों, सरकार तथा जनता के बीच जागरूकता बढ़ाने के साथ आत्महत्या को रोकने का संदेश देता है। क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट डॉ० रिजवाना हाशमी ने बताया कि कर्ज के बोझ और फसल की बर्बादी के कारण बड़ी संख्या में किसानों द्वारा आत्महत्या की गई। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में कीटनाशकों जैसे घातक पदार्थों तक पहुँच अपेक्षाकृत सरल है और यह आवेगपूर्ण आत्महत्याओं की उच्च दर में योगदान देता है। डॉ० जयंती ने बताया कि व्यक्ति की सबसे अच्छी मित्र किताब है कोई भी अच्छी किताब लेकर उसका अध्ययन जरूर करें जैसे महात्मा गांधी हमेशा गीता अध्ययन करते थे प्रवक्ता ने बताया कि गीता में निष्काम योग के विषय में जानकारी दी। अनुश्रवण एवं मूल्यांकन अधिकारी नरेन्द्र मिश्रा ने बताया कि भारत में सबसे ज्यादा आत्महत्याएं 15 से 39 वर्ष के लोग कर रहे हैं जिसमें भारत में प्रतिदिन 28 लोग आत्महत्या करते हैं बुंदेलखंड में बांदा आत्महत्या करने में नंबर एक पर है। हम सबको सकारात्मक सोच रखनी चाहिए लोगों को समय-समय पर काउंसलिंग लेते रहना चाहिए। योग और प्राणायाम अवश्य करना चाहिए परिवार के साथ समय व्यतीत करना चाहिए। प्रवक्ता डॉ० सबीहा रहमानी ने बताया कि यौवनावस्था से पूर्व बच्चों में आत्महत्या बहुत कम ही देखी जाती है और यह मुख्य रूप से किशोरावस्था के खास तौर पर 15 से 19 वर्ष की आयु के बीच, तथा वयस्क उम्र के लोगों की समस्या है। समय- समय पर जागरूकता कार्यशालाएं अवश्य होनी चाहिए। जितेंद्र एवं त्रिभुवन नाथ ने भी अपने विचार व्यक्त किया और बताया कि आत्महत्या करने वालों में 80% साक्षर हैं। भारत में हर घंटे में एक छात्र आत्महत्या करते है। त्रिभुवन नाथ ने बताया कि ऑनलाइन काउंसलिंग 14416 एवं 85 2870 9525 पर भी कर सकते हैं। डॉ० दीपाली गुप्ता ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया और उन्होंने कहा कि मन हारे हार है मन के जीते जीत इसलिए हमेशा अपने मन की सुनना चाहिए चाहे किसी भी स्थिति में रहे हमेशा सम भाव रखना चाहिए। कार्यशाला में केस रजिस्ट्री असिस्टेंट अनुपम त्रिपाठी व अशोक कुमार द्वारा प्रश्नोत्तरी कर बच्चों को पुरष्कृत किया गया।

बबेरू गौशाला की व्यवस्थाएं धड़ाम, व्यवस्थाएं देख जिला पंचायत अध्यक्ष हैरान

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा
बांदा की बबेरू ग्रामीण की गौशाला में जिला पंचायत अध्यक्ष सुनील सिंह पटेल द्वारा पहुंचकर औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण में व्यवस्थाएं देख जिला पंचायत अध्यक्ष हैरान हो गए और अपनी नाराजगी भी व्यक्त की। बताया गया कि गौशाला की स्थिति इतनी दयनीय है कि अब इसके बारे में क्या कहें, व्यवस्थाएं तो यहां की पूरी तरह से चरमराई है। जिला पंचायत अध्यक्ष ने नाराजगी जाहिर की और कहा कि सरकार के द्वारा गौशाला के लिए पर्याप्त धन भेजा जा रहा है लेकिन उसका उपयोग सही से नहीं किया जा रहा। गौशाला में खाने के लिए सही भूसा भी नहीं मिल रहा है। वहीं गौशाला की स्थिति को देखा तो चारों तरफ कीचड़ ही कीचड़ मिला, गौशाला के अंदर कोई भी खड़ंजा नहीं मिला और एक चरही में गोबर मिला, और दूसरे चरही में कुछ मिट्टी से मिक्स भूसा मिला है। जिसमें जिला पंचायत अध्यक्ष के द्वारा ग्राम पंचायत के सचिव अरविंद यादव की कड़ी निंदा किया है। वही जब चारों तरफ घूम-घूम कर जिला पंचायत अध्यक्ष ने निरीक्षण किया तो दो गोवंश मरे हुए भी पाए गए। वही ग्राम प्रधान पति रामफल त्यागी ने बताया कि चार पांच माह से मैं अपने सचिव से कह रहा हूं की बरसात के पहले गौशाला में खड़ंजा की व्यवस्था करा दी जाए, लेकिन कोई भी खड़ंजा अभी तक नहीं पड़ा है जिससे गौशाला में कीचड़ है। वहीं इस मामले में गौ रक्षा समिति का कहना है कि जिले के क्षेत्रीय अधिकारी इतना ज्यादा भ्रष्ट हो चुके हैं कि कमीशन के चक्कर में गौशालाओं में एक भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है जबकि लगातार गौ रक्षा समिति के भी पदाधिकारी जिले के जिम्मेदार अधिकारियों का अवगत कराते हैं लेकिन किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं होती है, सिर्फ लेनदेन करके मामला निपटा दिया जाता है।

रिक्त राशन की दुकानों के चयन की प्रकिया करें शीघ्र पूर्ण : डीएम

संस्कार उजाला
डॉ0सै0अब्दुल खबीर
बहराइच । खाद एवं रसद विभाग की योजनाओं की समीक्षा हेतु मंगलवार को देर शाम कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक के दौरान राशन की रिक्त दुकानों, निलम्बित दुकानों, राशन कार्ड सत्यापन, सिंगल स्टेज परिवहन व्यवस्था, माडल शाप, उज्जवला योजना इत्यादि की समीक्षा करती हुई जिलाधिकारी मोनिका रानी ने जिला पूर्ति अधिकारी व अन्य सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। राशन की रिक्त दुकानों की समीक्षा के दौरान खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देश दिये गये कि यथाशीघ्र समस्त औपचारिकताएं पूर्ण कर नियमानुसार राशन की दुकानों के चयन की प्रकिया पूर्ण की जाय। जिन ग्राम पंचायतों में दुकानों के चयन करने में किसी प्रकार की समस्या हो वहां पर एसडीएम व पुलिस का भी सहयोग लिया जाय। समूहों को आवंटित की जाने वाली राशन दुकानों के मामले में विधिवत जांच पड़ताल के उपरान्त नियमानुसार चयन किया जाय। निलम्बित राशन दुकानों के सम्बंध में उप जिलाधिकारियों को निर्देश दिये गये कि नियमानुसार कार्रवाही करते हुए निलम्बन के प्रकरणों का यथाशीघ्र निस्तारण किया जाय।राशन कार्ड के सत्यापन की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि विगत कई माहों से खाद्यान्न प्राप्त न करने वाले कार्डधारकों की सूची तैयार कर उनका सत्यापन करा लिया जाय। सत्यापन में अपात्र पाये जाने पर सम्बन्धित कार्डधारकों का नाम सूची से हटा दिया जाय। नये बनाये गये राशन कार्डो की सूची तैयार कर एसडीएम, बीडीओ, अधि. अधि. नगर निकायों के माध्यम से सत्यापन करा लिया जाय। सिंगल स्टेज परिवहन व्यवस्था की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि नये रूटचार्ट का एसडीएम सत्यापन कर आख्या उपलब्ध कराये। उज्जवला योजना की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी द्वारा डीएसओ को निर्देश दिये गये कि गैस एजेन्सियों से लाभार्थियों की सूची प्राप्त कर आधार फीडिंग का कार्य यथाशीघ्र पूर्ण कराये ताकि लाभार्थियों को सब्सिडी योजना का लाभ प्राप्त हो सके। डीएम ने एसडीएम को निर्देश दिया कि खाद्यान्न वितरण कार्य के लिए नामित नोडल अधिकारियों से प्रत्येक माह सत्यापन आख्या प्राप्त की जाय। डीएम ने एसडीएम को यह भी निर्देश दिया कि

सत्यापन कार्य के लिए नामित नोडल अधिकारियों के साथ प्रत्येक माह बैठक भी करें। बैठक के दौरान आधार फीडिंग/सीडिंग की समीक्षा, ई-के.वाई.सी. की समीक्षा, आई.जी.आर.एस. पर प्राप्त संदर्भों के निस्तारण, उचित दर विक्रेताओं में लाभांश के भुगतान, प्रवर्तन कार्य, मा. उच्च न्यायालय में योजित वादों में शपथ-पत्र दाखिल किये जाने इत्यादि से सम्बन्धित कार्यों की समीक्षा कर सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। बैठक का संचालन जिला पूर्ति अधिकारी नरेन्द्र तिवारी ने किया। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी गौरव रंजन श्रीवास्तव, एसडीएम सदर राकेश कुमार मौर्य, पयागपुर के दिनेश कुमार, ईओ नगर पालिका बहराइच प्रमिता सिंह सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी, क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी, पूर्ति निरीक्षक व अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

जल अभिनंदन कार्यक्रम का जलशक्ति मंत्री ने किया शुभारंभ

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा
प्रदेश के जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह की अध्यक्षता में बुधवार को विशिष्ट अतिथि/ राज्य मंत्री, जल शक्ति विभाग उत्तर प्रदेश रामकेश निषाद, जिला पंचायत अध्यक्ष सुनील सिंह पटेल तथा जिलाधिकारी नगेंद्र प्रताप की उपस्थिति में ग्राम सहूरपुर विकासखंड तिंदवारी में जल अभिनंदन कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि आज का दिन जनपद बांदा एवं ग्राम सहूरपुर के लिए ऐतिहासिक दिन है। आज इस दूरस्थ गांव में हर घर नल जल योजना के अंतर्गत सभी घरों में जल पहुंचाने का कार्य किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी की परिकल्पना थी कि बुंदेलखंड में सुदूर क्षेत्र में महिलाओं को दूर से पानी लाना पड़ता है उसको दृष्टिगत रखते हुए यह योजना प्रारंभ की गई। उन्होंने कहा कि जल, वृक्ष, पोखर और नदियों को सुरक्षित रखें। नदियों में गंदा पानी व गंदगी नहीं जाने दे। उन्होंने कहा कि जल संचय करें तथा जल को व्यर्थ न जाने दें। सभी लोग एक होकर जल संरक्षण में भागीदारी करें। गांव में सभी लोग जल की देखभाल एक साथ करें तथा जल आंदोलन का कार्यक्रम जल संचयन हेतु करें। हर खेत का पानी खेत में तथा हर मेड पर पेड़ लगाए, जिससे जल संचयन करने में में अत्यंत लाभ होगा। उन्होंने कहा कि केन - बेतवा परियोजना के प्रारंभ होने से सभी नहरे में में 24 घंटे पानी उपलब्ध रहेगी जिससे इस क्षेत्र के लोगों को अत्यंत लाभ होगा। उन्होंने कहा कि हर घर व खेत तक पानी पहुंचने के लिए यह प्रयास किया जा रहा है' उन्होंने कहा कि हर नल जल योजना से शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रधानमंत्री द्वारा 2014 में स्वच्छता अभियान के अंतर्गत शौचालय तथा हर घर नल योजना से हर घर में पेयजल की व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि बुंदेलखंड में तेजी से सड़कों का चौड़ीकरण, नहर निर्माण तथा अन्य विकास कार्यों को तेज गति से किया जा रहा है। प्रदेश के जल शक्ति राज्य मंत्री रामकेस निषाद ने इस अवसर पर कहा की बुंदेलखंड में तेजी से विकास हो रहा है तथा हर घर नल जल योजना के अंतर्गत पेयजल की व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में बुंदेलखंड एवं बिन्द क्षेत्र में पानी की कमी को देखते हुए जल उपलब्ध कराने की परिकल्पना की थी, उसी कल्पना के अनुसार आज हर घर जल योजना के अंतर्गत इस ग्राम में जल अभिनंदन का शुभारंभ किया गया है। उन्होंने कहा कि इस ग्राम में निर्मित की गई पानी की टंकी से आसपास के कई गांव ग्राम पलरा, सहूरपुर , नरी, बरेली कला, बंसी डेरा, पाही डेरा आदि गांव में शुद्ध पेयजल की सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि 45000 करोड़ से केन बेतवा लिंक को परियोजना इस क्षेत्र के लिए मील का पत्थर साबित होगी। कार्यक्रम में संबोधित करते हुए ब्रजराज सिंह, अधिशासी निदेशक, राज्य परियोजना स्वच्छता मिशन ने बताया कि इस योजना में उत्तर प्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है और प्रदेश में हर घर नल जल योजना के अंतर्गत दो करोड़ 26 लाख घरों में शुद्ध पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत 10 वर्षों तक इसकी मरम्मत का अनुबंध भी संबंधित कार्य संस्था से किया गया है और सड़कों का मरम्मत कार्य भी पूर्ण कराया जा रहा है। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष सुनील सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि हर घर नल जल योजना महत्वपूर्ण योजना है। इस अवसर पर संतोष गुप्ता, बलराम कुशवाहा, अजय सिंह, वंदना गुप्ता, ग्राम प्रधान रामदयाल, शिवचरण निषाद तथा अन्य लोग उपस्थित रहे।

महाविद्यालय की सीट बढ़ोतरी हेतु बांदा सदर विधायक के माध्यम से महामहिम राज्यपाल महोदया को संबोधित ज्ञापन

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा
आज दिनांक 11 सितंबर 2024 को पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय की सीट बढ़ोतरी की मांग को लेकर के महामहिम राजपाल महोदया आनंदीबाई पटेल को संबोधित ज्ञापन माननीय सदर विधायक बांदा प्रकाश द्विवेदी के कार्यालय में उनकी ना मौजूदगी में उनके सदर विधायक प्रतिनिधि रजत सेठ को सौंपा ज्ञापन में जल्द से जल्द सीट बढ़ाई जाने की मांग रखी गई क्योंकि जितनी जल्दी प्रवेश हो सकेगा उतनी ही जल्दी महाविद्यालय की कक्षा सुचारू रूप से शुरू हो सकेंगी और छात्र-छात्राओं का भविष्य बचाया जा सकता है क्योंकि बड़ी संख्या में गरीब वर्ग के छात्र अभी प्रवेश नही ले पाए है और सीट पूर्व के वर्षो में छात्र छात्राओं के अनशन और माननीय विधायक के संज्ञान लेने के बाद बढ़ाई जा चुकी है इस वर्ष भी वही स्तिथि है बहुत से गरीब ,किसान ,मजदूर के बच्चे प्रवेश लेने से वंचित है क्योंकि उनके पास प्राइवेट महाविद्यालय की शिक्षा शुल्क देने की आर्थिक स्थिति नही है इससे उनका साल और भविष्य बर्बाद हो जाएगा बुन्देलखण्ड क्षेत्र शिक्षा के मामले में वैसे भी पिछड़ा है हर वर्ष सीट बढ़ा के घटा दी जाती है जो छात्र- छात्राओं के साथ अनन्य है ऐसे में छात्र छात्राओं का शिक्षा से विश्वास उठ जायेगा जो की दुर्भाग्यपूर्ण है विधायक प्रतिनिधि रजत सेठ ने दूरभाष के माध्यम से सदर विधायक प्रकाश द्विवेदी को छात्र नेताओं द्वारा दिए ज्ञापन के बारे में अवगत कराया इसको तत्काल संज्ञान में लेते हुए माननीय विधायक ने माननीय राज्यपाल महोदया को पत्र भेज कर एवं बात कर कुछ हल निकालने का आश्वासन दिया वही विधायक प्रतिनिधि रजत सेठ ने कहा छात्र छात्राओं की मदद के लिए जो मुमकिन कोशिश हो सकेगी वो करेंगे वही मौजूद छात्रनेता लव सिन्हा ने कहा छात्र छात्राओं की सीट बढ़ाने की लड़ाई लड़ने के लिए जहा भी जाना पड़ेगा जैसी भी लड़ाई लड़नी पड़ेगी लड़ेंगे पत्र सौंपने वालों में शैलेंद्र कुमार वर्मा ने अपने नेतृत्व में यश राज गुप्ता ,बाबू राम निषाद,सचिन वर्मा, दीपक गुप्ता,योगेंद्र पाल,भूपेंद्र, आदि छात्र छात्राओं की मौजूदगी में पत्र सौंपा।

महिला कल्याण मंत्री ने वन स्टाफ सेन्टर का किया निरीक्षण

संस्कार उजाला
डॉ0सै0अब्दुल खबीर
बहराइच । प्रदेश की मा. मंत्री, महि कल्याण, बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार श्रीमती बेबी रानी मौर्य ने नगर के मोहल्ला सलारगंज स्थित महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित वन स्टाफ सेन्टर का निरीक्षण कर हिंसा से पीड़ित बालिकाओं एवं महिलाओं के रहने के लिए उपलब्ध व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए पर्याप्त साफ-सफाई न पाये जाने पर नाराजगी जताते हुए प्रबन्धक को निर्देष दिया कि वन स्टाफ सेन्टर की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाय। वन स्टाफ सेन्टर पर तैनात महिला आरक्षियों को निर्देश दिया गया कि ड्यूटी के

दौरान ड्रेस कोड का पालन करें। निरीक्षण के दौरान मा. मंत्री श्रीमती मौर्य ने सेन्टर में रह रही महिलाओं एवं बालिकाओं से यहां की व्यवस्थाओं, सुरक्षा, खान-पान इत्यादि के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। मंत्री श्रीमती मौर्य ने निर्देश दिया वन स्टाफ सेन्टर की बाउण्ड्रीवाल की ऊचाई को बढ़ा दिया जाय। मा. मंत्री ने प्रबन्धक को निर्देश दिया कि शासन द्वारा निर्धारित मानक के अनुसार सेन्टर में आने वाली महिलाओं एवं बालिकाओं को सभी सुविधाएं प्रदान की जायें। इस अवसर पर उप निदेशक महिला कल्याण एन.बी. सिंह व जिला कार्यक्रम अधिकारी राज कपूर सहित अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

श्रीअन्न, मक्का तिलहन फसलों को बढ़ावा देने के अंतर्गत दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा
श्रीअन्न/मक्का/तिलहन फसलों को बढावा देने, खरीफ फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि एवं फसल अवशेष जलाने से होने वाले दुष्परिणामों के सम्बन्ध में जनजागरूकता बढाने हेतु रानी दुर्गावती मेडिकल कालेज बाँदा के प्रेक्षागृह में दो दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन दिनांक बुधवार 11 सितंबर को दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत में उप कृषि निदेशक बाँदा विजय कुमार द्वारा कार्यक्रम में भाग लेने वाले वैज्ञानिकों एवं कृषकों का स्वागत करते हुये संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की गयी। डा० नरेन्द्र सिंह वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक बॉदा कृषि विश्वविद्यालय बाँदा द्वारा श्रीअन्न फसलों की उपयोगिता एवं विस्तार की सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला गया तथा उपस्थित कृषकों को श्री अन्न फसलों की खेती करने व अपने भोजन में शामिल करने की सलाह दी गयी। विजय कुमार उप कृषि निदेशक बॉदा द्वारा फसल अवशेष जलाने से होने वाले दुष्परिणामों जैसे कि तापमान का बढना, पर्यावरण प्रदूषित होना, मृदा में जीवांश पदार्थ की कमी होना एवं खेती के लिये उपयोगी जीवाणुओं के नष्ट होने

से मृदा स्वास्थ्य का प्रभावित होना बताया गया तथा किसानों को सलाह दी गयी कि फसल अवशेष को जलायें नहीं, बल्कि गौशालाओं के लिये या तो दान कर दें या फिर उसे सड़ाकर कम्पोस्ट खाद के रूप में परिवर्तित कर लें। डा० प्रज्ञा ओझा कृषि वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र बाँदा द्वारा श्रीअन्न से बनने वाले विभिन्न प्रकार के व्यंजनों के बारे में जानकारी दी गयी तथा श्रीअन्न के प्रसंस्करण के बारे में बताया गया। चन्द्रपाल सिंह विषय वस्तु विशेषज्ञ बाँदा द्वारा तिलहन फसलों के महत्व एवं विस्तार की सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला गया तथा किसानों से अपील की गयी कि तिलहन फसलों का क्षेत्रफल बढायें, जिससे तिलहन का आयात न करना पड़े। वर्तमान समय में तोरिया की बुवाई का उपयुक्त समय है, माह सितम्बर के द्वितीय पखवारे के अन्त तक तोरिया की बुवाई कर सकते हैं। इ० ओमप्रकाश मसुरहा द्वारा अध्यात्म के माध्यम से कृषकों को यौगिक / शास्वत खेती के सम्बन्ध में जानकारी दी गयी एवं कृषकों से अनुरोध किया गया कि श्रीअन्न फसलों को उगाकर एवं उसका सेवन कर दीर्घजीवी बनें। अन्त में उप कृषि निदेशक बाँदा द्वारा डिजिटल एग्रीकल्चर तथा एन०पी०एस०एस० ऐप के बारे में जानकारी दी गयी जिससे किसान भाई एक ही क्लिक से फसलों पर लगे रोगों एवं कीटों की जानकारी तथा उसके निवारण के सम्बन्ध में जानकारी हासिल कर सकते हैं। इसके बाद उनके द्वारा उपस्थित वैज्ञानिकों, किसान भाइयों को धन्यवाद देते हुये कार्यक्रम के समापन की घोषणा की गयी ।

समाजसेविका शालिनी पटेल ने हुंकार भर किया लोगों का आवाहन

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा
बांदा जनपद में समाजसेविका शालिनी सिंह पटेल ने उन सभी लोगों का आवाहन करते हुए कहा है कि श्याचना नही अब रण होगा, संग्राम बड़ा भीषण होगा अब तक तो सहते आए हैं, अब और नही सह पाएंगे समाजसेविका शालिनी सिंह पटेल ने लोगो का आवाहन करते हुए कहा कि बिजली का बिल फर्जी ग्रामीणों से वसूला जा रहा है। घोषित लाइट की कटौती पूरे जिले के ग्रामीण इलाकों की बंद होनी चाहिए। बांदा जिले के कुछ ग्राम पंचायतों में आवासो की फर्जी सूचियां कुछ लोगो पैसे लेकर बनाई जा रही है। हर घर जल योजना के तहत पूरे जिले के गांव की सीसी आरसीसी रोड तोड़ दिए गई हैं अभी तक मरम्मत नहीं की गई है। लगभग एक साल से श्रम विभाग की साइड बंद है गरीब मजदूर किसान और लाभ्यार्थी लोग परेशान है। विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन, वृद्धा पेंशन, अचानक बंद कर दिया जाता है जिससे लाभार्थी परेशान है। जल संस्थान चित्रकूट धाम मंडल बांदा में जल संस्थान में जो मैनपावर की सप्लाई हो रही है सरकार ने जीएम पोर्टल के द्वारा टेंडर कराने का आदेश दिया था लेकिन संबंधित विभाग के अधिकारी ई- टेंडर के द्वारा टेंडर करा रहे हैं जीएम पोर्टल से टेंडर नहीं करा रहे हैं। जिले के किसानों के अधिकतर किसानों की किसान सम्मान निधि बिना सूचना के बंद कर दी जाती है। इन सभी मांगों को लेकर 16 सितंबर 2024 दिन सोमवार को जीआईसी ग्राउंड बांदा में जिले के सभी लाभार्थी आए और अपने अधिकारों की मांग को बुलंद करें। समाजसेविक ने कहा कि अगर आप लोग अभी भी अपने अधिकारों की मांगों को बुलंद नहीं करोगे तो आने वाले समय में आप लोग आवाज बुलंद करने लायक भी नहीं रहे जाओगे तानाशाही चरम पर है। प्रशासन से हमारी मांग है कि हमारा ज्ञापन जीआईसी ग्राउंड में लेने आए अगर प्रशासनिक अधिकारी हमारा ज्ञापन जीआईसी ग्राउंड मैदान बांदा में लेने नहीं आएंगे तो बांदा शहर की सड़कों को जाम कर दिया जाएगा।

चंदा इकट्ठा कर सभी के सहयोग से सांकरा गंगा घाट पर टीनसेड की छत डलवाई

संस्कार उजाला अलीगढ़
अलीगढ़ जिले के प्राचीन सांकरा गंगा घाट पर अभी 10 दिन पहले एक डेड बॉडी चिता जल रही थी तभी अचानक बारिश आने की वजह से चिता जलाने में लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा जिसको देखते हुए सभी समाजसेवियों के द्वारा चंदा एकत्रित कर श्मशान घाट के टीनशैड पर टीन की छत की व्यवस्था की गई समाजसेवी को चंदा देने के लिए उत्तर प्रदेश पुलिस कांस्टेबल चंदू भैया उर्फ चंद्रकेश पुष्पेंद्र यादव मुंडा नगला बिजेंद्र यादव जिला पंचायत सदस्य वार्ड नंबर 1 चदियाना राकेश यादव एडवोकेट बबलू यादव प्रधान भाय सत्यवीर यादव समाजसेवी अजवाइन ढेर बबलू गुप्ता जी लहरा सलेमपुर दाताराम यादव मनोज जाटव डीलर रनवीर खड़ौआ राष्ट्रीय लोक गायक कालू यादव सोरखा अनिल क्रांतिकारी किसान कामगार मोर्चा अध्यक्ष समाजसेवी आरके गोस्वामी प्रिंटिंग प्रेस सांकरा आदि लोगों ने चंदा देकर सहयोग किया सभी समाजसेवियों ने बताया दान पुण्य के काम में हमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए खुशी की बात यह रही आज भी टीनशैड की छत डलवाते समय एक चिता जलाई गई यह देखकर मन को सुकून मिला

स्वच्छता की सेवा कार्यक्रम के अंतर्गत डीएम ने बैठक में अधिकारियों को किया निर्देशित

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा
जिलाधिकारी नगेंद्र प्रताप की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी 17 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2024 तक आयोजित किए जाने वाले ३स्वच्छता की सेवा३ कार्यक्रम के आयोजित किए जाने के संबंध में बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के अंतर्गत सभी कार्यालय में 28 एवं 29 सितंबर ,2024 को सफाई व्यवस्था कराई जाए। उन्होंने जनपद की समस्त नगर पालिका/ नगर पंचायत में कूड़ा एकत्र होने, वाले 5 स्थान को चिन्हित कर सफाई व्यवस्था कराए जाने के निर्देश अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका एवं नगर पंचायत को दिए' जिलाधिकारी ने जनपद स्तर पर एवं ब्लॉक स्तर पर दिनांक 18 सितंबर को स्वच्छता शपथ दिलाई जाने तथा 19 सितंबर 2024 को सभी विद्यालयों में, छात्र एवं छात्राओं के द्वारा स्वच्छता रैली आयोजित किये जाने तथा स्वच्छता ही सेवा के अंतर्गत निबंध, चित्रकला एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन कराये जाने के निर्देश दिए। उन्होंने पर्यटन स्थल ,प्रमुख धार्मिक स्थलों में व्यापक साफ सफाई व्यवस्था कराए जाने तथा प्रमुख सार्वजनिक स्थान एवं बाजार तथा अन्य स्थानों को चिन्हित कर स्वच्छता का कार्यक्रम चलाई जाने हेतु कार्य योजना बनाकर दो दिन मे प्रस्तुत करने के निर्देश जिला पंचायतराज अधिकारी को दिए। उन्होंने ग्राम पंचायत एवं नगर पालिका क्षेत्र के वार्डों में स्वच्छता चौपाल का दिनांक 24 सितंबर 2024 को आयोजन कराये जाने के निर्देश दिए', स्वच्छता जागरूकता हेतु स्वच्छता शपथ तथा मानव श्रृंखला आयोजित किए जाने तथा साइकिल व मैराथन दौड़ भी कराए जाने के संबंध में कार्य योजना बनाकर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। बैठक में अपर जिला अधिकारी राजस्व राजेश कुमार, मुख्य विकास अधिकारी वेद प्रकाश मौर्य, जिला पंचायत राज अधिकारी, जिला विकास अधिकारी तथा संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

बांदा के विशेष लोक अभियोजक को मिली परिवार सहित बम से उड़ाने की धमकी

फेसबुक मैसेंजर के माध्यम से भी आपत्तिजनक मैसेज, स्वयं को आई एस आई का बताया एजेंट

नगर कोतवाली पुलिस ने FIR दर्ज कर जांच में जुटी

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा
बांदा जनपद में एक विशेष लोक अभियोजक को पूरे परिवार सहित गोली मारने और बम से उड़ाने की धमकी मिली है। विशेष लोक अभियोजक सौरभ सिंह ने अपनी तहरीर कोतवाली नगर में दर्ज कराई है। तहरीर में विशेष लोक अभियोजक सौरभ सिंह ने बताया है कि मै जनपद न्यायालय बांदा मे विशेश लोक अभियोजक गैंगेस्टर के पद पर कार्यरत हूँ जनपद बांदा में मैं गैंगेस्टर एक्ट से सम्बन्धि मुकदमे की पैरवी करता हूँ। विगत 2, 3 वर्षो मे मेरे द्वारा गैंगेस्टर एक्ट के मामलो मे व सम्पत्ति कुर्क के मामलो मे सज्ञा के रुप मे लगभग 60-70 मामले निस्तारित कराये गये है। अपराधियो के कठोर कारावास से न्यायालय द्वारा दण्डित कराया गया है। मेरे फेसबुक अकाउंट पर दीक्षा ठाकुर नाम की फेस बुक अकाउंट से आपत्ति जनक मैसेज भेजे गये हैं, जिसमे अश्लील गालियाँ और मुझे और मेरे परिवार को जान से मारने की धमकी भरे मैसेज भेजे गये है, जिसमे उसने अपना नम्बर 8303135014 देकर मुझे फोन करने को कहा। उसने अपने मैसेज मे कई बार इस बात को लिखा कि मै क्ष्कका एजेण्ट हू तुम मुझे नही जानते हो, मै तुम्हे और तुम्हारे परिवार को गोली मार

सौरभ सिंह (विशेष अभियोजक गैंगस्टर एक्ट)

दूंगा बम से उडा दूंगा। लोक अभियोजक ने आगे जानकारी दी है कि चूकि मेरे द्वारा गैंगेस्टर की पैरवी द्वारा ज्यादातर मुकदमो मे अभियुक्तगणो को सजा करायी गयी है और भविष्य मे भी बहुत से ऐसे दुर्दान्त गैंगेस्टर अपराधी है जिनके मुकदमो मे सजा कराये जाने के कारण दी जा रही है। मैं अपने और अपने परिवार की सुरक्षा को लेकर अत्यन्त चिंतित हूँ। लोक अभियोजक सौरभ सिंह ने उक्त प्रकरण के सम्बन्ध मे कठोर कार्यवाही करने और उक्त फेसबुक अकाण्ट और नम्बर के सम्बन्ध मे FIR दर्ज कर उचित कार्यवाही करने की अपील की है।

पत्नी और उसके प्रेमी पर कार चढ़ाकर मारने की कोशिश

1 साल से परेशान कर रहा था, 9 बार शिकायत फिर भी चुप रही पुलिस

लखनऊ । रहीमाबाद में कार पर पिकअप चढाकर 7 लोगों को कुचलने की कोशिश की गई थी। घायल महिला का कहना है कि उसके पहले पति ने ही उसे और उसके लोगों को कार चढ़ाकर मारने की कोशिश की थी। महिला का कहना है कि वो एक साल से महिला का पीछा कर रहा था। रास्ते में रोककर परेशान करता था। थाने में कई बार शिकायत के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की गई। आखिरकार आरोपी ने जान लेने की प्लानिंग कर डाली। फिर भी पुलिस उसे बचाने की कोशिश कर रही है। महिला का कहना है कि तीन शिकायतें आईजीआरएस पोर्टल से की, तब जाकर मामूली धाराओं में केस दर्ज हुई। पुलिस की इस लापरवाही का ही नतीजा है कि सरफिरे का हौसला इतना बढ़ा कि उसने इस घटना को अंजाम दिया। पुलिस की लापरवाही यहां नहीं

रुकी, उसने इस घटना को भी एक्सीडेंट बता डाला और आरोपी को बचाने की कोशिश की। पर मामले ने तूल पकड़ा तो आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। महिला का आरोप है कि रहीमाबाद के अटेर गांव निवासी डाला चालक विनय कुमार द्विवेदी एक साल से उसको परेशान कर रहा था। रास्ते में पीछा कर अश्लील कमेंट करता था। महिला का आरोप है कि वो इतना डर गई थी कि घर से नहीं निकल पाती थी। सोमवार रात को भी जब महिला अपने भाई और दोस्त के साथ जा रही थी तो आरोपी ने उसका पीछा किया। जिस कार से महिला और उसके साथ के लोग जा रहे थे, उस कार में अपनी डाला से जोरदार टक्कर मारा। कार पर डाला चढ़ाने और सभी को कुचलने की कोशिश की। जिसमें 8 लोग घायल हो गए। पीड़िता का आरोप है कि पुलिस ने समय से कार्रवाई की होती तो वो कार चढ़ाने की हिम्मत न कर पाता। महिला का कहना है कि आरोपी उसे बदनाम

करने की कोशिश लगातार कर रहा था। बार-बार कहता रहा कि तुम्हें बर्बाद कर दूंगा। महिला ने पुलिस को बताया कि अगर उसके साथ कोई वारदात होती है तो उसका जिम्मेदार विनय कुमार द्विवेदी होगा। महिला का कहना है कि बार बार शिकायत के बाद भी पुलिस ने कोई एक्शन नहीं लिया। गाली गलौज और धमकी मामले में पुलिस ने विनय और उसके साथी दीपू को 29 मई को केस दर्ज किया था। लेकिन गिरफ्तारी नहीं की गई। महिला का कहना है कि 26 जुलाई और 7 अगस्त को रहीमाबाद में फिर प्रार्थना पत्र दिया गया। कोई कार्रवाई न होने पर 9 अगस्त को आईजीआरएस पर शिकायत की। पीड़ित परिवार का आरोप है कि पुलिस ने पहले मामूली एक्सीडेंट बता कर रेलवे की तरफ से एफआईआर दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। मामला तूल पकड़ने पर रहीमाबाद एसओ अनुभव सिंह ने हत्या के प्रयास में आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। रहीमाबाद के जुगराज के रहने वाले महेंद्र सिंह अपनी पत्नी सोनी सिंह और दोस्त मोनू सिंह के साथ कार से घर जा रहे थे। रहीमाबाद क्रासिंग बंद होने के कारण रुक गए। तभी अनीपुर गांव का रहने वाला विनय अपनी पिकअप से तेज रफ्तार में आया और टक्कर मार दी। पुलिस ने बताया, विनय की पत्नी रही सोनी अब महेंद्र के पास चली गई थी। इससे विनय महेंद्र से दुश्मनी रखने लगा था। जान से मारने की नीयत ने उसने कार में टक्कर मारी। विनय पूरी प्लानिंग के साथ पूरे परिवार को खत्म करना चाहता था। एक महीने पहले विनय ने महेंद्र पर गोली मारने का आरोप लगाया था। पुलिस ने छानबीन की तो पता चला कि विनय ने अपने हाथ पर खुद ही गोली मारी थी। महेंद्र को फंसाने की कोशिश की थी। पुलिस को गुमराह करने के कारण जेल भी भेजा गया था।

चोपन पुलिस द्वारा खोये/गिरे हुए 01 अदद मल्टीमीडिया मोबाइल को बरामद कर मोबाइल स्वामी को किया गया सुपुर्द।

संस्कार उजाला
क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल।

सोनभद्र। विशाल विश्वकर्मा पुत्र सुरेश विश्वकर्मा निवासी चोपन बैरियर थाना चोपन जनपद सोनभद्र का मोबाइल कहीं खो गया था, जिसकी सूचना आवेदक द्वारा थाना चोपन पुलिस को दी गयी तो आवेदक के खोये हुये मोबाइल की डिटेल यूपी कॉप एप्लीकेशन के माध्यम से ँ३३स्र२://६६६ू१.ॅङ्क५.ल्ल/ पोर्टल पर दर्ज कराया गया । पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के कुशल निर्देशन में जनपद में खोये/ गिरने से सम्बन्धित मोबाइल सेट की बरामदगी करने हेतु जनपद के समस्त थानों पर मोबाइल रिकवरी टीम गठित किया गया। इसी क्रम में थाना चोपन पुलिस टीम द्वारा कठिन परिश्रम करते हुये मल्टीमीडिया मोबाइल को सफलता पूर्वक बरामद कर आवेदक को सुपुर्द किया गया । जिसपर आवेदक एवं आमजन द्वारा पुलिस टीम की कोटि-कोटि प्रशंसा की गयी ।

बरामद करने वाली टीम का विवरण झ

1. प्रभारी निरीक्षक विजय कुमार चौरसिया थाना चोपन सोनभद्र ।
2. कम्प्यूटर आपरेटर सुशील कुमार थाना चोपन सोनभद्र ।
3. का0 सुनील कुमार यादव थाना चोपन सोनभद्र ।
4. का0 सुभाष चन्द्र भारती थाना चोपन सोनभद्र।

पुलिस अधीक्षक सोनभद्र डॉ0 यशवीर सिंह जी का जनपद रायबरेली स्थानांतरण होने पर दी गयी भावभीनी विदाई

संस्कार उजाला
क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल।

सोनभद्र। पुलिस लाइन चुर्क व कलेक्ट्रेट जनपद सोनभद्र में पुलिस अधीक्षक जनपद सोनभद्र डॉ0 यशवीर सिंह के जनपद रायबरेली स्थानान्तरण पर जिलाधिकारी सोनभद्र/जनपदीय पुलिस के अधिकारी एवं कर्मचारीगण/व्यापारीवर्ग/पत्रकार बंधु व आम जनता द्वारा भावभीनी विदाई दी गयी । इस अवसर पर जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण को सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकारी सेवाओं में स्थानान्तरण एक सामान्य प्रक्रिया है, जो व्यक्ति सरकारी सेवाओं में आया है, वह समय-समय पर स्थानान्तरित होते हुए एक दिन

सरकारी सेवा एक-दूसरे स्थान पर जाता रहता है, सरकार सेवाओं की अपनी एक सीमा है, पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह का कार्यकाल जनपद सोनभद्र में काफी सराहनीय रहा है, इनके द्वारा जनपद में किये गये सराहनीय कार्यो को याद किया जायेगा ।इस दौरान उपस्थित समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण द्वारा पुलिस अधीक्षक महोदय के सराहनीय कार्यकाल एवं विभागीय मार्गदर्शन की प्रशंसा की गयी तथा इस सम्बंध में अपने विचार व्यक्त किये गये । इसके साथ ही समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण द्वारा पुलिस अधीक्षक सोनभद्र को फूलमाला पहनाते हुए उनको सफल कार्यकाल हेतु उन्हें बधाई दी गयी तथा सोनभद्र पुलिस परिवार के तरफ से उन्हें आगामी कार्यकाल हेतु ढेर सारी शुभकामनाएं देते हुए स्मृति चिन्ह भेंट किया गया । इस मौके पर पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा व्यापारीवर्ग, आम जनमानस, पत्रकार बंधु व प्रसाशनिक अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा पुलिस के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर बड़े से बड़े त्योहार को सकुशल व शांतिपूर्ण सम्पन्न कराये जाने का आभार प्रकट करते हुए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया ।

प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर सदस्यता अभियान को बनाएं विशेषः सहजानन्द राय

कुशीनगर। भारतीय जनता पार्टी के क्षेत्रीय अध्यक्ष सहजानन्द राय ने राष्ट्रीय सदस्यता अभियान में क्रम में गोरखपुर क्षेत्र में कुशीनगर के प्रथम स्थान आने पर पार्टीजनों की सराहना करते हुऐ कहा कि क्षेत्र को देश में प्रथम स्थान दिलाने के लिए आप सभी पूरी ऊर्जा के साथ लग जाय। उन्होंने कहा कि 17 सितंबर को हम सभी के आराध्य देवशिल्पी भगवान विश्वकर्मा जी की जयंती है जिसे हम सभी पूरी श्रद्धा के साथ मनाते हैं।

सौभाग्य से इसी दिन यशस्वी प्रधानमंत्री जी का जन्मदिवस है अतः हम सभी के लिए यह दुगुनी खुशी का अवसर है। अतः प्रधानमंत्री जी के जन्मदिवस को लेकर सदस्यता के विशेष अभियान में गोरखपुर क्षेत्र को प्रथम स्थान

दिलाना हम सभी की ओर से पार्टी की बड़ी सेवा एवं उपहार होगा। श्री राय भाजपा के मंडल अध्यक्षगण एवं पदाधिकारियों के साथ नगरपालिका अध्यक्ष के आवास पर बैठक के दौरान कही।

उन्होंने कहा कि देव सरीखे कार्यकताओं के बल पर राष्ट्रवादी सोच को लेकर भाजपा निरन्तर लोकतन्त्र को मजबूत बना रही है वही यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की केंद्र में तीसरी बार एवं प्रदेश में दूसरी बार योगी जी की सरकार बनी है। उन्होंने लक्ष्य के पार जाकर इतिहास बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि कार्यकताओं का हित सर्वोपरि है इससे कोई समझौता नही होगा। पूर्व सांसद जय प्रकाश निषाद ने अपने विचार को रखते हुये कहा कि लक्ष्य को लेकर हम सभी पूरी ऊर्जा से कार्य करें।अध्यक्षता करते हुए जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय ने कहा सदस्यता अभियान को हम सभी मिलजुल कर सफल व ऐतिहासिक बनाएंगे। यहां क्षेत्रीय अध्यक्ष एवं सभी पदाधिकारियों का स्वागत नगरपालिका अध्यक्ष किरन राकेश जायसवाल ने किया। राकेश जायसवाल ने यह भरोसा दिलाया कि इस अभियान को निर्देश के अनुसार सफल बनाया जायेगा। इस अवसर पर दिवाकर मणि, मंडल अध्यक्ष अनिल प्रताप राव, किन्नरेश चौबे,विनोद गुप्ता, बच्चा सिंह, रमायन कुशवाहा, वरुण राय, श्याम चौहान, रविशंकर सिंह, पूर्व प्रधान मनोज जायसवाल, संजय जायसवाल,दिनेश जायसवाल, प्रेम जायसवाल, राहुल सोनी, सोनू चौहान, कृष्णा जायसवाल, कन्हैया जायसवाल, हरिंदर जायसवाल, अशोक , उमेश जायसवाल आदि मौजूद रहे।

गीताप्रेस की पवित्रता पर साइबर हमले का संकट

गोखपुर। गीताप्रेस की प्रतिष्ठा पर साइबर जालसाजों ने हमला किया है। हाल ही में, इन शरारती तत्वों ने भगवान श्रीकृष्ण की गोपियों के साथ एक आपत्तिजनक फोटो को गीताप्रेस से प्रकाशित बताकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। इस फोटो के साथ जन्माष्टमी की शुभकामनाएं भी भेजी गईं, जो पूरी तरह से गलत और भ्रामक है, क्योंकि यह फोटो गीताप्रेस के किसी भी एलबम में मौजूद नहीं है। दरअसल, गीताप्रेस ने इस मामले की गंभीरता को देखते हुए एक्स (पूर्व में ट्विटर) को एक आधिकारिक पत्र भेजा है, जिसमें उन्होंने इस आपत्तिजनक फोटो को तुरंत हटाने की मांग की है। प्रेस प्रबंधन का कहना है कि इस प्रकार की जालसाजी से उनकी प्रतिष्ठा को गंभीर नुकसान पहुँच रहा है और यह प्रेस की पवित्रता को भद्दा कर रही है। इस घटना की जानकारी पांच सचेत पाठकों ने ई-मेल के माध्यम से गीताप्रेस को दी है, जो इस तरह की शरारती गतिविधियों के खिलाफ हैं।

गोरखपुर के मदरसा में 12 साल की बच्ची से रेप

गोरखपुर । उरुवा थाना क्षेत्र के मंझरिया गांव में दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है, जहां एक 12 साल की बच्ची के साथ मदरसे के मौलवी ने दुष्कर्म किया। घटना के बाद, जब ग्रामीणों को इसका पता चला, तो उन्होंने मौलवी को पीटने के बाद पुलिस के हवाले कर दिया। पीड़ित बच्ची की मां की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है, और बच्ची का मेडिकल परीक्षण कराया जा रहा है। घटना का पूरा विवरण बताते हुए ग्रामीणों ने कहा कि बच्ची स्थानीय प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 5 की स्टूडेंट है। रोज की तरह, सोमवार की सुबह भी वह स्कूल जाने से पहले मदरसे में ट्यूशन पढ़ने गई थी। करीब एक घंटे बाद, मौलवी ने अन्य बच्चों को घर भेज दिया, लेकिन बच्ची को अपने पास रोक लिया। कुछ देर बाद, गांव के कुछ बच्चे मदरसे के पास लगे हैंडपंप पर पानी पीने के लिए पहुंचे, जहां उन्होंने मौलवी को बच्ची के साथ गलत हरकत करते हुए देख लिया। बच्चों के शोर मचाने पर ग्रामीण और बच्ची के परिजन मौके पर पहुंचे, और मौलवी की शर्मनाक करतूत का पदार्फाश हुआ। गुस्साए ग्रामीणों ने मौलवी रहमत अली, जो खलीलाबाद के विधियानी गांव का निवासी है, को पीटकर पुलिस के हवाले कर दिया। आरोपी मौलवी हाल ही में, एक महीने पहले ही मंझरिया स्थित इस मदरसे में नियुक्त हुआ था। इससे पहले वह बेलघाट थाना क्षेत्र के एक अन्य मदरसे में पढ़ाता था। घटना की गंभीरता को देखते हुए, एसपी दक्षिणी जितेंद्र कुमार और क्षेत्राधिकारी गोला रत्नेश्वर सिंह फोरेंसिक टीम के साथ घटना स्थल पर पहुंचे और गहन जांच शुरू की।

7 करोड़ से बनेगी इंट्रीग्रेटेड गारबेज सिटी

गोरखपुर । सुथनी में स्वच्छता की एक नई मिसाल कायम करने की तैयारी जोरों पर है। 40 एकड़ में प्रस्तावित इंट्रीग्रेटेड गारबेज सिटी के तहत, 7 करोड़ रुपए की लागत से एक हाई-टेक डोमेस्टिक हेजर्ड वेस्ट ट्रीटमेंट प्लांट लगाने का फैसला किया गया है। यह प्लांट प्लाज्मा तकनीक पर आधारित होगा और इसकी क्षमता प्रतिदिन 5 टन कचरे के निष्पादन की होगी। इसके निर्माण के लिए महाराष्ट्र की वीडीके फैसिलिटी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को चुना गया है। गोरखपुर नगर निगम की इस पहल का उद्देश्य न सिर्फ स्वच्छता को बढ़ावा देना है, बल्कि खतरनाक घरेलू कचरे का सुरक्षित निपटान करना भी है। नगर आयुक्त गौरव सिंह सोगरवाल ने मंगलवार को वीडीके कंपनी की डिप्टी सीईओ नीतिका पांडे को वर्क ऑर्डर सौंपते हुए मार्च 2025 तक प्लांट का निर्माण पूरा करने का

निर्देश दिया। इस मौके पर मुख्य अभियंता संजय चौहान भी मौजूद रहे।

इस प्लांट का उद्देश्य खतरनाक घरेलू कचरे जैसे पेंट, थिनर, कीटनाशक, बैटरी, मोटर ऑयल आदि का सुरक्षित निपटान करना है। इनका अनुचित निपटान पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनता है। इस प्लांट के जरिए नगर निगम लैंडफिल साइट्स, भूजल और नदी-तालाबों को प्रदूषण से बचाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाने जा रहा है। परियोजना का शिलान्यास मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ करेंगे, और 6 महीनों के भीतर इस प्लांट का निर्माण कार्य पूरा कर लिया जाएगा। इस प्लांट से गोरखपुर को गारबेज फ्री सिटी का दर्जा मिलने की उम्मीद है, जिससे यह स्वच्छ भारत मिशन के तहत एक प्रमुख शहर बन सकेगा। हेरिटेज फाउंडेशन के मनीष चौबे का कहना है कि खतरनाक उत्पादों के लेबल को ध्यान से पढ़ने और सही तरीके से निपटान करने की जरूरत है। ऐसे उत्पाद जो ज्वलनशील या विषाक्त हों, उन्हें सावधानी से संभालें और बच्चों की पहुंच से दूर रखें। इस परियोजना से गोरखपुर शहर को स्वच्छता के क्षेत्र में एक नई पहचान मिलेगी।

संक्षिप्त डायरी

जिले में पुलिस अधीक्षक के रूप में रहे डॉ0 यशवीर सिंह की भाव भीनी विदाई।

संस्कार उजाला
ब्यूरो चीफ सोनभद्र अरविन्द गुप्ता।

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह को कलेक्ट्रेट सभागार में जनपद सोनभद्र से जनपद रायबरेली में पुलिस अधीक्षक के रूप में स्थानान्तरण होने पर भाव भीनी विदाई दी गयी, इस अवसर पर जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण को सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकारी सेवाओं में स्थानान्तरण एक सामान्य प्रक्रिया है, जो व्यक्ति सरकारी सेवाओं में आया है, वह समय-समय पर स्थानान्तरित होते हुए एक दिन सरकारी सेवा एक-दूसरे स्थान पर जाता रहता है, सरकार सेवाओं की अपनी एक सीमा है, पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह का कार्यकाल जनपद सोनभद्र में काफी सराहनीय रहा है, इनके द्वारा जनपद में किये गये सराहनीय कार्यो को याद किया जायेगा, जो अधिकारी काफी मेहनती और ईमानदार होते हैं, उनके स्थानान्तरण के फलस्वरूप बिदाई देते वक्त मन भावुक हो जाता है। इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी श्री सौरभ गंगवार ने कहा कि ऐसे ही कर्मठ एवं लगनशील अधिकारी के रूप में पुलिस अधीक्षक ने सोनभद्र जिले में लगभग दो वर्ष से अधिक बेहतरीन सेवा करते हुए स्थानान्तरित होकर रायबरेली में पुलिस अधीक्षक के पद पर जा रहे हैं। इस दौरान पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह ने कहा कि जनपद सोनभद्र के कार्यकाल में काफी कुछ बातों को सीखने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ, जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन के सहयोग से चुनाव, उप चुनाव को बेहतर ढंग से सम्पन्न कराया गया, जनपद सोनभद्र हमारे लिए यादगार रहेगा, जनपद सोनभद्र का कार्यकाल मेरे सर्विस का सबसे बड़ा कार्यकाल रहा है। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी (नमामि गंगे) रोहित यादव, परियोजना निदेशक आर0एस0 मौर्या, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सुधांशु शेखर, प्रशासनिक अधिकारी रामलाल, सहायक निर्वाचन अधिकारी जगरूप सिंह पटेल, अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह सहित अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों ने पुलिस अधीक्षक को माल्यार्पण कर स्मृतिचिन्ह भेंट किये और विदाई समारोह में विकास व कलेक्ट्रेट के सभी अधिकारी व कर्मचारियों ने पुलिस अधीक्षक के कार्यकाल की सराहना की।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला स्तरीय स्थायी समिति की बैठक सम्पन्न

संस्कार उजाला
ब्यूरो चीफ सोनभद्र अरविन्द गुप्ता।

सोनभद्र। जिलाधिकारी/अध्यक्ष ह्यह्यजिला स्तरीय स्थायी समिति की बैठक बी0एन0 सिंह की अध्यक्षता में जन सुनवाई कक्ष में की गयी, इस अवसर पर व पुलिस अधीक्षक के प्रतिनिधि सी0ओ0 संजीव कटियार भी उपस्थित रहें, बैठक में अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह ने पिछली बैठक की कार्यवृत्ति को समिति के समक्ष प्रस्तुत किया, जिसकी पुष्टि समिति द्वारा सर्व सम्मति से की गयी। बैठक में पत्रकार उत्पीड़न के कोई भी नये प्रकरण न आने व मीडिया से मिल रहे सहयोग के प्रति जिलाधिकारी ने जिले की मीडिया की प्रशंसा करते हुए बेहतर समन्वय बनाये रखने की अपेक्षा की। बैठक में जिला स्तरीय स्थायी समिति प्रभारी जिला सूचना अधिकारी सुधांशु शेखर शर्मा, सदस्य परमेश्वर दयाल श्रीवास्तव, विधूशेखर मिश्रा, सुनील तिवारी आदि ने अपने रचनात्मक सुझाव जिलाधिकारी को दिये, जिलाधिकारी ने कहा कि मीडिया का मिल रहे सहयोग और सुझाव जिला प्रशासन के लिए काफी कारगर सिद्ध होते हैं, लिहाजा जिला प्रशासन रचनात्मक सुझाव की अपेक्षा ह्यह्यजिला स्तरीय स्थायी समिति के सदस्यों व पत्रकारों से हमेशा करती रहेगी। समिति के सदस्यों द्वारा जिले में अनाधिकृत रूप से सोशल मीडिया का संचालन करने वाले और अनाधिकृत रूप से प्रेस के नाम पर घूमने वालों को अंकुश लगाने की मांग की गयी, जिस पर जिलाधिकारी ने कहा कि अनाधिकृत रूप से सोशल मीडिया पर चलाने वालो के खिलाफ जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन चिन्हांकन कर कार्यवाही सुनिश्चित करेगी, जिसमें पत्रकार बन्धुओं का भी सकारात्मक सहयोग अपेक्षित रहेगा, मीडिया के सम्मानित सदस्यों द्वारा सूचना भवन बनाये जाने सम्बन्धी जमीन उपलब्ध बनाये जाने की मांग पर जिलाधिकारी ने स्वागत करते हुए उपलब्ध करायी गयी जमीन पर सूचना संकूल निर्माण सम्बन्धी कार्यवाही का भरोसा दिलाया गया। बैठक में मीडिया के सदस्यों द्वारा नियमित रूप से बैठक कराने की मांग पर मौके पर मौजूद जिला सूचना कार्यालय के अपर जिला सूचना अधिकारी को आवश्यकतानुसार बैठक कराने के निर्देश देते हुए पत्रकारों का कोई प्रकरण को समिति के सदस्यो द्वारा प्रस्तुत करने पर दो माह की अवधि का इन्तजार किये बिना कार्यवाही अमल में लाये जाने के निर्देश दिये गये। जिलाधिकारी ने बैठक में पत्रकार उत्पीड़न की नये प्रकरणों की स्थिति सामान्य पाये जाने पर मीडिया के पदाधिकारियों की तारीफ की और कहा कि सोनभद्र के मीडिया के पदाधिकारी वाकई बेहतर समन्वय का परिचय दे रहे हैं, जिसका सबूत है कि नये उत्पीड़न प्रकरणों की स्थिति सामान्य है। इस दौरान ग्रामीण पत्रकार ऐसोसिएशन के सदस्य डॉ0 परमेश्वर दयाल श्रीवास्तव द्वारा पत्रकारों की सुरक्षा के बिन्दु पर चर्चा की गयी, जिस पर जिलाधिकारी ने कहा कि शासन द्वारा अनुमन्य सुरक्षा से सम्बन्धित नियमानुसार कार्यवाही पुलिस विभाग द्वारा की जायेगी, पत्रकार बन्धुओं का अनावश्यक उत्पीड़न न होने पायें, इसका विशेष ध्यान रखा जाये, पत्रकार बन्धुओं से मिल रहे बेहतरीन संरक्षण व जिले के प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रानिक्स मीडिया से प्राप्त हो रहे सहयोग के प्रति मौके पर मौजूद अपर जिला सूचना अधिकारी ने तारीफ करते हुए जिले के मीडिया से अपील किया कि जिले में कहीं भी पत्रकारिता के दायित्वों के निर्वहन के दौरान अगर कोई घटना घटित होती है तो वे जिला सूचना कार्यालय,सोनभद्र के सी0यू0जी0 नंबर पर जानकारी दे सकते हैं।

भारत का सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम सिर्फ भारत नहीं, बल्कि ग्लोबल चैलेंजेस को सॉल्यूशंस देगा , मा0 प्रधानमंत्री

नरेंद्र मोदी ने ग्रेटर नोएडा स्थित इंडिया एक्सपो मार्ट में सेमीकॉन इंडिया 2024 का किया शुभारंभ

- भारत के लिए चिप का मतलब सिर्फ टेक्नोलॉजी नहीं है, यह करोड़ों एस्पिरेशंस को पूरा करने का माध्यम है
- भारत का फोकस स्टूडेंट्स और प्रोफेशनल्स को सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री रेडी बनाने पर
- हमारा सपना दुनिया की हर डिवाइस में हो इंडियन मेड चिप, सेमीकंडक्टर पावर हाउस बनने के लिए जो भी जरूरी होगा भारत सब करेगा
- आज का भारत दुनिया को भरोसा देता है, व्हेन द चिप्स आर डाउन, यू कैन बेट ऑन इंडिया
- भारत की सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में स्पेशल डायोड लगे हुए हैं, यहां हमारी एनर्जी दोनों डायरेक्शन में जाती है
- हम 85 हजार टेक्नीशियंस, इंजीनियर्स और आरएंडडी एक्सपर्ट्स की सेमीकंडक्टर वर्कफोर्स तैयार कर रहे हैं
- हमारे इंजीनियर्स न सिर्फ अभी के लिए हाईटेक चिप बनाएं, बल्कि नेक्स्ट जेन चिप पर भी रिसर्च करें
- इस दशक के अंत तक इलेक्ट्रॉनिक सेक्टर को 500 बिलियन डॉलर तक पहुंचाएंगे, इससे 60 लाख जॉब्स क्रिएट होंगी
- हम एक ऐसी दुनिया बनाना चाहते हैं जो संकट के समय भी रुके नहीं, ठहरे नहीं, निरंतर चलती रहे माननीय प्रधानमंत्री
- सेमीकंडक्टर में भारत को ग्लोबल लीडर के रूप में स्थापित करेगा सेमीकॉन इंडिया
- मा0 मुख्यमंत्री ने कहा- उत्तर प्रदेश वैश्विक सेमीकंडक्टर डिजाइन के इंजीनियर्स के हब के रूप में हो रहा स्थापित
- कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स के निर्यातक के रूप में उभरा है उत्तर प्रदेश सेमीकंडक्टर को अनुकूल वातावरण प्रदान करने के लिए उत्तर प्रदेश में लागू की गई नीति
- ईज ऑफ डूइंग बिजनेस, इंफ्रास्ट्रक्चर कनेक्टिविटी और सुदृढ़ कानून व्यवस्था उत्तर प्रदेश की यूएसपी

संस्कार उजाला
गाजियाबाद
भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा स्थित इंडिया एक्सपो मार्ट में सेमीकॉन इंडिया 2024 का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हम सेमीकंडक्टर से जुड़े इंफ्रास्ट्रक्चर पर बहुत फोकस कर रहे हैं। भारत के लिए चिप का मतलब सिर्फ टेक्नोलॉजी भर नहीं है, हमारे लिए यह करोड़ों एस्पिरेशंस को पूरा करने का माध्यम है। भारत का फोकस अपने स्टूडेंट्स और प्रोफेशनल्स को सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री रेडी बनाने पर है। उन्होंने कहा कि भारत की नीतियों के कारण ही बहुत कम समय में 1.5 ट्रिलियन रुपए से ज्यादा के इन्वेस्टमेंट इस क्षेत्र में भारत में हो चुके हैं। भारत इस क्षेत्र में 360 डिग्री एप्रोच के साथ काम कर रहा है। हमारी सरकार भारत में पूरे सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन इकोसिस्टम को आगे बढ़ा रही है। उन्होंने कहा कि इस साल लाल किले से कहा था कि हमारा सपना है कि दुनिया की हर डिवाइस में इंडियन मेड चिप हो। सेमीकंडक्टर पावर हाउस बनने के लिए जो भी जरूरी होगा भारत वो सब करने वाला है। भारत का सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम सिर्फ भारत के नहीं बल्कि ग्लोबल चैलेंजेस को भी सॉल्यूशंस प्रोवाइड करेगा। इससे पूर्व उन्होंने प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। इस दौरान उन्हें विभिन्न सेमीकंडक्टर आधारित उपकरणों एवं इनोवेशंस के विषय में जानकारी दी गई। आप सही समय पर सही जगह पर हैं अपने संबोधन की शुरूआत करते हुए मा0 प्रधानमंत्री जी ने कहा कि भारत दुनिया का 8वां देश है जहां ग्लोबल सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री से जुड़ा यह भव्य आयोजन हो रहा है। कह सकता हूं कि आप सही समय पर सही जगह पर हैं। 21वीं सेंचुरी के भारत में द चिप्स आर नेवर डाउन और सिर्फ इतना ही नहीं, आज का भारत दुनिया को भरोसा देता है, व्हेन द चिप्स आर डाउन, यू कैन बेट ऑन इंडिया। उन्होंने कहा कि सेमीकंडक्टर की दुनिया से जुड़े आप लोगों का नाता डायोड्स से जरूर पड़ता है। डायोड में एनर्जी सिर्फ एक डायरेक्शन में जाती है, लेकिन भारत की सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में स्पेशल डायोड लगे हुए हैं। यहां हमारी एनर्जी दोनों डायरेक्शन में जाती है। यह भी बहुत रोचक है। आप इनवेस्ट करते हैं और वैल्यू क्रिएट करते हैं, वहीं सरकार आपको स्टेबल पॉलिसी और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस देती है। सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री इंटीग्रेटेड सर्किट से जुड़ी हुई है। भारत भी आपको एक इंटीग्रेटेड इकोसिस्टम देता है। स्टूडेंट्स और प्रोफेशनल्स को बनाएंगे सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री रेडी मा0 प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत के डिजाइनर्स और उनके जबर्दस्त टैलेंट को तो आप भलीभांति जानते हैं। डिजाइनिंग की दुनिया में 20 प्रतिशत टैलेंट का योगदान भारत करता है और इसका निरंतर विस्तार हो रहा है। हम 85 हजार टेक्नीशियंस, इंजीनियर्स और आरएंडडी एक्सपर्ट्स की सेमीकंडक्टर वर्कफोर्स तैयार कर रहे हैं। भारत का फोकस अपने स्टूडेंट्स और प्रोफेशनल्स को सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री रेडी बनाने पर है। हाल ही में नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की पहली बैठक हुई है। इस फाउंडेशन से भारत के रिसर्च इकोसिस्टम को एक नई दिशा भी मिलेगी, नई ऊर्जा भी मिलेगी। इसके अलावा भारत में वन ट्रिलियन रुपए का स्पेशल रिसर्च फंड भी बनाया गया है। ऐसे इनीशिएटिव से सेमीकंडक्टर और साइंस सेक्टर में इनोवेशन का दायरा बहुत ज्यादा बढ़ने वाला है। भारत में लास्ट माइल डिलीवरी सुनिश्चित करने में यह छोटी सी चिप बड़े काम आ रही है सेमीकंडक्टर को लेकर भारत सरकार की नीतियों और निवेशकों की सहूलियत पर माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा कि आपके पास एक थ्री डायमेंशनल पावर भी है। पहली, भारत की आज की रिफॉर्मिस्ट गवर्नमेंट। दूसरा, भारत में ग्रोइंग मैन्युफैक्चरिंग बेस और तीसरा, भारत का एस्पिरेशनल मार्केट। एक ऐसा मार्केट जो टेक्नोलॉजी का टेस्ट जानता है। उन्होंने कहा कि भारत की एस्पिरेशनल और टेक ओरिएंटेड सोसायटी बहुत ही यूनीक है। भारत के लिए चिप का मतलब सिर्फ टेक्नोलॉजी भर नहीं है, हमारे लिए यह करोड़ों एस्पिरेशंस को पूरा करने का माध्यम है। आज भारत चिप का बहुत बड़ा कंज्यूमर है। इसी चिप पर हमने दुनिया का सबसे बेहतरीन डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर बिल्ड किया है। भारत में लास्ट माइल डिलीवरी सुनिश्चित करने में आज यह छोटी सी चिप बड़े काम आ रही है। कोरोना जैसे महासंकट में जब दुनिया के मजबूत से मजबूत बैंकिंग सिस्टम भी चरमरा गए तब भारत में बैंक बिना रुके चल रहे थे। भारत का यूपीआई हो, रूपे कार्ड हो, डिजिलॉकर से लेकर डिजीयात्रा तक अलग-अलग तरह के डिजिटल प्लेटफॉर्म भारत के लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गए हैं। आज भारत आत्मनिर्भर होने के लिए हर सेक्टर में मैन्युफैक्चरिंग बढ़ा रहा है। आज भारत बड़े पैमाने पर ग्रीन ट्रांजिशन कर रहा है। आज भारत में डेटा सेंटर की डिमांड लगातार बढ़ रही है, यानि ग्लोबल सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री को ड्राइव करने में भारत बड़ी भूमिका निभाने जा रहा है। भारत में 360 डिग्री एप्रोच के साथ हो रहा काम माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा कि एक पुरानी प्रचलित कहावत रही है 'ले द चिप फॉल, व्हेयर दे में' यानी जो चल रहा है उसे वैसे ही चलने दिया जाए। आज का यंग और एस्पिरेशनल भारत इस भावना पर नहीं चलता। आज के भारत का मंत्र है इंक्रीजिंग द नंबर्स ऑफ चिप्स प्रोड्यूस इन इंडिया और इसलिए हमने सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग को आगे बढ़ाने के लिए बहुत सारे कदम उठाए हैं। भारत में सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी लगाने के लिए 50 परसेंट सपोर्ट भारत सरकार दे रही है। हमारी राज्य सरकारें भी अपने स्तर पर और मदद कर रही हैं। भारत की नीतियों के कारण ही बहुत कम समय में 1.5 ट्रिलियन रुपए से ज्यादा के इन्वेस्टमेंट इस क्षेत्र में भारत में हो चुके हैं। आज कई प्रोजेक्ट्स पाइपलाइन में हैं। सेमीकॉन इंडिया प्रोग्राम भी एक अद्भुत योजना है। इसके तहत फ्रंट एंड फैब्स, डिस्प्ले फैब्स, सेमीकंडक्टर पैकेजिंग, कंपाउंड सेमीकंडक्टर्स, सेंसर्स और डिस्प्ले मैन्युफैक्चरिंग के लिए फाइनेंशियल सपोर्ट दिया जा रहा है। यानी भारत में 360 डिग्री एप्रोच के साथ काम हो रहा है। हमारी सरकार भारत में पूरे सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन इकोसिस्टम को आगे बढ़ा रही है। इस साल हमने लाल किले से कहा था कि हमारा सपना है कि दुनिया की हर डिवाइस में इंडियन मेड चिप हो। सेमीकंडक्टर पावर हाउस बनने के लिए जो भी जरूरी होगा भारत वो सब करने वाला है। आज का युग सिलिकॉन डिप्लोमेसी का युग क्रिटिकल मिनरल्स को लेकर उन्होंने कहा कि क्रिटिकल मिनिरल्स के डॉमेस्टिक प्रोडक्शन और इसके ओवरसीज एक्विजिशन के लिए हमने कुछ दिन पहले क्रिटिकल मिनरल मिशन की घोषणा की है। क्रिटिकल मिनरल्स को कस्टम ड्यूटी से छूट देना हो, ब्लॉक्स की, माइनिंग की ऑक्शन हो, इन सब पर तेजी से काम हो रहा है। इतना ही नहीं, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेस साइंस में एक सेमीकंडक्टर रिसर्च सेंटर बनाने में भी काम कर रहे हैं। हम आईआईटी के साथ पार्टनरशिप कर रहे हैं, ताकि हमारे इंजीनियर्स न सिर्फ अभी के लिए हाईटेक चिप बनाएं, बल्कि नेक्स्ट जेन चिप पर भी रिसर्च करें। हम इंटरनेशनल कोलाबरेशन को भी आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आप लोगों ने ऑयल डिप्लोमेसी का नाम सुना है, आज का युग सिलिकॉन डिप्लोमेसी का युग है। इसी साल भारत इंडो पैसिफिक इकॉनमिक फ्रेमवर्क की सप्लाई चेन काउंसिल का वाइस चेयर चुना गया है। हम क्वॉड सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन इनीशिएटिव के भी बड़े पार्टनर हैं। हाल ही में हमने जापान और सिंगापुर समेत कई देशों के साथ एग्रीमेंट भी साइन किए हैं। इस सेक्टर में अमेरिका के साथ भी भारत अपना सहयोग लगातार बढ़ा रहा है। भारत सेमीकंडक्टर चिप भी बनाएगा और उनके फिनिश गुड्स भी बनाएगा प्रधानमंत्री जी ने कहा कि डिजिटल इंडिया मिशन का लक्ष्य देश को एक ट्रांसपेरेंट, इफेक्टिव और लीकेज फ्री गवर्नेंस देना था और आज हम इसके मल्टीप्लायर इफेक्ट को महसूस कर रहे हैं। एक दशक पहले हम मोबाइल फोन्स के बड़े इंपोर्टर्स में एक थे और आज हम दुनिया के नंबर 2 प्रोड्यूसर और एक्सपोर्टर हैं। अभी एक ताजा रिपोर्ट आई है कि आज भारत 5जी हैंडसेट्स का दूसरा सबसे बड़ा मार्केट बन चुका है। दो साल पहले ही हमने 5जी रोलआउट शुरू किया था और आज देखिए हम कहां से कहां पहुंच चुके हैं। आज भारत का इलेक्ट्रॉनिक सेक्टर 150 बिलियन डॉलर से भी ज्यादा का हो चुका है और अब तो हमारा लक्ष्य और भी बड़ा है। इस दशक के अंत तक हम अपने इलेक्ट्रॉनिक सेक्टर को 500 बिलियन डॉलर तक पहुंचाना चाहते हैं। इससे भारत के युवाओं के लिए करीब 6 मिलियन यानी 60 लाख जॉब्स क्रिएट होंगी। भारत के सेमीकंडक्टर सेक्टर को भी इसका बहुत अधिक फायदा होगा। हमारा लक्ष्य है कि इलेक्ट्रॉनिक मैन्युफैक्चरिंग का 100 प्रतिशत काम भारत में ही हो यानी भारत सेमीकंडक्टर चिप भी बनाएगा और उनके फिनिश गुड्स भी बनाएगा। मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग हो, इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग हो या सेमीकंडक्टर हो, हमारा फोकस एकदम क्लियर है। हम एक ऐसी दुनिया बनाना चाहते हैं जो संकट के समय भी रुके नहीं, ठहरे नहीं, निरंतर चलती रहे। सेमीकोन इंडिया-2024 के उद्घाटन अवसर पर मा0 मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सेमीकॉन इंडिया- 2024 प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरूप सेमीकंडक्टर के उत्पादन, डिजाइन व टेक्नोलॉजी डवलपमेंट में भारत को ग्लोबल लीडर के रूप में स्थापित करेगा। उत्तर प्रदेश आज देश-दुनिया में कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स के निर्यातक के रूप में उभरा है। पिछले कुछ वर्षों में हुए प्रयास का ही परिणाम है कि देश के मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग का 55 प्रतिशत और मोबाइल कंपोनेंट का 50 प्रतिशत उत्पादन उत्तर प्रदेश में हो रहा है। उन्होंने कहा कि सैमसंग इंडिया अपने डिस्प्ले यूनिट के प्लांट की स्थापना उत्तर प्रदेश में कर रहा है। साथ ही उत्तर प्रदेश डाटा सेंटर का बड़ा हब बन रहा है। सेमीकंडक्टर को अनुकूल वातावरण प्रदान करने के लिए उत्तर प्रदेश सेमीकंडक्टर नीति-2024 लागू की गई है। इस नीति में पूंजीगत सहायता, ब्याज उपादान, भूमि मूल्य, स्टांप, विद्युत शुल्क में छूट के आकर्षक प्रावधान किए गए हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ इंडिया एक्सपो मार्ट में सेमीकॉन इंडिया-2024 के उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल हुए। 11-13 सितंबर तक चलने वाले इस कार्यक्रम की थीम ₹शेपिंग द सेमीकंडक्टर फ्यूचर₹ है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा यह तीन दिवसीय कार्यक्रम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन को धरातल पर उतारने वाला साबित होगा। सीएम योगी ने कहा कि वर्ष 2020 में वैश्विक महामारी कोरोना और भू-राजनीतिक वैश्विक तनाव से ग्लोबल सप्लाई चेन पर बुरा असर पड़ा था। इससे सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री भी प्रभावित हुई थी। उन्होंने कहा कि दुनिया जब कोरोना से पस्त थी, उस समय प्रधानमंत्री मोदी के विजनरी नेतृत्व में भारत ने कोरोना प्रबंधन के साथ ही सेमी कंडक्टर और डिस्प्ले मैन्युफैक्चरिंग ईको सिस्टम के विकास के लिए अपनी नोटिफिकेशन जारी किया था। यह आत्मनिर्भर भारत बनाने की दिशा में बढ़ाया गया महत्वपूर्ण कदम था। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश ने आईटी सेक्टर, डाटा सेंटर, इलेक्ट्रॉनिक मैन्युफैक्चरिंग और सेमीकंडक्टर पर विशेष ध्यान दिया है। उन्होंने कहा कि आज उत्तर प्रदेश वैश्विक सेमीकंडक्टर डिजाइन के इंजीनियर्स के हब के रूप में स्थापित हो रहा है। मीडिया टेक, ईआरएम, क्वॉलकॉम,एनएचपी, सिनॉप्सिस कैंडेंस जैसी प्रमुख कंपनियां यहां स्थापित हैं, जो उत्तर प्रदेश में स्थानीय प्रतिभा को लाभ उठाने और सेमीकंडक्टर की डिजाइन में नवाचार को बढ़ावा देने में सहायक साबित हो रही हैं। इसी को देखते हुए उत्तर प्रदेश में आईटी इंडस्ट्री को उद्योग का दर्जा दिया गया है, जिससे प्राधिकरणों के अधीन उद्योग भूमि को सस्ते दरों पर आईटी कंपनियों को दिया जा सके।

माननीय मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में निवेश के अनुकूल वातावरण बनाने की दिशा में अनेक कदम उठाए गए हैं। इसी का परिणाम है कि ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में उत्तर प्रदेश ने अचीवर स्टेट का दर्जा हासिल किया है। वर्तमान में प्रदेश में अलग-अलग सेक्टर की 27 सेक्टोरियल पॉलिसी लागू की गई है। उत्तर प्रदेश एफडीआई फार्चून ग्लोबल-500 और फार्चून इंडिया-500 कंपनियों के लिए भी हमारी समर्पित नीति है। उद्यमियों की सुविधा के लिए टेक्नोलॉजी का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए सिंगल विंडो पोर्टल 'निवेश मित्र' के माध्यम से 450 से अधिक ऑनलाइन सेवाएं संचालित की जा रही हैं। एमओयू मॉनिटरिंग हेतु ह्यनिवेश सारथी' पोर्टल विकसित किया गया है। इंसेंटिव वितरण भी आज प्रदेश में ऑनलाइन किया जा रहा है। निवेशकों की सहायता के लिए 100 उद्यमी मित्र तैनात किए गए हैं। उन्होंने कहा कि ईज ऑफ डूइंग बिजनेस, इंफ्रास्ट्रक्चर कनेक्टिविटी और सुदृढ़ कानून व्यवस्था आज उत्तर प्रदेश की यूएसपी है। उत्तर प्रदेश में रेल और रोड का बड़ा नेटवर्क है। ईस्टर्न और वेस्टर्न फ्रेट डेडीकेटेड कॉरिडोर प्रदेश से होकर गुजरता है। वाराणसी से हल्दिया के मध्य देश का पहला इनलैंड वाटर-वे संचालित है। वाराणसी में मल्टी मॉडल टर्मिनल के साथ ही दादरी में मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब और उड़ाकी में लॉजिस्टिक ट्रांसपोर्ट हब विकसित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यमुना एक्सप्रेसवे के किनारे राज्य का पहला मेडिकल डिवाइस पार्क, फिल्म सिटी, टॉय सिटी, अपैरल पार्क और हैंडीक्राफ्ट पार्क विकसित किया जा रहा है। ग्रेटर नोएडा में इंटीग्रेटेड टाउनशिप, बरेली में मेगा फूड पार्क और उन्नाव में ट्रांस गंगा सिटी आदि योजनाएं तेजी के साथ आगे बढ़ रही हैं। कार्यक्रम में केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव, केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री जितिन प्रसाद, गौतमबुद्ध नगर के सांसद महेश शर्मा, माननीय जनप्रतिनिधि गण, शासन, प्रशासन एवं पुलिस के उच्च अधिकारियों समेत सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में कार्य कर रहे देश-दुनिया के ग्लोबल लीडर शामिल रहे। सौजन्य से सूचना विभाग गौतम बुद्ध नगर।

महारैली में उमड़ा जन सैलाब सत्यपाल चौधरी के नेतृत्व में गाजियाबाद से पहुंचे सैकड़ो लोग

संस्कार उजाला
गाजियाबाद (आशा चौधरी)
आजाद समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद व भीम आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष विनय रतन भीड़ को देखकर हुए गदगद, सत्यपाल चौधरी को मंच पर मिला विशेष स्थान गाजियाबाद से बसो व अपने निजी वाहनों,मेट्रो, ट्रेन के माध्यम से सैकड़ो की तादाद में गाजियाबाद से इंदिरा गांधी स्टेडियम दिल्ली कार्यकता पहुंचे चंद्रशेखर आजाद जी ने पूरे भारत से पहुंचे कार्यकताओं में अपने ऊजार्वान भाषणों के द्वारा कार्यकताओं मै ऊर्जा का संचार किया व आगामी उत्तर प्रदेश में होने वाले 10 विधानसभा उपचुनावो को कैसे लड़ा जाए व कैसे जीता जाए पार्टी को कैसे मजबूत किया जाए,संगठन को कैसे मजबूत किया जाये व आरक्षण विरोधी

भारत सरकार के बारे में भी विस्तार से बताया कार्यकताओं का धन्यवाद किया जो रात दिन मेहनत करके आजाद समाज पार्टी का विस्तार कर रहे हैं पार्टी की नीतियों को जन जन तक पहुंचा रहे हैं। जिस तरीके से पार्टी का जन आधार बढ़ रहा है । उसको देखते हुए विपक्ष की पार्टियों को पसीना आया हुआ है।

विश्व ब्रह्मऋषि ब्राह्मण महासभा के पंडित विनीत शर्मा राष्ट्रीय महासचिव मनोनीत

संस्कार उजाला
संवाददाता माधव कुमार
गाजियाबाद। गाजियाबाद विश्व ब्रह्मऋषि ब्राह्मण महासभा के पीठाधीश्वर ब्रह्मऋषि विभूति बीके शर्मा हनुमान ने संगठन के ऊपर चर्चा करते हुए कहा कि संगठन में बड़ी शक्ति होती है। संगठित परिवार, समाज और संस्था कभी असफल नहीं होते हैं। मासिक बैठक में अनेको समाज की गतिविधि को आगे बढ़ाने के लिए हर वक्त तत्पर रहने वाले ब्राह्मण पंडित विनीत शर्मा विश्व ब्रह्मऋषि ब्राह्मण महासभा का राष्ट्रीय महासचिव मनोनीत किये गए। इस अवसर पर विश्व ब्रह्मऋषि ब्राह्मण महासभा के संस्थापक कार्यकारी, अध्यक्ष महेश कुमार शर्मा, कपिल पंडित

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय सचिव योगेश दत्त गौड़, लोकेश कौशिक राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, रघुनंदन भारद्वाज राष्ट्रीय महासचिव, संस्थापक उपाध्यक्ष आरसी शर्मा, संगठन मंत्री देवेंद्र शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक राष्ट्रीय अध्यक्ष महिला शक्ति प्रकोष्ठ, सीमा भार्गव, शिवकुमार शर्मा संगठन मंत्री सागर शर्मा राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष विजय कौशिक राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी राहुल शर्मा राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय महासचिव, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष देवाशीष ओझा, राष्ट्रीय संयोजक अशोक भारतीय, सचिन भारतीय कार्यालय मंत्री संजय शुक्ला हिडन पार क्षेत्र अध्यक्ष, देवेंद्र कुमार राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, की संस्तुति पर घोषित किए गए।

संक्षिप्त डायरी

कृष्णा नगर की अदलख्खा टावर में फैट टाइगर रेस्टोरेंट का हुआ उद्घाटन

संस्कार उजाला
मथुरा। जनपद के हृदय स्थल कृष्ण नगर में एक बड़े फैट टाइगर रेस्टोरेंट का उद्घाटन माननीय राज्यसभा सांसद तेजवीर चौधरी जी के द्वारा रिबन काटकर किया गया। सांसद जी ने कहा कि ये रेस्टोरेंट हमारे बदलते हुए नए मथुरा की पहचान बनेगा अब कृष्णा नगर भी मथुरा मैं कनॉट प्लेस की तरह विकसित हो गया है

। रेस्टोरेंट के संचालक राघव अरोड़ा ने बताया की हमारे यहां पर सभी प्रकार के फास्ट फूड, नॉर्थ इंडियन, पंजाबी स्वाद शुद्धता और स्वादिष्ट वयंजन, अच्छी क्वालिटी मैं उपलब्ध है। इस शुभ अवसर पर शहर के गणमान्य लोग डाक्टर श्री अशोक अग्रवाल, राजीव अग्रवाल, डॉक्टर मेहता, डॉक्टर अंकित चौधरी, जगदीश चावला, शेखर अग्रवाल, पियूष चतुवेर्दी, कौशल अदलख्खा, प्रदीप अरोड़ा पूर्व पार्षद मुख्य रूप से मौजूद रहे।

बदल गया टोल टैक्स का नियम

संस्कार उजाला
गाजियाबाद (आशा चौधरी)
सरकार ने टोल कलेक्शन नियमों में किया बदलाव, 20 किमी तक का सफर रहेगा अब टोल फ्री, नए नियमों के अनुसार तय दूरी का ही देना पड़ेगा टोल, टोल रोड पर 20 किलोमीटर तक कोई शुल्क नहीं लगेगा, इसके साथ ही देश में सैटेलाइट आधारित टोल कलेक्शन सिस्टम को भी मिली मंजूरी, केंद्र सरकार की नई अधिसूचना के मुताबिक, टोल कलेक्शन के लिए अब ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम (GNSS), ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (GPS) और ऑन बोर्ड यूनिट्स (OBU) का इस्तेमाल किया जाएगा, अब इन आधुनिक सिस्टम की मदद से ऑटोमेटिक टोल कलेक्शन किया जाएगा

गाजियाबाद से कपिल शर्मा ने कि टी-सीरीज सुप्रसिद्ध भजन गायक कुमार विशु से एक खास मुलाकात

संस्कार उजाला
संवाददाता कपिल शर्मा
गाजियाबाद गणेश उत्सव के उपलक्ष पर गणेश महोत्सव में आए टी-सीरीज भजन सम्राट सुप्रसिद्ध गायक कुमार विशु ने अपने भजनों से गाजियाबाद के सभी भक्तों को भाव विभोर किया कुमार विशु ने अपने पुराने भजन कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं और अमृत पिलाने से क्या फायदा अपने पुराने भजन नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का सदा ना रहा है सदा ना रहेगा नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का और गणपति बप्पा मोरया अगले बरस तू जल्दी आ दी भजनों भक्तों को दिल मोह लिया और गाजियाबाद से कपिल शर्मा ने सुप्रसिद्ध गायक कुमार विशु से भी खास मुलाकात की और कुमार विशु ने कहा कि मैं कोशिश करूंगा कि आप सभी को अपने भजनों और एक नई पेशकश कुमार विशु के यूट्यूब चैनल कुमार विशु सभी लाइक करें सब्सक्राइब करें और एक नया भजन भी कुमार विशु का जल्द आने वाला है यूट्यूब चैनल पर कुमार विशु ने कपिल शर्मा को विश्वास दिलाया कि मैं बहुत जल्द आपको अपने भजन नो को जरूर सुनाऊंगा कुमार विशु ने गणेश उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं बधाई दी कपिल शर्मा को और गाजियाबाद की समस्त भक्तों को और जनता को गणपति बप्पा मोरया अगले बरस तू जल्दी आ

विकास खण्ड चमरौआ के ओडीएफ ग्राम पंचायत भण्डपुरा का निरीक्षण किया।

संस्कार उजाला
रिपोर्ट:- सलीम खान/आसिम अजीज
रामपुर। मुख्य विकास अधिकारी नन्द किशोर कलाल ने विकास खण्ड चमरौआ के ओडीएफ ग्राम पंचायत भण्डपुरा का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मुख्य विकास अधिकारी ने ग्राम पंचायत भण्डपुरा में स्थापित अपशिष्ट स्थिरीकरण तालाब (डब्ल्यूएसपी) का निरीक्षण किया। ग्राम पंचायत अधिकारी ने बताया कि डब्ल्यूएसपी का निर्माण लगभग 4 माह पूर्व कराया गया है। निर्माण कराये गये अपशिष्ट स्थिरीकरण तालाब खुला पाया गया, जिसको किसी जाल आदि से कवर नहीं कराया गया है, जिससे उसमें किसी व्यक्ति अथवा जानवर के गिरने की सम्भावना है तथा निर्माण कराये गये डब्ल्यूएसपी की स्थिति भी ठीक नहीं पायी गई। मुख्य विकास अधिकारी ने खण्ड विकास अधिकारी को निर्देशित किया

कि 03 दिनों के भीतर उस तालाब को ढ़कने तथा मरम्मत कराते हुए सहायक विकास अधिकारी को भेजकर वीडियोग्राफी / फोटोग्राफी कराना सुनिश्चित करें। ग्राम पंचायत में स्थापित ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन केन्द्र के सामने तथा गांव में जगह जगह कूड़े के ढेर तथा साफ-सफाई अच्छी नहीं पाई गई। ग्रामवासियों द्वारा अवगत कराया गया कि ग्राम की आबादी लगभग 4400 की है, जिस पर एक सफाईकर्मी तैनात है, जो कभी भी सफाई करते नहीं देखा गया है। मुख्य विकास अधिकारी ने इस पर नाराजगी व्यक्त करते हुए ग्राम पंचायत अधिकारी एवं सफाई कर्मी को निलम्बित किये जाने हेतु जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देशित किया। ग्राम के निरीक्षण के दौरान राहतजान पुत्र शौकत खॉ निवासी भण्डपुरा के घर के पास तथा सडक के किनारे गोबर का ढेर पाया गया, जिस पर ग्राम प्रधान द्वारा अवगत कराया गया कि कई बार श्री राहतजान से गोबर यहां डालने से मना किया गया है, किन्तु इनके द्वारा कोई संज्ञान नहीं लिया गया, जिस पर मुख्य विकास अधिकारी ने राहतजान के विरूद्ध नोटिस जारी करते हुए जुमार्ना वसूले जाने हेतु निर्देशित किया। ग्राम में जल जीवन मिशन योजनान्तर्गत पानी की टंकी के निरीक्षण के दौरान पानी की टंकी का कार्य निर्माण पूर्ण पाया गया, किन्तु पानी की सप्लाई नहीं की जा रही है।मुख्य विकास अधिकारी ने अधिशासी अभियन्ता, जल निगम (ग्रामीण) को दूरभाष के माध्यम से निर्देशित किया कि शीघ्र ही गांव में पानी की आपूर्ति करायें। तत्पश्चात मुख्य विकास अधिकारी ने ग्राम में संचालित प्राथमिक/कम्पोजिट विद्यालय का निरीक्षण किया गया, विद्यालय में प्रवेश करते ही स्कूल प्रांगण में पानी भरा हुआ था, जिस पर स्कूल की हेडमास्टर द्वारा अवगत कराया गया कि उनके द्वारा पानी का निकास की अस्थायी व्यवस्था की गई है तथा स्थाई व्यवस्था हेतु कई बार ग्राम प्रधान को अवगत कराया गया है, किन्तु अब तक ठीक नहीं कराया गया है, पूछे जाने पर बताया गया कि सफाईकर्मी कभी-कभी सफाई करने स्कूल में आता है। ग्राम प्रधान द्वारा अवगत कराया गया कि स्कूल के बाहर नाला है जिसके पानी का निकास नहीं है। नाली खुदाई कराने पर गांव के कुछ लोग आपत्ति कर रहे हैं, जिस कारण नाले का पानी बारिश के मौसम में स्कूल में आ जाता है। मुख्य विकास अधिकारी ने ग्राम प्रधान व सचिव को स्कूल प्रांगण से जल निकासी कराने, नाले/नालियों में दवा का छिडकाव कराने तथा साफ-सफाई कराने हेतु निर्देशित किया। सीडीओ ने स्कूल में विद्यार्थियों हेतु पकाये गये खाने का निरीक्षण किया, खाने में आलू की तहरी तथा दूध दिया गया था ताहरी में हरा धनिया, हरी मिर्च, सोयाबीन अथवा कोई न्यूट्रिशन नहीं पाया गया। जिस पर मुख्य विकास अधिकारी ने ग्राम पंचायत सचिव, ग्राम प्रधान व हेड मास्टर को मिड डे मील में सुधार किये जाने हेतु निर्देशित किया। इसके अतिरिक्त खण्ड विकास अधिकारी, चमरौआ को सभी ग्राम पंचायतों में डोर टू डोर कलेक्शन कराने, ब्लैक स्पॉट तथा संदिग्ध स्थानों की साफ-सफाई कराते हुए उनमें वृक्षारोपण कराया जाये हेतु निर्देशित किया। निरीक्षण के दौरान जिला पंचायत राज अधिकारी, खण्ड विकास अधिकारी, सहायक विकास अधिकारी (पं0), सम्बन्धित ग्राम पंचायत अधिकारी, ग्राम प्रधान व ग्रामवासी आदि उपस्थित रहे।

स्वच्छता अभियान में बढ़-चढ़कर इस एवं अपने भागीदारी सुनिश्चित कर।

संस्कार उजाला
रिपोर्ट:- आसिम अजीज
मुख्य विकास अधिकारी नन्द किशोर कलाल की अध्यक्षता में जिला स्वच्छता समिति/जिला स्वच्छ भारत मिशन मैनेजमेंट कमेटी की बैठक विकास भवन सभागार में संपन्न हुई। सीडीओ ने स्वच्छता ही सेवा स्वभाव स्वच्छता-संस्कार स्वच्छता के थीम पर 14 सितंबर से 01अक्टूबर 2024 तक चलाये जाने वाले स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के दृष्टिगत जिला पंचायत राज अधिकारी, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका/नगर पंचायत सहित समस्त संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि इस पखवाड़े के माध्यम से स्वच्छता के लिए आम नागरिकों, समुदायों सुरक्षित संगठनों की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु जन जागरूकता स्वच्छता शपथ स्वच्छता से संबंधित प्रतियोगिताएं वृक्षारोपण इत्यादि

विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाए। उन्होंने सभी बीडीओ तथा एडीओ पंचायत को निर्देश दिए कि सभी ग्राम पंचायतों में ब्लैक स्पॉट चिन्हित करें। बड़ी संख्या में नागरिकों की सहभागिता के साथ उन ब्लैक स्पॉट पर सफाई करायें और साथ ही वहां पौध रोपण करायें। उन्होंने सभी ग्राम पंचायतों में प्रतिदिन डोर टू डोर कनेक्शन करने के भी निर्देश दिए। मुख्य विकास अधिकारी ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को इस अभियान की बृहद सफलता के दृष्टिगत कार्य योजना बनाकर तत्परता के साथ सफाई अभियान में प्रतिभाग करने का निर्देश देते हुए जनपद के आम नागरिकों से भी अपील की है कि स्वच्छता अभियान में बढ़-चढ़कर इस एवं अपने भागीदारी सुनिश्चित कर। अभियान को सफल बनाने में अपने अहम भूमिका निभाएं। मुख्य विकास अधिकारी ने स्वच्छ भारत मिशन योजना के अंतर्गत संचालित विभिन्न कार्यक्रमों का गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध क्रियान्वयन करने के निर्देश समिति के सदस्यों सहित अन्य संबंधित विभागीय अधिकारियों को दिये। बैठक में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. एसपी सिंह, पंचायती राज अधिकारी श्री जाहिद हुसैन, परियोजना अधिकारी सहित स्वच्छता समिति के सदस्य एवं अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

मतदान स्थलों के आलेख्य प्रकाशन की सूचना

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) मुख्य निर्वाचन अधिकारी, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के पत्र संख्या-1350/सी०ई०ओ०-2-18/2-2024 दिनांक 12 अगस्त, 2024 के साथ संलग्न भारत निर्वाचन आयोग के पत्र संख्या-23/2024-एफ़(शङ्ग'-क्कक्क) ऊंत्री 07-08-2024 द्वारा विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों के मतदेय स्थलों के सम्भाजन के सम्बन्ध में मतदेय स्थलों के निर्धारण करने के पश्चात मतदेय स्थलों की सूची का आलेख्य समस्त मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के जिला स्तरीय प्रतिनिधियों को उपलब्ध कराते हुए लिखित आक्षेप या सुधार आमंत्रित करने के निर्देश दिये गये

हैं।अतः मैं इन्द्र विक्रम सिंह, जिलाधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी, गाजियाबाद एतद्द्वारा लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा-25 के उपबन्धों के अनुसरण में निम्नांकित तालिका में दिये गये विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रवार मतदान स्थलों, मतदान केन्द्रों की संलग्न सूची में विनिर्दिष्ट मतदान केन्द्रों के समक्ष अंकित मतदान क्षेत्रों के मतदाताओं की समूहों के लिए मतदान केन्द्रों के रूप में प्रस्तावित सूची का आलेख्य प्रकाशन दिनांक 11.09.2024 को एक सप्ताह की अवधि हेतु प्रकाशित करता हूं। अतः सर्वसाधारण से अपील है कि जनपद में अवस्थित विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों के मतदान केन्द्रों की आलेख्य सूची के बावत यदि कोई आपत्ति या सुझाव हों तो कृपया लिखित रूप में दिनांक 17.09.2024 तक अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय एवं जिला निर्वाचन कार्यालय में अथवा संबंधित उप जिलाधिकारी,तहसीलदार के कार्यालय में उपलब्ध करा सकते हैं।(इन्द्र विक्रम सिंह) जिलाधिकारी,जिला निर्वाचन अधिकारी, गाजियाबाद।

ई रिक्शा संचालन के मसीहा बने को भाजपा अध्यक्ष संजीव शर्मा

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) ई-रिक्शा के संचालक को लेकर प्रशासन का तुगलकी फरमान गाजियाबाद के ई रिक्शा संचालकों के लिए परेशानी का सबब बन गया था उन्होंने सभी दलों, सभी मंचों और विभागों पर अपनी आवाज पहुंचाते हुए समस्या समाधान का प्रयास किया। इसी कड़ी में ई रिक्शा संचालकों की समस्या भाजपा अध्यक्ष संजीव शर्मा के समक्ष आई तो उन्होंने समस्या जानने के बाद ई रिक्शा संचालकों को आश्वासन दिया कि उनकी रोजी-रोटी पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा उनकी निश्चित रूप से मदद की जाएगी और कमिश्नर से मुलाकात कर इस विषय को हल किया जाएगा। उन्होंने जो कहा वह कर दिखाया। भाजपा अध्यक्ष संजीव शर्मा डिप्टी कमिश्नर राजेश कुमार के कार्यालय पर पहुंचे ।भाजपा महानगर अध्यक्ष ने कमिश्नर के साथ विस्तार से ई रिक्शा संचालकों का विषय रखा और काफी बातचीत करने के उपरान्त कमिश्नर ने आश्वस्त किया कि पूर्व की भांति सुचारू रूप से ई रिक्शा का संचालन कर दिया जाएगा जिसका आदेश वह विभागीय तौर पर भेज देंगे । गाजियाबाद के इतिहास में भाजपा अध्यक्ष संजीव शर्मा के इस कदम को एक बड़ी कार्रवाई के रूप में देखा जा रहा है। ई रिक्शा संचालकों में खुशी की लहर है।

दव्यांग को शादी का झाँसा देकर मिटाता रहा अपनी हवस आकाश शर्मा उर्फ जोनी शर्मा ने हवस विकलांग दिव्यांग महिला को बनाया अपनी हवस का शिकार

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) आकाश शर्मा उर्फ जोनी शर्मा ने विकलांग दिव्यांग महिला को शादी का झाँसा दे कर बनाया अपनी हवस का शिकार ये वो हवस का भूखा भेड़िया है जो एक विकलांग दिव्यांग महिला को शादी का झाँसा दे कर लगभग 7 महीनो तक उसको अपनी हवस का शिकार बनाता रहा,और अब शादी के नाम पर उसकी हत्या करने की पुरजोर कोशिश कर रहा है प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़िता का नाम अनुपम शर्मा उर्फ अन्नू शर्मा है अनुपम शर्मा के पति का स्वर्गवास 3 जोलाई 2021 को हो गया था पीड़िता के 3 बच्चे हैँ और पीड़िता एक पैर से पूरी तरहा विकलांग है जिस कारण वह ठीक तरहा से चलने मे भी सक्षम नहीं है आकाश शर्मा उर्फ जोनी शर्मा से पीड़िता की बात ₹जीवनसाथी डॉटकॉम₹ के जरिये होनी शुरू हुई जिसके बाद आकाश शर्मा व अनुपम शर्मा की अक्सर बातें होने लगीं इस बीच आकाश शर्मा उर्फ जोनी शर्मा ने अनुपम शर्मा से कहा कि तुम्हारा पति गुजर चुका है,तुम्हारे 3 छोटे-छोटे बच्चे हैँ और तुम शरारिक रूप से विकलांग भी हो ऐसे मे अकेले जिन्दगी कैसे गुजारोगी?? मै तुमसे बहुत प्यार करता हुँ और तुमसे शादी करना चाहता हुँ ये बात आकाश शर्मा ने 18 फरवरी को मिलने के बाद अनुपम से कही जिसकी रिकॉर्डिंग अनुपम शर्मा के पास साक्ष्य के रूप मे मौजूद है बस अनुपम आकाश की चिकनी-चुपड़ी बातों मे आ गई क्योंकि एक अकेली महिला ऊपर से विकलांग और तीन बच्चे अगर अनुपम की जगहा कोई और लड़की या महिला होती तो वह भी यही सोचती कि चलो कम से कम जीवन जीने का एक रास्ता तो बना मगर अनुपम नहीं जानती थी कि आकाश शर्मा उर्फ जोनी उसको सिर्फ हवस के लिए स्तेमाल करना चाहता था शादी का झाँसा देकर आकाश रात-दिन अनुपम के घर पर पति की तरहा पड़ा रहता व उसको खूब स्तेमाल करता

अनुपम के अनुसार वह इस बीच दो बार प्रेग्नेंट भी हो गई किन्तु आकाश शर्मा ने धोखे से अनुपम को अवॉर्शन की दवाई खिला दी उसका कारण ये बताया पीड़िता ने कि उसको बी.पी.का प्रॉब्लम है,आकाश ने बी.पी.की दवा बता कर उसको अवॉर्शन की दवाई खिला दी की तुम्हे चक्कर आने बन्द हो जायेंगे ये दवाई खा लो और अनुपम को मिस्केरेज हो गया,उसके बाद अनुपम को

आकाश पर शक होने लगा कि कहीं आकाश उसको स्तेमाल तो नहीं कर रहा?? किन्तु आकाश भी हवस का पुराना खिलाडी था वह किसी भी तरहा अनुपम को मना लेता और अपनी हवस मिटाता रहता अनुपम शर्मा के अनुसार अब उसने आकाश पर शादी का दवाब बनाना शुरू कर दिया कि हम 18 फरवरी को मिले थे और अगस्त आ गया तुम मेरे साथ रात-दिन शरारिक संबंध तो बनाते हो मगर शादी के नाम पर टाल-मटोल करते रहते हो अब मै तुम्हारे साथ शरारिक संबंध तब तक नहीं बनाउंगी जब तक तुम मुझ से शादी नहीं कर लेते,तो आकाश शर्मा ने अनुपम को 30 अगस्त को कोर्ट-मेरेज करने का आश्वासन दिया किन्तु 23 अगस्त 2024 से ही उसका फोन ऑफ आने लगा आखिर दुखी अनुपम शर्मा आकाश का घर ढूंढ़ते हुए पहुंची जिसका पता मकान नम्बर 582 गली नम्बर-14 कैलाश नगर है और आकाश के पिता का नाम सुभाष चन्द शर्मा है जब अनुपम आकाश के घर पहुंची तो आकाश के भाई ने अनुपम को घर से धक्के देकर बाहर निकालते हुए कहा कि तेरे जैसी ना जाने कितनी आती हैँ हमारी जिन्दगी मे,क्या हम सभी से शादी करते फिरेंगे?? और अनुपम शर्मा को धमकी देते हुए कहा कि मेरा नाम सचिन शर्मा है तेरे जैसी को या तो कोठे पर बेच देंगे या लाख,दो लाख देकर तेरा काम तमाम करा देंगे,तुझ से जो उखाड़ा जाए उखाड़ ले पीड़िता के अनुसार वह थाने मे भी मदद की गुहार लगाने गई किन्तु पुलिस ने भी उसकी कोई मदद नहीं की,उसके बाद पीड़िता न माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के मुख्यमंत्री पोर्टल पर भी मदद की गुहार लगाई किन्तु वहाँ से भी कोई मदद नहीं मिली अब पीड़िता अनुपम शर्मा मदद के लिए कभी गाजियाबाद कमीशनर साहब की चौखट पर माथा रगड़ती है,कभी किसी अन्य प्रशासनिक अधिकारी की चौखट पर किन्तु उस दिव्यांग पीड़िता की कोई सुनने तक को तैयार नहीं है ईधर आकाश व उसके भाई सचिन शर्मा,संदीप शर्मा व देवेंद्र शर्मा ने उसको जान से मारने के लिए किसी को जिम्मा सौंपा है ऐसा अनुपम के अनुसार कहा गया है अब देखना ये है कि हवस के भूखे भेड़िये आकाश शर्मा को उसके इस घिनौने अपराध की सजा मिलेगी या वह ऐसे ही किसी ना किसी को अपनी हवस का शिकार बनाता रहेगा

सच्चे मन से राधा नाम का स्मरण करने से ही मनुष्य भव सागर से पार हो जाता है :महंत नारायण गिरी महाराज

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) श्री दूधेश्वर पीठाधीश्वर, श्री पंच दशनाम जूना अखाडा के अंतरराष्ट्रीय प्रवक्ता, दिल्ली संत महामंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष व हिंदू यूनाइटिड फ्रंट के अध्यक्ष महंत नारायण गिरि महाराज ने सभी को राधाष्टमी की बधाई दी। उन्होंने राधारानी से अपने सभी

भक्तों पर अपनी व भगवान कृष्ण की कृपा बनाए रखने की प्रार्थना भी की। महाराज जी ने बताया कि राधा नामकी महिमा अपरम्पार है। सच्चे मन से एक बार राधा नाम का स्मरण करने मात्र से ही मनुष्य सभी दुखों से मुक्ति पाकर भव सागर से पार हो जाता है। भगवान कृष्ण की कृपा प्राप्त करने के लिए सिर्फ राधा नाम की धुन ही काफी है। राधा रानी को विश्व की सर्वोच्च शक्ति माना जाता है और मनुष्य ही नहीं देवी-देवता भी राधा नाम का गुणगान करते हैं। वे प्रेम, कोमलता, करुणा और भक्ति की देवी हैं। उन्हें ब्रह्मांड की निमार्ता या सभी की माता भी कहा जाता है। राधा अष्टमी का शास्त्रों में विशेष महत्व है। इस दिन राधा रानी की पूजा करने से भगवान कृष्ण की भी कृपा प्राप्त होती है और मां लक्ष्मी भी प्रसन्न होती हैं। इस दिन राधा रानी की पूजा करने से वैवाहिक जीवन खुशहाल बना रहता है। वहीं सुख. समृद्धि की प्राप्ति होती है।

गाजियाबाद सांसद अतुल गर्ग ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लिखे पत्र

1. स्थानीय निकाय, विधानसभा व लोक सभा की एक ही वोटर लिस्ट हो
2. हिंडन नदी के आसपास पीने के पानी के लिए ठोस व बड़ी योजना की आवश्यकता है

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) सांसद अतुल गर्ग ने दो अलग अलग विषयो को लेकर सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखे जिस में उन्होंने बताया कि प्रदेश में स्थानीय निकायों, विधानसभा व लोकसभा की एक ही वोटर लिस्ट हो तो प्रदेश सरकार और प्रशासन का काफी समय बचेगा। साथ ही वोटर लिस्ट

Atul Garg
अतुल गर्ग
Member of Parliament (Lok Sabha)
12- Ghaziabad, Uttar Pradesh
Add.: KD-14B Kavi Nagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh Pin Code- 201002

पर अधिक ध्यान देकर इस की सभी त्रुटियों को भी दूर किया जा सकता है। दूसरे पत्र में अतुल गर्ग ने बताया कि कैबिनेट मंत्री व साहिबाबाद विधायक सुनील शर्मा ने भी कई बार आपके संज्ञान में लाया कि हिंडन नदी के आसपास भूमि में पीने लायक पानी नहीं रहा है व कई किलोमीटर के एरिया में जहां लाखों की संख्या में आबादी निवास करती है वह सभी लोग अधिक टीडीएस का पानी पीकर बीमार हो रहे हैं। अतः केंद्र सरकार के सहयोग से इस विषय में कोई ठोस व बड़ी योजना की आवश्यकता है।

ई-रिक्शा को व्यवस्थित रुप से चलने दी जाए विषय को लेकर पार्षद नीरज गोयल ने सांसद अतुल गर्ग को पत्र सौपा

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) अम्बेडकर रोड़ पर ई- रिक्शा के संचालन को व्यवस्थित किया जाए ना की उस को बंद किया जाए, विषय को लेकर गांधीनगर तुराब नगर के पार्षद नीरज गोयल ने सांसद अतुल गर्ग को एक पत्र सौप पत्र के माध्यम से नीरज गोयल ने बताया कि प्रशासन द्वारा 12 सितंबर से अम्बेडकर रोड़ ट्रैफिक व्यवस्था को बेहतर करने के लिए ई-रिक्शा के प्रवेश पर रोक लगा दिया है। अम्बेडकर रोड़ पर तुराब नगर बाजार, गांधी नगर बाजार, किराना मंडी, मालीवाड़ा बाजार, सब्जी मंडी व रोडवेज बस अड्डा है। इन स्थानों पर प्रत्येक दिन सैकड़ो की संख्या में विभिन्न स्थानों से लोग आकर खरीदारी व यात्रा करते है। वही अम्बेडकर रोड़ पुराने शहर को बीच मे से क्रॉस करने वाली एक मात्र रोड़ है

जिस पर रेलवे स्टेशन से होकर बस अड्डे होते हुए राजनगर, कवि नगर शास्त्री नगर लोहिया नगर, पटेल नगर व मेरठ रोड़ की तरफ जाने वाले यात्री,लोग ई-रिक्शा का उपयोग करते है शासन,प्रशासन द्वारा निजी वाहन की जगह पब्लिक ट्रांसपोटर को प्रयोग करने की सलाह दी जाती है जिस से पेट्रोल की बचत, ट्रैफिक जाम व सड़को पर वाहनों का लोड कम हो सके। यदि ई-रिक्शा में रोक लगा दी गयी है तो सभी अपना निजी वाहन उपयोग करेंगे जिस से ट्राफिक जाम कम होने की जगह अधिक लगेगा। ई-रिक्शा के बंद होने से निश्चित ही बाजारों में बिक्री पर प्रभाव पड़ेगा जिस से व्यापारियों को अपने खर्चे निकलने भी मुश्किल हो जायेंगे।अम्बेडकर रोड़ पर प्रशासन द्वारा किसी भी प्रकार से पार्किंग की व्यवस्था नही की गई है यदि शहर के निवासी अपने अपने वाहन से आएंगे तो वो अपने वाहन कहा खड़ा करेंगे।मुझे लगता है गाजियाबाद विधानसभा के चुनाव बहुत नजदीक है यह निर्णय चुनाव के परिणाम को भी प्रभावित करेगा। अम्बेडकर रोड़ बहुत धीमी गति की रोड़ है यदि उस पर ई-रिक्शा चलती है तो उस से ज्यादा नुकसान नही बल्कि ई-रिक्शा को रोका गया तो निश्चित ही व्यवस्था बिगड़ेगी। गाजियाबाद में पुलिस कमिशनरी लागू होने से पुलिस कर्मियों की संख्या भी बढ़ी है। ई-रिक्शा को रोकने की जगह अम्बेडकर रोड़ पर पुलिस व्यवस्था बढ़ाकर जगह जगह लगने वाले जाम को भी कम किया जा सकते है।

गाजियाबाद नगर निगम की तैयारी : जिम खोलो या ब्यूटी पार्लर, अब लेना होगा लाईसेंस, जानें कौन सा कारोबार खोलने के लिए कितने रुपये देने होंगे

संस्कार उजाला

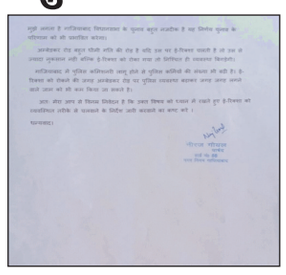

गाजियाबाद : गाजियाबाद नगर निगम कुछ और व्यवसाय करने के लिए लाईसेंस जरूरी करने की तैयारी में है। इसके लिए नीति बनकर तैयार है। नई नीति के तहत 13 और व्यवसाय करने के लिए आपको नगर निगम से लाईसेंस लेना जरूरी हो जाएगा। इन व्यवसायों में जिम से लेकर ब्यूटी पार्लर तक बहुत कुछ है। बता दें कि अभी तक 39 ऐसे व्यवसाय हैं जिन्हें करने से पहले नगर निगम से लाईसेंस लेना जरूरी है, जल्द ही इनकी संख्या बढ़कर 52 होने जा रही है। अभी 39 कारोबार करने के लिए जरूरी है लाईसेंस अभी नगर निगम 39 श्रेणियों के कारोबार करने वालों को लाइसेंस जारी करता है। इनमें होटल, लॉज, रेस्तरां, शराब का ठेका, निजी अस्पताल, नर्सिंग होम और पैथोलॉजी सेंटर आदि शामिल हैं, लेकिन आपकों बता दें कि कुछ और व्यवसाय करने के लिए नगर निगम से लाइसेंस लेना अनिवार्य होगा, ऐसा एक प्रस्ताव नगर निगम की ओर से तैयार किया जा रहा है, इस प्रस्ताव को आने वाली बोर्ड बैठक में रखा जाएगा और बोर्ड की मंजूरी के बाद लागू कर दिया जाएगा। 13 और कारोबार करने को जरूरी होगा लाईसेंस नगर निगम के मुख्य कर निर्धारण अधिकारी डा. संजीव सिन्हा के मुताबिक अब नगर निगम क्षेत्र में जिम, ब्यूटी पार्लर, कोचिंग सेंटर, ट्रेनिंग सेंटर, सीए कार्यालय, स्पा सेंटर, ज्वैलरी, ब्रांडेड कपड़े, जूते का शोरूम और स्पोर्ट्स एकेडमी खोलने के लिए नगर निगम से लाईसेंस लेना जरूरी होगा। डा. सिन्हा के मुताबिक 13 और श्रेणियों के कारोबार करने के लिए नगर निगम से लाईसेंस अनिवार्य करने की तैयारी है। इसके लिए बोर्ड के समक्ष प्रस्ताव रखा जाएगा। हर साल देनी होगा इतना शुल्क जिम (सामान्य) 2000 रुपये

जिम (वातानुकूलित - 5000 रुपये
ब्यूटी पार्लर (सामान्य) - 2000 रुपये
ब्यूटी पार्लर (वातानुकूलित) - 4000 रुपये
कोचिंग (दसवीं कक्षा के बाद) - 2000 रुपये
सीए आफिस - 4000 रुपये
स्पा सेंटर - 3000 रुपये
ज्वैलरी शोरूम (सामान्य) - 3000 रुपये
ज्वैलरी शोरूम (ब्रांडेड)- 5000 रुपये
कपड़ा शोरूम (ब्रांडेड) - 4000 रुपये
जूता शोरूम (ब्रांडेड) - 4000 रुपये
स्पोर्ट्स एकेडमी - 10,000 रुपये
स्पोर्ट्स एकेडमी (मल्टी- स्पोर्ट्स) - 20,000 रुपये

जनवरी में आया था बोर्ड के समक्ष प्रस्ताव 13 नए श्रेणियों को लाईसेंस में दायरे में लाने का प्रस्ताव जनवरी, 2024 में हुई निगम की बोर्ड बैठक में प्रस्ताव रखा गया था। पार्षदों ने इस पर विरोध दर्ज कराया था, बोर्ड ने आपत्तियों पर सुनवाई के बाद दोबारा प्रस्ताव रखने के निर्देश दिए थे। मुख्य कर निर्धारण अधिकारी डा. संजीव सिन्हा का कहना है कि मामले में कोई आपत्ति नहीं दर्ज कराई गई। जुलाई की बोर्ड में इस प्रस्ताव को फिर रखा जाना था लेकिन बैठक हंगामें के चलते स्थगित कर दी गई थी, आने वाली बैठक में प्रस्ताव को बोर्ड के समक्ष रखा जाएगा।

संक्षिप्त डायरी

प्राणगड़ी मालीवाड़ा के अंदर अवैध रूप से अतिक्रमण आखिर क्यों नहीं दे रही नगर निगम ध्यान

संस्कार उजाला

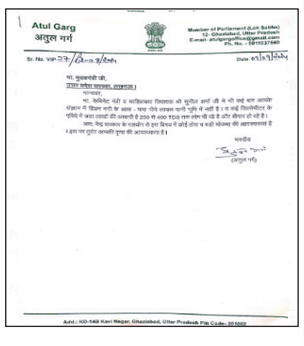

गाज़ियाबाद के थाना सिहानी क्षेत्र के वार्ड नंबर 08 नेहरू नगर 02 द्वितीय, सिटी जोन के अंदर घर के बाहर अवैध रूप से कब्जा किस तरह किया जाता है गली नंबर 07, मकान नंबर 100,, प्राणगड़ी, मालीवाड़ा, गाज़ियाबाद मे भी यही सूरतेहाल है। कोई माने या ना माने नगर निगम अधिकारी यहां ऐसी

संक्रिढ़ गलियों मे झाकते तक नहीं है सूरतेहाल ऐसा है सालों से अबैध कब्जा है और तो और लोहे की सीढ़िया बना कर आमजन को निकलने मे दुविधा होती आई है नालियों को साफ करने हेतु सफाईकर्मी आये दिन शिकायत करता देखा गया है गलती से अगर इन गलियों मे कार या कोई बड़ा वाहन आ जायें तो निकलना मोड़ना भारी पड़ जाता है। अबैध कब्जा कर उसके आगे अपना वाहन खड़ा करना शान समझा जाता रहा है। यह पडोसीयों की शिकायत किसी महकमे जायें यह उम्मीद कम है उनका कहना है की यह समस्या आमजन और जनमानस की है जिसमे एक ही पहलू है, नगर निगम के अधिकारी ट्वीटर हैंडल पर न्यूज को प्रकाशित कर ट्वीट किया जायें।

नागरिक सुरक्षा के वार्डन को सराहनीय सेवा के लिए किया सम्मानित

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) नागरिक सुरक्षा गाजियाबाद के 06 कर्मठ एवं सम्मानित वार्डन राजेन्द्र कुमार शर्मा एवं अनिल कुमार जैन डिवीजनल वार्डन को सिल्वर मेडल, डॉ.सुजीत कुमार प्रसाद, अनंत कुमार सिंह ठाकुर डिप्टी डिवीजनल वार्डन, श्री गोपाल बंसल स्टाफ अधिकारी टू चीफ वार्डन, रमन सक्सेना स्टाफ अधिकारी टू डिवीजनल वार्डन को ब्रोंज मेडल वर्ष 2023 में सेवा करते हुए अत्यंत सार्थक कर्तव्य निष्ठा एवं कार्य कुशलता का

परिचय देते हुए विभाग की ऊंची परंपराओं का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया गया है, जिसके लिए महानिदेशक, अग्निशमन,नागरिक सुरक्षा एवं होमगार्ड गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा स्वीकृत प्रशंसा पत्र एवं डिस्क मेडल इन्द्र विक्रम सिंह जिलाधिकारी,नियंत्रक नागरिक सुरक्षा गाजियाबाद द्वारा अपर जिलाधिकारी (नगर) गंभीर सिंह, ललित जायसवाल चीफ वार्डन नागरिक सुरक्षा गाजियाबाद सहायक उप नियंत्रक नागरिक सुरक्षा गुलाम नबी, हर्ष वर्मा प्रभारी डिविजनल वार्डन (आरक्षित) की गरिमामय उपस्थिति में प्रदान कर सम्मानित किया।

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर कविनगर में महिला प्रकोष्ठ द्वारा भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर कविनगर में दिगंबर जैन महासमिति महिला प्रकोष्ठ द्वारा एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया सर्वप्रथम समिति द्वारा भगवान की प्रार्थना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया उसके उपरांत वन्दना

गीत महिलाओं द्वारा पेश किया गया है जिसका सभी ने तालियों द्वारा स्वागत किया इसके उपरांत महिलाओं द्वारा जैन भजन व जैन नृत्य प्रस्तुत किया गया।महिला प्रकोष्ठ द्वारा मुख्य अतिथि और मंदिर समिति के पदाधिकारियों का पटका पहनाकर उनका स्वागत किया गया। इसके उपरांत महिला प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित स्वागत गीत पर बच्चों द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया जिसका सभी ने तालियों द्वारा उत्साहवर्धन किया।इसके बाद ३-५ वर्ष के बच्चों द्वारा णमोकार मंत्र सुनाया गया।इस अवसर पर सभी बच्चों को पुरस्कार वितरण किया गया।इस अवसर पर अध्यक्षा साधना जैन ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम आयोजित होने से समाज में धर्म की प्रभावना बढ़ती है और बच्चों में संस्कार उत्पन्न होते हैं उन्होंने अन्त में सभी का धन्यवाद किया ।इस अवसर पर महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्षा साधना जैन,मंत्री रेखा जैन,शशी जैन पुष्पा जैन विभा जैन पूनम जैन गीता जैन सुनीता जैन वीणा जैन लता जैन मंजू जैन आदि का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर दीप प्रज्वलन सुभाष जैन,अजय जैन,प्रदीप जैन,सुशील जैन,डी के जैन,साधना जैन आदि ने किया।इस कार्यक्रम को मंदिर समिति का पूर्ण सहयोग रहा जिसमें जैन समाज के प्रवक्ता अजय जैन अध्यक्ष सुभाष जैन मंत्री प्रदीप जैन आदि का विशेष सहयोग रहा ।इस कार्यक्रम की सभी जैन समाज के लोगों ने भूरी भूरी प्रशंसा की तथा इस तरह के कार्यक्रम आगे भी करने की प्रेरणा दी।

कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय से लापता छात्राएं वापस लौटीं, पुलिस कर रही पूछताछ

संस्कार उजाला

संवाददाता माधव कुमार

गाजियाबाद के कस्तूरबा गांधी आवासीय स्कूल से संदिग्ध परिस्थिति में लापता हुई तीन छात्राएं वापस लौट आई हैं। तीनों छात्राएं कक्षा सात और कक्षा आठ में पढ़ती हैं। बता दें छात्राओं का पता लगाने के लिए पुलिस की दो टीम लगाई गई थी। स्कूल में लगे सीसीटीवी फुटेज भी चेक किए गए थे। फिलहाल पुलिस उनसे पूछताछ कर रही है। गाजियाबाद

संदिग्ध हालात में नेहरू नगर स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय से लापता हुई तीन छात्राएं बुधवार सुबह वापस लौट आई हैं। यह तीनों छात्राएं मंगलवार सुबह विद्यालय से लापता हुई थीं।पुलिस की दो टीम कर रही थी तलाश इसके बाद अफरा तफरी मच गई थी, पुलिस की दो टीमों को छात्राओं की तलाश में लगाया गया था। डीसीपी सिटी राजेश कुमार ने बताया कि तीनों छात्राएं वापस विद्यालय पहुंच गई हैं। छात्राएं कहां पर गई थीं, इस संबंध में उनसे पूछताछ की जा रही है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजकुमार शर्मा ने वैकुंठ मीडिया प्राइवेट लिमिटेड सी -285, सेक्टर-11, विजय नगर, गाजियाबाद से छपवाकर कार्यालय 178 राहुल विहार विजय नगर,गाजियाबाद से प्रकाशित किया है। किसी खबर या लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
सभी विवादों का निस्तारण जिला न्यायालय गाजियाबाद में होगा। प्रबंध संपादक-महेश कुमार - 9911733939, कानूनी सलाह- नरेंद्र सिंह रणोत एडवोकेट, सलाहकार कुशल सिंह, RNI No-UPHIN/2013/50466, Editor R.K. Sharma : 09456278011